स्वावलंबन की ओर

स्वावलम्बन की ओर.....

राष्ट्रीय उद्यमिता एवम् लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) एवं इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एन्ट्रिप्रेनियरशिप (आई०आई०ई०) द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के तहत प्रशिक्षण प्राप्त कर उद्यम स्थापित करने वाले पचास (50) प्रतिभागियों के उद्यमी बनने के सफर / संघर्ष का संकलन।

परिकल्पना

सुश्री रजनी सेखरी सिबल

महानिदेशक, निसबड

सामाग्री संकलन एवम् लेखन

डा० पूनम सिन्हा

रीजनल हैड, निसबड

सहयोग

श्री अरूण बहादुर चन्द

मुख्य परामर्शदाता, निसबड

सुश्री दीपा शर्मा

परामर्शदाता, निसबड

प्राक्कथन

राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड) एक राष्ट्रीय संस्थान है, जो मुख्यतः प्रशिक्षण, अनुसंधान और परामर्श प्रदत्त कार्य करता है। संस्थान का मुख्य लक्ष्य खास कर ऐसे युवा वर्ग को प्रशिक्षण /परामर्श द्वारा स्वरोजगार/रोजगार से जोड़ना है, जो विकास की मुख्य धारा से परिस्थितिवश दूर है। भारत को एक स्वावलम्बी राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिये निसबड कार्यरत है।

यह कहानी संग्रह ''स्वावलम्बन की ओर'' ऐसे विभिन्न परिवेश से आने वाले 50 युवाओं (पुरूष/महिला) की कहानी है जिन्होने सीमित संसाधनों में संस्थान से प्राप्त मार्गदर्शन और प्रशिक्षण को आधार बनाकर अपने कौशल और परिश्रम से सफलता हासिल कर औरों के लिये मिसाल कायम की है। क्षेत्रीय कार्यालय का यह अनुकरणीय प्रयास संस्थान के लक्ष्यों को प्रदर्शित करता है। उक्त कहानी संग्रह के प्रकाशन पर मैं क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून के सभी सहयोगियों को बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि भविष्य में भी यह प्रयास जारी रहेगा।

सभी के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ पुनः सभी को शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

रजनी सेखरी सिबल

(रजनी सेखरी सिबल)
महानिदेशक, निसबड

||| लेखकीय |||

आज भारत विश्व की तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। विश्वभर के लगभग सभी उत्पादों के लिए यह आर्थिक जैवविभिता का क्षेत्र है। विनिर्माण की अपार संभावनाओं, उपभोक्ता और ग्राहकों की उपलब्धता से भरपूर, यहां स्वरोजगार की सम्भावनाऐं और भी प्रखर होती हैं।

तेजी से विकसित हो रहे भारत का एक सच यह भी है कि संसाधनों, जागरूकता और अवसर अभिज्ञान का बोध न होने के कारण युवा पीढ़ी का एक हिस्सा असमंजस की स्थिति में आगे बढ़ रहा है। आज के युग में शैक्षिक योग्यता के साथ तकनीकी कौशल की अधिक महत्ता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था को तकनीकी कौशलपरक पाठ्यक्रम को अमली जामा पहनाकर बेहतर भविष्य विकल्प के रूप में कौशलता की महत्ता एवं माँग को उजागर किया है।

कौशल विकास एवं उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार के स्वायत्त संस्थान के रूप में कार्य करने वाले राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान के क्षेत्रीय कार्यालय देहरादून ऐसे युवा जो परिस्थितिवश संसाधनों के आभाव में विकास की डगर से दूर अकुशल कर्मी के तौर पर अपना भविष्य तलाश रहे थे। ऐसे युवाओं को प्रशिक्षण के माध्यम से कुशल बनाकर अवसर को उपलब्धि में बदलने का हुनर सीख इन्होने अपना मुकाम हासिल किया है। इस पुस्तक में कुछ ऐसे ही युवाओं की कहानी का संकलन किया जिन्होंने निराशा भविष्य के प्रति अस्पष्टता के भाव से बाहर निकल कर, राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान के क्षेत्रीय कार्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त कर न केवल स्वयं को अपितु अपने साथ अन्यों को भी रोजगार से जोड़कर सुखद वर्तमान और सुरक्षित कल प्रदान किया है।

हमारा प्रयास है कि शून्य से शिखर छूने वाले इन प्रतिभागियों के माध्यम से विशेषकर युवाओं को उद्यमिता से जोड़कर स्वरोजगार से जोड़ें। हमारा यह प्रयास सकारात्मकता, अवसर अभिज्ञान चयन, उपलब्ध अवसरों को सार्थक कर उपलब्धि में बदलने का है। इस पुस्तक को लिखने एवम् संग्रह करने मे सुश्री दीपा शर्मा एवम् श्री अरूण बहादुर चन्द का सराहनीय प्रयास रहा है।

हमारे इस प्रयास के प्रति आपके यदि कोई सुझाव एवं सराहना हो तो हम से जरूर roniesbud@gmail.com पर साझा करें। आपका आंकलन ही हमारी प्रेरणा है। एक बेहतर कल उन्नत भारत की कामना के साथ सभी को प्रेरणा, संघर्ष एवं मार्गदर्शन से पूर्ण उद्यमी की सफल कहानी संग्रह "स्वावलम्बन की ओर" के लेखन एवं मुद्रण में सहयोग करने वाले सभी सहकर्मियों की ओर से धन्यवाद।

डॉ० पूनम सिन्हा
(रीजनल हैड)
संस्थान, देहरादून
(मुख्य संकलनकर्ता एवं लेखिका)

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	कहानी का नाम	पृष्ठ संख्या
1	प्रशिक्षण से उद्यमिता तक–मनोज कुमार	1
2	एक नई शुरूआत– अजला	5
3	कोशिश रंग लाई–बृज मोहन चौहान	8
4	डिजिटल पथ पर–नवीन चौहान	10
5	स्वप्न से शिखर तक–एस0पी0नौटियाल	12
6	संभावनाओं से सफलता तक–गौरव डोभाल	15
7	यह है मेरी कहानी–भावना पुलसत	18
8	उड़ान अभी बाकी है–अमित पाल	21
9	हुनर से रोजगार तक–मौ0 अजहर	24
10	सफलता की उड़ान–अशरफ बेग	27
11	समौण–अतुल रावत	29
12	एक नई दिशा एक नया जोश–बलबीर कौर	32
13	नेटवेंचर–सुपुराज गोगोई एवं जीतू पेगू	34
14	सपने बने हकीकत–धीरेन्द्र भदोला	36
15	कैमरे की नजर से–देवेन्द्र राणा	39
16	शून्य से शिखर तक–दिनेश कुमार	41
17	सपनों की उड़ान–राकेश नेगी	44
18	सशक्तिकरण–बॉबी कलिता	46
19	जन्मभूमि बनी कर्म भूमि–दिनेश नेगी	48
20	सफलता की उड़ान–हर्षित खट्टर	50
21	सार्थक प्रयास–जयकृत नेगी	52
22	हिम्मत या हार–लोहनी	55
23	काफल पाकों–कनिका बिष्ट	57
24	अपराजिता–आपाराजिता बरूआ दास	59
25	सपना हुआ साकार–खुशनुमा	61
26	हिम्मत ने दिया रास्ता–माधवी	64
27	कठिनाईयों को पराजित करी मिली सफलता–मौ0आरिफ	66
28	उद्यम से मिली कामयाबी–मोनिका मसीह	68
29	नगमा–नगमा	70

क्रम संख्या	कहानी का नाम	पृष्ठ संख्या
30	मेहनत रंग लाई–नासिर अहमद	72
31	स्वाद से पायी समृद्वि–सरिता नेगी	74
32	यह है हमारी कहानी–रंजना धनेई	77
33	मिट्टी बनी सोना–दयाल सिंह	80
34	सम्भावनायें–प्रभाकर बाकुनी	83
35	कोशिश–फूलशमा	85
36	एक कदम ओर बस एक कदम–प्रेमलता नेगी	87
37	सताक्षी तक का सफर–पुष्पा शर्मा	89
38	सम्भावनाओं से सफलता तक–रवि कुमार	92
39	उद्यम के माध्यम से बदली तस्वीर–रीना शाही	94
40	बढ़ते कदम–रेखा सजवाण	96
41	स्वरोजगार की ओर–रूकमणी	98
42	अल–लिबास–सादिक अली	100
43	सौन्दर्य प्रसाधन बना जीवन का आधार–सीमा	102
44	परीश्रम से मिली सफलता –शाम्भवी मिश्रा	105
45	सशस्त्र सशक्त सशक्तिकरण –शहजादी	108
46	मन के हारे हार है मन के जीते जीत–सुचिता	110
47	महिला शक्ति का उदाहरण–सुमन मनहा	112
48	सम्भावनाओं के पटल पर–नरेश नैथानी	114
49	संस्थान बना उद्यम का माध्यम–विमला	116
50	उद्यम सिद्वम्–सुरेन्द्र नेगी	118

प्रशिक्षण से उद्यमिता तक

नाम	श्री मनोज कुमार
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9719819650, manojdoon44@gmail.com
इकाई का नाम	माउण्ट बुटीक

डॉ0 अब्दुल कलाम के अनुसार– "कठिनाइयाँ सफलता को और अधिक प्रिय बना देती है"। जीवन की सभी मुश्किलों और कठिनाइयों को अपने परिश्रम और साहस से सफलता में परिवर्तित कर देना ही सफल जीवन का मूल मन्त्र है।

एक अकेला व्यक्ति पर्वतों को हिला सकता है, चमत्कार कर सकता है और वह कोई भी हो सकता है। चाहे वह राजा हो या रंक। इस ही कड़ी में मैं भी जुड़ा हुआ हूँ। मैने जीवन में बहुत सारे उतार चढ़ाव देखे हैं। यह मेरे जीवन का महत्वपूण क्षण था। मनुष्य को हर

महत्वपूर्ण एवं सम्भव प्रयास करना चाहिए ताकि वह सुखी जीवन व्यतीत कर सकें। जीवन एक परीक्षा है जिसे हर किसी को पास करना जरूरी होता है। जीवन के उद्देश्य उन पहाड़ों की भाँति होते हैं, जो कहीं नुकीले और कहीं समतल होते हैं। जब तक हम सफल नहीं होते हैं, तब तक हमारे अन्दर लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ललक होनी चाहिए। लक्ष्य एक ऊँचे शिखर सा होता है जिसकी चोटी तक हमें अकेले ही पहुँचना होता है, किन्तु लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग में कठिनाइयाँ, परेशानियाँ, चुनौतियाँ, असफलताएं, जैसे चरणों का सामना करना पड़ेगा जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। सागर मंथन से अमृत प्राप्त हुआ उसी प्रकार विचारों और योजनाओं के विश्लेषण से समाधान मिलता है। जिस प्रकार एक किसान फसल बोने से पहले जमीन तैयार करता है उसमें पानी डालता है तथा उसे पर्याप्त वायु से सींचता है उसी प्रकार अपने लक्ष्य को पाने में मनुष्य को चरणबद्ध तरीके से कार्य करना पड़ता है।

मेरे अनुभव से, पाँच चीजें जीवन में बहुत आवश्यक हैं कल्पना शक्ति, लक्ष्य, वचनबद्धता, क्षमता और कार्यकुशलता। किसी योजना को सफल बनाने के लिए आपको इन पाँचों कि एक साथ आवश्यकता होती है।

आप को अपने आप को मानसिक, भावनात्मक व शारीरिक तीनों रूपों में विकास करना होगा तभी आप अधूरे कार्यों को पूरा कर सकेंगे। मेरी अपनी कोई खास महत्वकांक्षा नहीं थी लेकिन जब जीवन ने मेरे सामने चुनौतियाँ पेश की तो मैने उन्हे स्वीकार करने का फैसला किया। मनुष्य का जन्म स्वतन्त्र होकर जीने के लिये हुआ है, न कि स्वयं को सीमाओं में बंधकर विवश होने के लिये। कहते हैं

न कि पैसे तो आपसे कोई भी चुरा सकता है परन्तु आपका हुनर आपसे कोई नहीं चुरा सकता। ऐसी ही कहानी बयाँ करती है डोईवाला के मनोज कुमार की।

डोईवाला, देहरादून में निवास कर रहे मनोज कुमार वर्तमान समय में डोईवाला में स्वयं का बुटीक (माउण्ट बुटीक) स्थापित कर सराहनीय काम कर रहे हैं। मनोज के पिता सोहन पाल ने सिलाई कार्य कर अपने परिवार का पालन–पोषण किया। मनोज ने अपनी प्रारमभिक शिक्षा डोईवाला में की, मनोज हमेशा अपने परिवार की आमदनी बढानें की सोचता रहता था कि किस प्रकार अपने परिवार को सहयोग प्रदान कर सके। स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद उसने फैशन डिजाइनिंग का डिप्लोमा हासिल किया और इसी में अपने भविष्य को संरक्षित करने का विचार किया। उसने ब्लैक बैरी में बतौर क्वालिटी मैनेजर के पद पर कार्य किया, मगर अपनी क्षमता का इस्तेमाल अपने लिए तथा अपने क्षेत्र के विकास के लिए करने की लालसा ने उसका मन नौकरी से हटा दिया जिस कारण वह वापस देहरादून लौट आया।

मनोज ने 2012–13 में उद्यमिता विकास कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किया। मुझे प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् एक रास्ता नजर आया जिसमें चलकर मैने बहुत कुछ सीखा। उद्यम से सम्बन्धित मुझमें कई विचार आये तथा मुझे व्यवसाय (उद्यम) की भाषा ब्रॉन्डिँग। कास्टिँग? इस पर मैं हमेशा नजर रखता हूँ।

ग्राहक संतुष्टि– उससे बढ़कर तो कुछ है ही नहीं। विपणन–यह भी बहुत महत्वपूर्ण भाग है।

यह सब कुछ सीखने के लिये मुझे किसी बहुत बड़े बिजनेस स्कूल में जाने की जरूरत नहीं पड़ी। यह सब मैने प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त की। किसी भी क्षेत्र में यह सब कुछ इतना आसान तो नहीं था, लेकिन नामुमकिन भी नहीं था। मैं और मेरा परिवार जीवन के एक कठिन दौर से गुजर रहे थे। मेरा बचपन गरीबी व मुश्किलों में ही बीता। मुझे यह सोचकर हमेशा यह दुख होता था कि मैं अपने परिवार की आर्थिक दशा सुधारने के लिये कुछ भी नहीं कर पा रहा हूँ। मेरा बचपन से ही सिलाई कार्य सीखने का शौक था ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम ने मुझे एक नई रोशनी की किरण दिखाई। मैने इस प्रशिक्षण में पूरी ईमानदारी व तन्मयता के साथ प्रतिभाग किया और यह कोशिश की कि मैं इस प्रशिक्षण के माध्यम से अपने आप को पूरी तरह से आत्मसात् कर सकूँ। मेरे अनुसार यह प्रशिक्षण अत्यन्त प्रभावशाली एवं प्रेरणा दायक

था। इस दौरान मैने विषय सम्बन्धी जानकारी के अलावा व्यवसायिक गुणों की भी शिक्षा प्राप्त की। कुशलता एवं गुणवत्तापूर्वक मैं यह अपना कार्य किस प्रकार आरम्भ कर सकता हूँ, इसकी पूरी जानकारी मेरे प्रशिक्षण के दौरान मेरे शिक्षकों ने मुझे सिखा दी थी।

इस प्रशिक्षण के बाद मैने संस्थान के सहयोग से पी0एम0ई0जी0पी योजना के अन्तर्गत ऋण हेतु आवेदन किया, जिसके तहत मेरा तीन लाख का ऋण स्वीकृत हुआ और अस्तित्व में आया माउण्ट बुटीक। आज वर्तमान समय में मेरे यहाँ दस से अधिक कारीगर खादी एवं स्कूल ड्रेसों का निर्माण कार्य कर रहे हैं।

अपने ह्रदय और मन मे दृढ़ निश्चय के साथ अपने उस कार्य को करने का बीड़ा उठाओ, कहाँ या कैसे, किन्तु आप स्वयं ही अपना रास्ता ढूँढ निकालोगे। आज मैं कह सकता हूँ कि मेरे पास सृजनात्मक कल्पनाशक्ति थी, किन्तु जब मैने उद्यम की शुरूआत की तो कुछ भी नहीं था केवल एक विश्वास था कि ग्रामीण क्षेत्र की जन्मभूमि पर भी सफल उद्यमी बन सकते हैं। संस्थान ने मुझे एक नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। ''हर पर्वत को पार करो हर धारा से आगे बढ़ो हर सपने के पीछे जाओ'' जब तक वह पूरा ना हो जाऐ।

एक नई शुरुआत-अज़ाला

नाम	कु0 अज़ाला
मोबाइल संख्या	8755514389
इकाई का नाम	स्कॉलर्स आईटेक
पता	आज़ाद कॉलोनी, देहरादून
स्थापना वर्ष	2016
कुल लागत	रू0 45,000/– (पैंतालिस हजार रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 3,50,000/– (तीन लाख पचास हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

मन में लगन हो, हाथों में हुनर और खुद पर विश्वास, तो कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं होता। इन्ही शब्दों को चित्रार्थ किया है, आजाद कॉलोनी, देहरादून में रहने वाली अजला ने। 7 भाई बहनों के परिवार की जिम्मेदारी पिता के कन्धों पर थी, जिनका अपना छोटा मोटा दैनिक आय पर आधारित काम है।

प्रारंभिक शिक्षा किसी तरह नजदीक के सरकारी स्कूल में हुई। उच्च शिक्षा साधन एवं धन की कमी के कारण नहीं हो पाई, दो बड़े भाई भी पारिवारिक आय बढ़ाने के लिए पिता के काम में हाथ बँटाने लगे। आर्थिक तंगी और विषम परिस्थिति में भी अज़ला की सीखने और कुछ कर गुजरने की चाह ने उसकी हिम्मत को टूटने नहीं दिया और इस बीच एक दिन अजला के

किसी परिचित द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया गया जिसके अन्तर्गत अजला ने संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया। गुरूकुल जैसा वातावरण एवं उद्यमिता विकास प्रशिक्षण ने मेरे जीवन को एक नया अर्थ प्रदान किया। इस दौरान मैने व्यवसायिक गुणों के साथ–साथ व्यापारिक नीतियों, समय प्रबन्धन, वित्त शिक्षा, उद्यमी दक्षता, सम्भाषण दक्षता, व्यक्तित्व विकास, संकट वहन क्षमता एवं व्यवस्थित योजना निर्माण आदि सत्रों ने मुझे उद्यमी बनने के लिये प्रोत्साहित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मैने अपने ग्राहकों की समस्याए सुलझाने व व्यवहारिक ज्ञान से मेरी मनोस्थिति में काफी परिवर्तन आ गया व ग्राहकों से अच्छे सम्बन्ध बनाने में भी मुझे मदद मिली।

इस प्रशिक्षण के पश्चात् मेरे अन्दर आत्म विश्वास उत्पन्न हुआ और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन द्वारा मैने अपने घर पर दो कम्प्यूटर लगा कर अपना प्रशिक्षण केन्द्र माह अप्रैल– 2016 में स्थापित किया। इस कार्य मे मेरे बड़े भाई शोएब ने साथ दिया। हमने अपने कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र की शुरूआत छोटे स्तर से की है लेकिन उम्मीद है की यह ख्वाब एक दिन मेरे जैसे कई बच्चों के ख्वाब पूरे करने मे सफल होगा।

डिजिटल होते भारत में, मैं आज अपने आस–पास के बच्चों को डिजिटल साक्षरता प्रदान करने का प्रयास कर रही हूँ जिससे मुझे आत्म संतुष्टि मिलती है और साथ ही साथ आठ से दस हजार 8–10

हजार रूपये मासिक की आमदनी मेरे सपने को आर्थिक मजबूती प्रदान करती है। मैं अपनी ओर से सभी को यही सन्देश देना चाहती हूँ कि जीवन में कितने भी उतार–चढ़ाव आऐं लेकिन हमें कभी निराश नहीं होना चाहिए। ऊपर वाला यदि एक दरवाजा बन्द कर देता है तो सौ दरवाजे खोल भी देता है। हर व्यक्ति के जीवन में अच्छा और बुरा वक्त आता है और हर व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ता है लेकिन सफलता उस ही को प्राप्त होती है जो सभी कठिनाइयों का सामना करके अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ता जाता है।

मुझे यह प्रशिक्षण केन्द्र खोले हुये पाँच महीने हो चुके हैं। अभी आजाद कोलोनी मे किसी भी लडकी द्वारा यह पहला प्रयास है। मुझे लोगों का विश्वास जीत कर ज्यादा से ज्यादा लड़कियों को कम्प्यूटर एवं उद्यमिता विकास की जानकारी देनी है। आज अज़ला अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से डिस्टैन्स लर्निंग प्रोग्राम द्वारा स्नातक की पढ़ाई भी कर रही है। वह कहती है कि इस प्रशिक्षण ने मेरे भीतर यह जज्बा पैदा किया कि मैं अपने जैसी महिलाओं के लिये एक मिसाल बनूँ एवं उनके भीतर भी यह विश्वास पैदा करूँ कि जिस प्रकार मैने पहल की है वह भी अपना उद्यम स्थापित कर स्वयं को सशक्त करें। मेरे प्रशिक्षण से लेकर मेरे उद्यमी बनने का यह सफर मेरे लिये किसी स्वप्न से कम नहीं है।

कम उम्र में बड़ा हौसला रखने वाली अज़ला अपने काम से, अपने आप से खुश है मगर सन्तुष्ट नहीं। वह कहती है एक दिन ऐसा होगा इस देश का हर नागरिक कम्प्यूटर साक्षर होगा और इस ख्वाब को हकीकत में बदलने की मुहीम का एक अहम हिस्सा वो भी होंगी। सही मायनों में उस दिन सपनों को अस्तित्व और स्वयं को आत्म संतुष्टि मिलेगी। अज़ला का सफर अभी जारी है।.

कोशिश रंग लाई

नाम	श्री बृजमोहन चौहान
मोबाइल संख्या	9927736137
इकाई का नाम	चौहान डिजिटल प्वाइन्ट
पता	कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	2007–2008
कुल लागत	रू0 10,000,00/– (दस लाख रूपये मात्र) (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 24,000,00/–(चौबीस लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	05 (पूर्णकालिक), 03 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती। यह बात चरित्रार्थ होती है पौड़ी जनपद के एक छोटे से गाँव मोहरा से चौहान डिजिटल प्वाइंट तक का सफर पूरा करने वाले बृजमोहन चौहान पर जिन्होने स्वयं के परिश्रम एवं लगन से सफलता को पाया है। सन् 1970 में जन्में बृजमोहन चार भाइयों में सबसे बड़े है। उनके पिता कैन्ट बोर्ड लैन्सडॉन में क्लर्क के पद पर कार्यरत थे जिनकी मृत्यु सन् 1979 में हुई। ऐसी आयु जिसमें चंचलता व शैतानियाँ शिशुओं पर भाति हैं। ऐसी अवस्था में उन्हे पारिवारिक भरण–पोषण के लिये संघर्ष करना पड़ा। हालाँकि माँ को पिता की पेन्शन मिलती थी पर वह पर्याप्त नहीं थी। प्रारंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय से पूरी कर रोजगार की तलाश में वह कोटद्वार शहर गये। जहाँ 16 वर्ष की उम्र में उन्होने पेन्सिल

फैक्ट्री में काम करना शुरू किया। कम वेतन के कारण वह अधिक समय तक वहाँ काम नहीं कर पाये। ऐसी विकट परिस्थिति में भी उन्होने अपनी पढ़ाई जारी रखी और सन् 1990 मे राजकीय महाविद्यालय में दाखिला लिया। पढ़ाई और स्वयं के खर्चों के लिऐ उन्होने एक मेडिकल स्टोर में सहायक के पद पर काम किया। जहाँ पर उन्होने अपने मृदु व्यवहार से सभी को प्रभावित किया। सुन्दर चित्रों को देखना और उन्हे कैमरे में कैद करने का शौक उन्हे बचपन से ही था। उनके इसी शौक और इसी जुनून ने उन्हे शहर के एक प्रसिद्ध फोटो स्टूडियो में काम करने का अवसर दिलाया। संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों की फोटोग्राफी करते हुये उनकी मुलाकात एक दिन संस्थान (निसबड) के परामर्शदाता से हुई जिन्होने उन्हे स्वयं के उद्यम स्थापित करने के लिऐ प्रेरित किया। तत्पश्चात् उनके द्वारा दो साप्ताहिक उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग किया गया। जहाँ उन्होने स्वयं के उद्यम स्थापना एवं संचालन के गुण सीखे। उसके बाद उन्होने स्वयं का रोजगार घर से शुरू किया। शुरूआती मासिक आमदनी रू0 3,000/– से रू0 4,000/– तक होने लगी। पर वह उससे बिलकुल भी संतुष्ट नहीं थे। धन के अभाव में स्टूडियों खोलने का सपना मन में ही दब के रह गया था।

संस्थान द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर उन्होने ऋण लेकर स्वयं का उद्यम स्थापित किया। जिसे नाम दिया नेशनल विडियो मिक्सिंग सेन्टर। अपने व्यवहार से जल्द ही उन्होने इस क्षेत्र में सफलता पाना शुरू कर दिया। सन् 2007 में उन्होने अपनी फर्म का नाम बदलकर चौहान डिजिटल प्वाइंट रख दिया। आज महीने के 60,000/– रूपये कमाने के साथ–साथ वह 8 लोगों के रोजगार का माध्यम भी है। चौहान डिजिटल प्वाइंट पूरे पौड़ी जनपद का एक प्रतिष्ठित फोटो स्टूडियो है जहाँ पर ऑडियो–विडियो रिकॉर्डिंग के साथ साथ मिक्सिंग का कार्य किया जाता है। स्थानीय कलाकारों एवं संगीतकारों के लिये विडियो एवं एलबम बनाने का कार्य भी चौहान डिजिटल प्वाइंट में किया जाता है।

जिस उम्र में व्यक्ति अपने दोस्तों के साथ मौज मस्ती में समय व्यतीत करता है, उस उम्र में बृजमोहन चौहान ने अपना समय अपने कार्य और भविष्य की नीति को बनाने में इस्तेमाल किया और यही एक सच्चे उद्यमी की पहचान है।

डिजिटल पथ पर

नाम	श्री नवीन चौहान
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9808182428, naveen.chauhan3@gmail.com
इकाई का नाम	आई0सी0टी कमप्यूटर एजुकेशन
पता	हरिद्वार
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 5,00,000/–(पांच लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 20,00,000/– (बीस लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

पूत के पैर पालने में ही नजर आ जाते हैं। किसान परिवार में जन्में नवीन का बचपन खेत और खेती से जुड़े कार्यों के बीच में गुजरा। बावजूद उसके नवीन का मन हमेशा इसके विपरीत कार्यों में ही लगता। स्वभाव में चंचलता एवं खेल के प्रति उत्सुकता ने परिवार की चिन्ताऐं बढ़ा दी। नवीन के भविष्य को लेकर पूरा परिवार चिन्तित रहता। प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा गांव के विद्यालय से पूरी करने के बाद घरवालों ने नवीन का दाखिला पॉलिटेक्निक में इस उद्देश्य से कराया कि बेटा इंजीनियर की नौकरी पाकर अपने भविष्य को सुरक्षित कर पाये इसके विपरीत स्वछंद विचारों वाले नवीन का मन नौकरी पर आकर सीमित होने

का कतई नहीं था जिस कारण घर के दबाव के चलते हुये भी उसने पॉलिटेक्निक करने से मना कर दिया। अपने स्वयं के उद्यम के लिये बचपन से सपना बुनने वाले नवीन के ऊपर अब खुद को सिद्ध करने के साथ साथ पारिवारिक दबाव भी था। तकनीक के साथ जुड़कर उपकरणों को खोलना एवं उनके बारे में जानकारी एकत्र करने का शौक नवीन के मन में घर कर गया जिस कारण उसने कम्प्यूटर हार्डवेयर एवं नेटवर्किंग का कोर्स किसी निजी संस्थान से किया। बावजूद इसके बाजारी प्रतिस्पर्धा की दौड़ में वह खुद को स्थापित करने में सफल नहीं रहा।

हर व्यवसाय का महत्वपूर्ण भाग उसका खाता संयोजन होता है, जिसकी आवश्यकता और मांग को जानते हुये उसने संस्थान (निसबड) द्वारा चलाये जा रहे उद्यमिता विकास कार्यक्रम में अपना पंजीकरण कराया। उद्यम स्थापना से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण जानकारी एवं ज्ञान अर्जित कर नवीन ने घर वालों के सहयोग से स्वयं का कम्प्यूटर सेन्टर स्थापित किया। पूर्व योजना के आधार पर नवीन ने सुनियोजित तरीके से अपने केन्द्र के काम को शुरू किया। उसकी लगन और संस्थान से मिले मार्गदर्शन के आधार पर नवीन को समय अनुरूप सफलता हासिल होती गई। आज नवीन के कम्प्यूटर सेन्टर में पाँच सौ से अधिक युवा प्रशिक्षण प्राप्त कर डिजीटल इण्डिया के सपने को साकार करने के सजग प्रहरी के रूप में खुद को तैयार कर रहे हैं।

आधुनिकता के इस युग में कम्प्यूटर एक ऐसा महत्वपूर्ण उपकरण है जिसके बिना विकास की परिभाषा लिख पाना सम्भव नहीं हैं। अपार सम्भावना वाले इस क्षेत्र ने न केवल नवीन को आर्थिक रूप से सक्षम किया है जिससे वह महीने मे 30–40 हजार रूपये कमाने के साथ–साथ उसके सामाजिक प्रतिष्ठा को भी निखार आया।

स्वप्न से शिखर तक

नाम	श्री सत्य प्रकाश नौटियाल
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9412381160, hitsamiti_2000@rediffmail.com
इकाई का नाम	शिखर फूड्स
पता	मोथरोवाला, देहरादून
स्थापना वर्ष	2005–2006
कुल लागत	रू0 3,000,00/– (तीन लाख रूपये मात्र) (पी0एम0आर0वाई0 द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 70,00,000/– (सत्तर लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	08 (पूर्णकालिक), 20 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	फल एवं खाद्य प्रसंस्करण

यह कहानी है पर्वतीय आँचल के प्रदेश उत्तराखण्ड की जहाँ प्रकृति एक वरदान और अभिशाप बनकर रोज की दिनचर्या में लोगों से मिली–जुली। ऐसी विषम परिस्थिति और सीमित संसाधनों में लक्ष्य की प्राप्ती करना या उसका प्रयास करना किसी भगीरथ प्रयास से कम नहीं है। सन् 1971 में जनपद टिहरी के सीमान्त क्षेत्र भवान में जन्में सत्य प्रकाश नौटियाल का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ।

अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल से ग्रहण करने के बाद वह 1990 में एक वर्षीय डिप्लोमा खाद्य संस्करण में लेने के लिये कोटद्वार स्थित खाद्य एवं विज्ञान प्रशिक्षण संस्थान चले गये और अपना डिप्लोमा पूरा कर वह प्रशिक्षण सत्र के दौरान उन्होने फ्रूटी कम्पनी में कार्य कर अनुभव प्राप्त किया। अपने कैरियर के शुरूआती दौर में उन्होने होटल इंडस्ट्रीज के खाद्य निरीक्षण एवं नियंत्रण विभाग में कार्य किया। सन् 1995 में उन्होने एक एन0जी0ओ0 में कार्य किया जो कि खाद्य तकनीकों एवं सम्भावनाओं में कार्य कर रही थी। उन्होने सन् 2002 तक कार्य किया। यहाँ कार्य करने के बाद अपने पहाड़ी क्षेत्र एवं स्वयं के लिए कार्य करने की इच्छायें हिलौरे मारने लगी। और यही वजह थी कि उन्होने सन् 2003 में हित समिति नाम से स्वयं की संस्था गठित कर खाद्य प्रसंस्करण पर कार्य करने की शुरूआत करी। पर्वतीय हिमालयों क्षेत्रों में पैदा होने वाले फलों के संरक्षण एवं प्रसंस्करण करने हेतु इनके द्वारा ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन लाख रुपये के ऋण हेतु आवेदन किया गया। मार्जिन मनी की कमी बैंक व रिश्तेदारों द्वारा सकारात्मक सहयोग न मिलने के कारण उनका सपना फिलहाल सपना ही रह गया।

कहते हैं एक ही हालातों में कोई टूट जाता है और कोई रिकॉर्ड तोड़ देता है। इसी बीच उनकी मुलाकात संस्थान (निसबड) की रीजनल हैड, से हुई जिनके मार्गदर्शन और प्रयासों का नतीजा यह रहा कि छः महीनों के भीतर उनका ऋण स्वीकृत हो गया और अस्तित्व में आया शिखर फूड्स। छः कर्मचारियों से शुरू शिखर फूड्स में खाद्य, फल एवं सब्जियों से निर्मित जूस, जैली, आचार, मुरब्बा आदि का निर्माण होने लगा। जिनका विपणन एवं विक्रय घर घर जाकर किया गया। शुरूआती दौर में कर्मचारियों की तनख्वा एवं ऋण की किस्त निकल पाना कठिन हो रहा था। ऐसी परिस्थिति में संस्थान द्वारा उन्हे प्रदर्शनियों एवं मेलों में प्रतिभाग करने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

संस्थान द्वारा प्रवर्तक विभाग को पत्र लिखकर निःशुल्क स्टॉल दिये जाने का आग्रह किया गया। जिसका नतीजा यही रहा कि तीन दिवसीय प्रदर्शनी में मुफ्त सैम्पल

बाँटने के बाद भी उन्होने 80,000/–(अस्सी हजार) रूपये मात्र की कमाई की। ग्राहको को उनके उत्पाद में नया स्वाद आया तथा अन्यों की अपेक्षा दाम भी वाजिब लगे।

उन्होने अपना ऋण सन् 2008 में समाप्त किया उसके बाद यू–कॉस्ट के माध्यम से रू0 4,84,000/– (चार लाख चौरास्सी हजार) रूपये मात्र की आर्थिक मदद से उन्होने काणाताल, टिहरी में खाद्य प्रसंस्करण इकाई स्थापित की। उन्के उत्कृष्ट कार्य को देखते हुऐ सन 2010 में उन्हे राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। संस्थान द्वारा आयोजित खाद्य प्रसंस्करणों के कार्यक्रमों में भी उनके द्वारा तकनीकी सहयोगी की भूमिका निभाई जा रही है।

आज वर्तमान समय में उनकी संस्था का कुल टर्न ओवर सत्तर से 70–80 लाख रुपये है तथा उत्तराखण्ड के पहाड़ी जनपदों में उनके द्वारा एकल एवं समूह के माध्यम से रोजगार दिया जा रहा है। अपने आसपास के संसाधनों को सफलता में बदलने का हुनर सत्य प्रकाश नौटियाल ने कर दिखाया। आने वाली पीढ़ी एवं उद्यमियों के लिये वह एक प्रेरणा श्रोत है।

संभावनाओं से सफलता तक

नाम	श्री गौरव डोभाल
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8126096825, gaurav.dobhal3@gmail.com
इकाई का नाम	गढ़वाल भोग
पता	ग्राम–जसपुर, पो0–जाखचौरा, चम्बा, टिहरी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	2015–2016
कुल लागत	रू0 6,000,00/– (छः लाख रूपये मात्र) (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 12,00,000/–(बारह लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	08 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

जसपुर, टिहरी गढ़वाल का रहने वाला गौरव डोभाल ने स्थापित किया गढ़वाल का झंगोरा की नमकीन बनाने का उद्यम। मैं एक सामान्य परिवार में जन्मा हुआ व्यक्ति हूँ तथा मेरे पिता श्री रोशल लाल डोभाल जी पेशे से एक व्यवसायी है। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा–दीक्षा ग्रामीण इलाके के सरकारी स्कूल से ही पूर्ण हुयी साथ–साथ मैने अपने पिता के साथ बचपन में ही दुकान चलायी। इसके बाद मैने हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय (एच0एन0बी0) से स्नातक की पढ़ाई पूर्ण की जिसके बाद मैने आई0टी0 फील्ड में अपना करियर बनाने का मन बनाया। जिसमें मैं कुछ हद तक सफल भी हो गया था। वर्ष 2013–2014 में मैने संस्थान (निसबड) द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। यह

प्रशिक्षण निःशुल्क में दिया जा रहा था। इस प्रशिक्षण ने मेरे भीतर आत्मविश्वास का संचार किया। फलस्वरूप अब प्रशिक्षण के उपरान्त मैं व्यवसाय आरम्भ करने हेतु पूरी तरह से तैयार था। अपने पिता का हाथ बटाने व उनकी जिम्मेदारियों को साझा करने के लिऐ मैं काम हेतु जगह–जगह प्रयासरत था।

इस दौरान मैं संस्थान के सम्पर्क में आया तथा उनके द्वारा बताये गये मार्गदर्शन द्वारा प्रेरित हुआ और मेरे अन्दर खुद का उद्यम स्थापित करने का जूनून जागा। मेरा उद्देश्य था मैं ऐसा उद्यम स्थापित करूं, जिससे मेरे साथ जुड़े युवाओं को भी रोजगार मिल सके। कुछ समय बाद वर्ष 2015–2016 में मैने पी0एम0ई0जी0पी0 योजना के तहत खादी ग्रामोद्योग बोर्ड टिहरी गढवाल में आवेदन किया और जिला सहकारी बैंक चम्बा से वित्तपोषित रू0 6.00 लाख से मैने अपने ही घर के पास चम्बा से 10

कि0मी0 की दूरी पर पहली बार झंगोरा की नमकीन बनाने का उद्यम स्थापित कर दिया और अपने साथ अन्य 13 से 14 युवाओं को जोड़कर, उन्हें अपने साथ रोजगार देकर टिहरी जिले, उत्तरकाशी जिले, पौड़ी जिले, देहरादून आदि स्थानों पर अपना व्यवसाय बढ़ा रहा है। मेरा कहना है कि मैं अपने उद्यम से प्रति माह रू0 30,000/– (तीस हजार) रूपये मात्र तक का मुनाफा कमा लेता हूँ जिससे मेरे घरवालों को भी मुझसे खुशी है।

मेरे लिए वह क्षण सबसे ज्यादा गर्व का होता है जब मै अपने हाथों से अपने यहा कार्यरत् कर्मचारियों को मेहनताना देता हूं। अपने जीवन के इस नवीकरण में मै संस्थान का हमेशा आभारी रहुंगा।

प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकार के उत्पाद बनाने का कौशल सीखा। मैने कुशलता पूर्वक यह प्रशिक्षण सम्पन्न किया। अपने कौशल को व्यवसाय का रूप देने की व्यापक कोशिश करने लगा।

प्रशिक्षण के दूसरे चरण में इस समस्या का समाधान हेतु मैने व्यवसायिक गुणों की शिक्षा प्रशिक्षण के दौरान ही प्राप्त कर ली थी। अतः मैने प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात ही अपना उद्यम स्थापित कर दिया। मै अपने व्यवसाय को और अधिक विस्तृत करना चाहता हूं और अपने बदले जीवन और उज्जवल भविष्य के लिए संस्थान का आभार व्यक्त करता हूं ।

मै अपने कार्य को सत्य निष्ठा के साथ करता हूं तथा ग्राहकों के साथ नम्र व्यवहार रखता हूं ।

''इस प्रशिक्षण ने मुझमे कुछ कर दिखाने का भाव जगाया हैं बिना इस प्रशिक्षण के मैं जीवन में सफल न हो पाता।''

यह है मेरी कहानी

नाम	कु0 भावना पुलसत
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9897707677, soniasharma.sharma263@gmail.com
इकाई का नाम	ओम सांई बुटीक
पता	ऋषिकेश, देहरादून
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 1,000,00/– (एक लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 3,000,00/–(तीन लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

मनुष्य को जीवन में सफल होने के लिये ऊँचे लक्ष्य साधना आवश्यक है क्योंकि लक्ष्य ही हमें सफलता की ओर अग्रसर होने के लिये प्रेरित करते हैं।

मेरा नाम भावना पुलसत है। मेरे पिताजी का नाम स्व0 श्री नरेश कुमार शर्मा है। हम तीन भाई एक बहन है। मेरे पिताजी का देहान्त हुऐ 11 वर्ष हो चुका हैं। मेरे पिता ट्रांसपोर्ट का काम करते थे। बचपन में ही पिता का साया सर से उठ गया, जिसके चलते हम एक संघर्षशील जिन्दगी जीने के लिए मजबूर हो गये। कहते हैं वक्त बुरा हो तो साया भी साथ छोड़ जाता है। इतनी छोटी उम्र में पिता के जाने का दु:ख क्या होता है मैं

शब्दों में नहीं लिख सकती। मेरी माता पढ़ी लिखी नहीं थी क्योंकि पुराने समय मे हमारे यहां महिलाओं का शिक्षित होना ना के बराबर था। ऐसे हालात में मेरी माता ने घर पर रहकर कपड़े सिलने का काम शुरू कर दिया व इस पैसे से हमारा गुजारा बहुत मुश्किल से चल रहा था।

मेरा बचपन से ही अपने पिता से बहुत जुड़ाव था। उनका ना होना मैं शायद आज भी स्वीकार नहीं कर पाती हूँ। मैने बहुत कोशिश की मैं किस तरह से अपने पिता की जिम्मेदारियां निभा सकूँ। मेरी शिक्षा–दीक्षा ऋषिकेश से ही हुई परन्तु मैं बहुत अधिक शिक्षा ना ग्रहण कर सकी जिसका मुझे खेद है।

नियती ने मुझे मेरे पिता के जाने के बाद एक झटका ओर दिया जिसे स्वीकारना मेरे लिये बहुत ही मुश्किल था। जब मुझे यह पता चला कि मेरे पिता हमें हमेशा के लिये छोड़ कर चले गये हैं तत्पश्चात् विधि के विधान को स्वीकार करते हुये जीवन में आगे बढ़ने का निर्णय लिया, किन्तु बिना किसी मार्गदर्शन के स्वयं को जटिलताओं के रेगिस्तान में खड़ा पाया। इस हताशा की स्थिति में मुझे एक नई आशा ने पुनः जन्म दिया। संभावना से पूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम में मैने प्रतिभाग किया। इस प्रशिक्षण ने मुझे उत्साह और प्रेरणा से ओत–प्रोत कर दिया और मुझमें आशावाद की भावना जगायी। मेरे भीतर ऐसा बदलाव देखकर मेरी माता चकित रह गयी। मैं अपनी किस्मत पर गर्व महसूस करती हूँ कि इस प्रशिक्षण ने मुझे उद्यमी बनने के लिये प्रेरित किया।

मैने अपनी माता को बचपन से ही काम करते हुऐ देखा था। इस प्रशिक्षण के माध्यम से मेरे अन्दर कुशलता का विकास हुआ और साथ ही मैं आत्म विश्वास से परिपूर्ण हो गयी। इस प्रशिक्षण ने मेरे जीवन को बदल दिया। इस प्रशिक्षण ने मेरा दृष्टिकोण बदल दिया व मुझे व्यवसायिक कौशल से परिपूर्ण कर दिया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् मैने अपना बुटीक शुरू कर दिया। मैं अपना यह बुटिक किराये की दुकान पर चला रही हूँ जिसका किराया रू0 2,500/–(दो हजार पांच सौ) रूपये मात्र है। मैं महीने का 15,000/–(पंद्रह हजार) रूपये कमा लेती हूँ। अभी चार महीने पहले मेरे पेट में एक गाँठ हो गयी थी जिसका एक ऑपरेशन भी हुआ है। मुझे खुशी इस बात की है कि मुझे अपनी

बिमारी के चलते किसी से सहायता प्राप्त करने की जरूरत नहीं पड़ी क्योंकि अब मैं इतनी सक्षम बन चुकी हूँ कि मैं अपने खर्चे उठा सकूँ। मैं अपने बुटीक पर लड़कियों को सिलाई सिखाने का काम भी करती हूँ ताकि मैं उन्हे भी आत्म निर्भर बना सकूँ।

बेरोजगारी एक ऐसा शाप है जो घुन की तरह समाज को कमजोर व खोखला बना रहा है। ऐसे सभी युवा जो काम तो करना चाहते हैं पर जिन्हे काम नहीं मिलता, निराशा और विशाद के घेरे में आकर अशक्त हो जाते हैं। मेरा यह कहना है कि यदि समाज के युवा ही सशक्त नहीं होंगे तो वह समाज कैसे प्रगति करेगा।

उड़ान अभी बाकी है

नाम	श्री अमित पाल
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9888726700, svipe.ambala@gmail.com
इकाई का नाम	सिद्धो विनायक इंस्टिटयूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन
पता	अम्बाला शहर, हरियाणा
स्थापना वर्ष	2013
कुल लागत	रू0 12,00,000/– (बारह लाख रूपये मात्र) (रू0 3,00,000/– (तीन लाख रूपये मात्र) मुद्रा लोन 2015–2016
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 24,00,000/–(चौबिस लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	09 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

परिचय– मूल रूप से अंबाला, हरियाणा के निवासी अमित पाल सुपुत्र श्री सुरिन्दर कुमार पटियाला में

रहते हैं। पिता (श्री सुरिन्दर कुमार) थापर पॉलिटेक्निक कॉलेज में कार्यशाला प्रशिक्षक के पद पर कार्य करते हैं जो कि आस्थानांतरणीय नौकरी है। जिस कारण सुरिन्दर कुमार का परिवार अंबाला से पटियाला बस गया। तीन बहनों के इकलौते भाई के रूप में अमित पाल का जन्म हुआ। इनकी पूरी शिक्षा पटियाला से हुई। स्वभाव से स्वाभिमानी अमित ने शिक्षा उपरान्त् पिता एवं परिवार की सहायता हेतु कार्य करना प्रारम्भ किया। उन्होने अपनी पहली नौकरी एक अधिवक्ता (वकील) के साथ क्लर्क के रूप में की। फिर बैंकिंग सेक्टर में सिटी मैनेजर तक के पद पर कार्य किया। हमेशा कुछ नया करने की चाह एवं नया सोचने वाले अमित को नौकरी में कुछ भी नया न कर पाने से नौकरी के प्रति

इच्छा कम होने लगी जिस कारण वह बैंकिग सेक्टर से ऐजुकेशनल सेक्टर की तरफ आ गये और एक फर्म के साथ रीजनल मैनेजर के पद पर कार्य करना शुरू किया। नौकरी के दौरान ही अमित ने संस्थान द्वारा अयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

अमित बताते हैं कि कार्यक्रम के दौरान विभिन्न सत्रों से उनके भीतर एक ऊर्जा का संचार हुआ और स्वयं सें दूसरों के लिऐ कार्य करने की उद्यमी सोच को यथार्थ पर साकार करने का मनोबल प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण के पश्चात् अमित द्वारा अमृतसर में दो अन्य सहयोगियों के सहयोग एवम् संस्थान के मार्गदर्शन से कुल 4,00,000/—(चार लाख) रूपये की धनराशि से कम्प्यूटर सेन्टर स्थापित किया। जिसमें विभिन्न कोर्सों को शुरू किया गया। इसके बाद अमित द्वारा पटियाला स्थित अपने घर पर शिशु निकेतन खोला गया, जिसमें में 25 बच्चे पढ़ते थे। इस कार्य को उनकी पत्नी श्रीमती श्वेता देखती थीं।

कार्य में मिल रही सफलता ने अमित के इरादे और मजबूत कर दिए उन्होने सोचा कि अपनी जन्मभूमि अंबाला को ही अपनी कर्मभूमि बनाया जाए। जिसके तहत रामपुरा मौहल्ला स्थित पुस्तैनी मकान को नये शिरे से बनाकर वोकेशनल सेन्टर खोलने का विचार घर कर गया पर इसी बीच पिता का स्वास्थ बिगड़ गया। डॉ0 द्वारा बताया गया कि उनकी किडनी खराब हो चुकी है पिता के अस्वस्थ हो जाने से घर की जिम्मेदारियाँ अमित पर आ गयी। पिता एवं घर की देखरेख में अधिक समय बीतने लगा। अधिकतर जमा पूंजी पिता के स्वास्थ में खर्च होने के बावजूद भी अमित की इच्छा शक्ति में कोई कमी नहीं आई। पिता का स्वास्थ स्थिर था मगर अब वह अस्पताल से घर आ गये थे। पत्नी श्वेता का अधिकतर समय ससुर की सेवा में बीतने लगा जिस कारण शिशु निकेतन बन्द करना पड़ा ।

पारिवारिक अस्थिरता अमित के मनोबल को झुका नहीं पाई। अमित बताते हैं कि उस समय उनके पास पैसा नहीं था मगर एक इरादा जरूर था । अमित ने ऋण लेकर वोकेशनल प्रशिक्षण सेन्टर का

कार्य शुरू किया और कुल 6000 वर्गफिट का सिद्वी विनायक इंस्टिट्यूट ऑफ प्रोफेशनल ऐजुकेशन अस्तित्व में आया। आज अंबाला के हजारों बच्चे संस्थान से विभिन्न तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त कर रोजगार एवं स्वरोजगार कर रहे हैं। वर्तमान समय में संस्थान में कम्प्यूटर आधारित, फैशन डिजाइनिंग, हाउस कीपिंग, रीटेल मैनेजमेन्ट आदि के प्रशिक्षण चलाये जाते है।

अमित बताते हैं कि अभी कुछ समय पहले ही कुछ मित्रों के साथ मिलकर उन्होने फलों एवं सब्जियों का ऑनलाइन व्यापार (OnlineMandi.Com) के नाम से शुरू किया है।

तीन पुत्रियों के पिता अमित अपनी सफलता का श्रेय संस्थान को देते हुए कहते हैं कि यदि वह प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग नहीं लेते तो वह आज कहीं नौकरी कर रहे होते। 50,000/– रूपये मे महीना कमाने के साथ बीस से ज्यादा कर्मचारी तथा चार सहयोगियों के साथ काम करने वाले अमित की उड़ान अभी बाकी है।

हुनर से रोजगार तक

नाम	मौ0 अजहर
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9927565503, azharahmed785@gmail.com
इकाई का नाम	ए वन बुटीक
पता	आजाद नगर कॉलोनी, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 1,000,00/– (एक लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 9,60,000/– (नौ लाख साठ हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 03 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

एक ही परिस्थिति में कोई बिखर जाता है और कोई निखर जाता है अन्तर केवल हमारे द्वारा किये गये प्रयासों का होता है। जो हमारी सफलता और असफलता को निर्धारित करते हैं। बात एक ऐसे युवा की जिसके जीवन को निर्धनता व बेरोजगारी की व्यवस्था से जकड़ा हुआ था। अपने अटूट साहस और आत्म विश्वास से निराशा को आशा में परिवर्तित कर दिखाया। उनका जीवन एक समय निर्धनता विवशता एवं बेरोजगारी से चिन्हित था। ऐसी विपत्ति से भरी परिस्थतियों में भी उन्होनें

साहस नहीं छोड़ा और अपने परिवार को एक बेहतर जीवन प्रदान करने के प्रयास में जुटे रहें।

शुरू से ही पारिवारिक स्थिति ठीक न होने के कारण अजहर ने सोलह साल से ही कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। शुरूआती दिनों में अजहर ने नौकरी भी की परन्तु नौकरी में मन नहीं लगा। काम शुरू करने के लिए उन्होनें कई बार लोन के लिए आवेदन किया परन्तु लोन पास नहीं हो पाया। वह जीवन के एक कठिन दौर से गुजर रहे थे और इस जटिलता से बाहर आने का साधन उन्हें दिखाई नहीं पड़ रहा था।

विविधता से भरे अपने जीवन मे आये इस परिवर्तन के बारे मे बताते हुये अजहर कहते है कि मित्रों द्वारा प्रशिक्षण के बारे में जानकारी प्राप्त कर मुझे आशा की एक किरण नजर आई तब मैने इस प्रशिक्षण में प्रतिभाग करने का निर्णय ले लिया। इस अवसर ने मानो मेरे जीवन में ज्ञान व समृद्धि के नये द्वार खोल दिये। इस प्रशिक्षण को करने के दौरान मैने बहुत कुछ सीखा। यह प्रशिक्षण मेरे जीवन में ज्ञान एवं उत्साह की तरंग लेकर आया।

इस दौरान मैने न सिर्फ ज्ञान प्राप्त किया बल्कि व्यवसाय सम्बन्धी गुण भी सीखे। फलतः मेरे अन्दर अपना व्यापार आरम्भ करने और सफल होने का आत्म विश्वास जगा। जिससे मैने साथ–साथ अपना काम करना भी शुरू कर दिया था। शुरूआती दिनों में मुझे कम आय होती थी पर कौशल के आधार पर धीर–धीरे आय बढ़ने लगी तथा मै रू0 20,000/– (बीस हजार) रूपये मात्र तक कमाने लगा। आज मैने 5 कर्मचारी भी रखे हैं। मैने दुकान भी किराये पर ले रखी है जिसका किराया रू0

3,000/– (तीन हजार) रूपये तक है। मेरी आय बढ़ने का सीधा असर हुआ कि समाज व रिश्तेदारों में मेरी इज्जत/मान सम्मान बढ़ गया। परिश्रम और गुणवत्ता पूर्ण कार्य हर व्यक्ति को सफलता की ओर ले जाया सकता है।

अजहर का कहना है कि हमारे देश में ऐसे अनगिनत युवक हैं जो छोटे कामकाज से अपनी आजीविका चलाते हैं और परिवर्तन के भय से कभी जीवन में ऊँचे लक्ष्य नहीं रख पाते पर बिना तपे गले जिस प्रकार सोने में चमक नहीं आ पाती उस ही प्रकार दृढ़ इच्छा शक्ति और परिश्रम के बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती।

सफलता की उड़ान

नाम	अशरफ बेग
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	
इकाई का नाम	घर से सिलाई कार्य
पता	श्री देव कॉलोनी, बल्लूपुर, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 1,00,000/– (एक लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 9,00,000/– (नौ लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 03 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

इन्सान में अगर लगन हो तो इस दुनिया में असम्भव कुछ भी नहीं। यह कहानी एक ऐसी महिला की है जिसने हुनर और प्रशिक्षण से अपना मुकाम हासिल किया। अशरफ बेग का जन्म एक बेहद गरीब परिवार में हुआ। परिवार की पूरी जिम्मेदारी पिता की दैनिक आय पर निर्भर थी। पिता जो कमाते सारे परिवार की गुजर बसर का बस यही वो एक जरिया था। पिता के अचानक गुजर जाने से घर से आमदनी और अशरफ के जीवन से बचपन दोनो ही गायब हो गये। किसी तरह कक्षा छः की पढ़ाई पूरी करी। आगे पढ़ने के लिये ना पैसे थे ना हालात। माँ के साथ मिलकर दैनिक आय के भरोसे ही

जीवन आगे बढ़ता गया। पड़ोस की लड़कियों के साथ सिलाई सीखने का मौका मिला। यही वो एक काम था जिससे उसने कुछ कमाया तो नहीं पर किया बड़े शौक से। अशरफ की शादी मजदूरी करने वाले एक व्यक्ति के साथ हो गयी। समय तो बदला मगर हालात नहीं। ऐसे हालातों में भी सिलाई का काम चलता रहा। कहतें हैं कि मन में अगर इरादे और इरादों में मजबूती है तो वो रास्ते खुद ब खुद बनते जाते है जो आपको मंजिल की तरफ ले जाते हैं। अशरफ के साथ कुछ ऐसा ही हुआ जब उसे किसी ने सिलाई के प्रशिक्षण के बारे में बताया। हालांकि अशरफ सिलाई का काम पहले से ही जानती थी पर काम का दाम कैसे हासिल किया जाता था पर यह उसने प्रशिक्षण के दौरान सीखा।

आज अशरफ केवल छः बच्चो की माँ ही नहीं एक रोजगारमन्द महिला भी है। पति की आय के अतिरिक्त अशरफ रू0 15,000/– से 20,000/– रू0 मासिक कमा लेती है। वह अपने इन पैसों को अपने बच्चों की परवरिस और मुश्किल समय के लिये बचत के तौर पर करती है। जरूरत इस बात की नहीं कि आपके पास क्या नहीं है। जरूरी यह है आपके पास जो है आप उसे कैसे इस्तेमाल कर सकते हैं। अशरफ के पास ना पिता का साया था और ना ही पति की पूंजी था तो बस खुद पर विश्वास जिसने उसे मुश्किल हालातो मे भी बिखरने नही दिया। और यही एक वजह थी जिसने अशरफ को उसकी मंजिल दिलाई है।

समौंण

नाम	श्री अतुल रावत
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9627835908, samaun.restaurant @gmail.com
इकाई का नाम	समौंण रेस्तरां
पता	रूद्रप्रयाग
स्थापना वर्ष	(2011)
कुल लागत	रू0 5,00,000/– (पाच लाख रूपये मात्र) (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 14,00,000/–(चौदह लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	05 (पूर्णकालिक), 04 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

देवभूमि उत्तराखण्ड प्राकृतिक धरोहर का एक ऐसा खजाना है, जिसे संसाधन स्वरूप अपनाकर कही छोटे बड़े उद्योग फलीभूत हो रहे हैं।

यह कहानी जनपद पौड़ी गढ़वाल निवासी अतुल रावत की है, जो पहाड़ के अधिकतम युवाओं की तरह साध्य और साधन की खोज में पहाड़ से मैदान (देहरादून) आ गये। उत्साहित अतुल ने खुद के लिये कई सपने देखे थे, जिसे पूरा करने की तमन्ना लिये उन्होने एक BPO में नौकरी करना प्रारम्भ किया। बात सन् 2009 की है। उस समय 5,000/–(पांच हजार)

रूपये वेतन के रूप में मिलते थे। कार्य की अधिकता एवं पैसो की कमी के चलते अतुल का मन नौकरी से हटने लगा, जिसके फलस्वरूप वह अधिक समय तक खुद को नौकरी में रोक नहीं पाये और 2010 में वापस घर आ गये।

भविष्य की चिन्ताओं से घिरे अतुल समझ ही नही पा रहे थे, कि वो ऐसा क्या करे, जिससे वह अपने साथ अन्य लोगों के हित के लिऐ भी कार्य कर सके। इसी उधेड़बुन में समय तो बढ़ रहा था पर राह स्पष्ट नहीं हो पा रही थी।

सन् 2010 में संस्थान (निसबड) द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रम का आयोजन रूद्रप्रयाग में किया गया, अन्य लोगों की तरह अतुल को भी इसकी जानकारी समाचार पत्र के माध्यम से मिली। स्वरोजगार अपनाने का सुनहरा अवसर भी विज्ञापन में लिखा था। यह शब्द सुनकर अतुल ने कार्यक्रम में प्रतिभाग करने का मन बनाया।

कार्यक्रम में प्रतिभाग कर प्रशिक्षण पूरा कर अतुल में एक बड़ा सकारात्मक परिवर्तन आया। अपने में आये इस परिवर्तन को बताते हुऐ अतुल कहते हैं– जिस सम्भावनाओं को जिन संसाधनों को मैं अपने से दूर तलाश रहा था, वो बस मेरे आस पास थी। मैने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्भावनाओं को

उपलब्धी में बदलना सीखा। उद्यम क्या होता है?उद्यमी कौन व्यक्ति होता है?उद्यमी अभिप्रेरणा, अवसर चयन, प्रबन्धन, परियोजना प्रतिवेदन, सहयोगी संस्थाओं के विषय एवं उद्यम स्थापना में सहायक योजनाओं आदि महत्वपूर्ण बातें मैने सीखी।

सन् 2011 में मैने प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत रू0 500,000/–(पांच लाख) रूपये का ऋण लेकर समौंण नामक रेस्टोरेन्ट की शुरूआत करी जिसके शुरूआती दौर मे मुझे थोड़ी बहुत परेशानी तो हुई परन्तु मेरा अपने आप पर भरोसा होने के कारण मैने उस परिस्थिति को सम्भाल लिया। धीरे–धीरे अपनी मेहनत और प्राप्त ज्ञान के आधार पर रेस्टोरेन्ट को आगे बढ़ाया जिसका नतीजा यह है कि मै आज 25–30 हजार रूपये महीने कमाने के साथ–साथ पाँच लोगो की अजीविका का साधन भी हूँ जिन्हें मैने अपने रेस्टोरेन्ट में काम दिया हुआ है। सम्भावनायें हमेशा हमारे आस–पास होती हैं। जरूरत होती है केवल उनकी पहचान कर उन्हे उपलब्धि में बदलने की। अतुल ने भी कुछ ऐसा ही किया जिसकी वजह से उसने अपनी जमीन और सपने दोनो को हासिल किया।

एक नई दिशा, एक नया जोश

नाम	श्रीमती बलबीर कौर
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9557484484
इकाई का नाम	सौन्दर्य ब्यूटी पार्लर
पता	डोईवाला, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 25,000/–(पच्चीस हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 4,80,000/– (चार लाख अस्सी हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

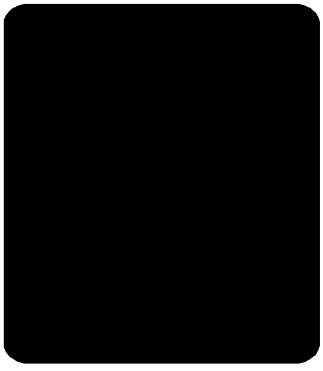

सफलताऐं एवम् जीवन का एक हिस्सा हैं जो हमारा आत्मविश्वास हमें अपनी नाकामयाबी से कुछ सीख कर आगे बढ़ने की ताक़त देता है। शायद यही वजह है की सफलताओं की राहें इतनी आसान नही होगी।

नारी को सृजनकर्ता के स्वरूप में जाना एवं पहचाना जाता है। अपनी रचनात्मकता सहजता और प्रबन्धीय गुणों के लिये भारतीय महिला को पूरी दुनिया में सराहा जाता है। परिस्थिति अनुसार अपने आप को उसमें ढ़ाल कर सर्वश्रेष्ठ परिणाम हासिल करने की कला में भी भारतीय महिलाओं का कोई सानी नहीं है। यह कहानी भी ऐसी भारतीय महिला की है जिसने सीमित संसाधनों से अवसर को उपलब्धि में बदलकर दिखाया।

सजने संवरने का एक प्राकृतिक गुण हर महिला का होता है और आज यह गुण अपार संभावना वाला एक व्यापक उद्यम के रूप में विकसित हो रहा है। तीन बहनों में सबसे बड़ी बलबीर कौर का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। पिता पेशे से क्लर्क थे, जिनकी कमाई पर पूरा परिवार निर्भर था। इसके बावजूद उसके पिता ने हमारी शिक्षा–दीक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ी। विज्ञान वर्ग से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद जहाँ बलबीर रोजगार की संभावनाएँ तलाश रही थी वहीं उसके घरवाले बड़ी बेटी होने के नाते एक सुयोग्य वर की तलाश में थे। बलजीत का विवाह इलैक्ट्रिोनिक्स की एक छोटी से दुकान चलाने वाले व्यक्ति से हुआ है। बलजीत का दांपत्य जीवन खुशियों से हुआ था। कुछ समय पश्चात् बेटे के रूप में संतान प्राप्ति से घर में और भी खुशहाली आ गयी। बढ़ते समय के साथ जिम्मेदारियाँ भी बढ़ने लगी। घर की हर जरूरत का भार पति के कन्धों में था जिसे बाँटने की जिम्मेदारी के विषय में बलबीर ने ठान लिया था। बचपन से ही बहनों के साथ सजने संवरने का शौक था। अपने शौक को आय के साधन में बदलने का विचार मन में घर कर गया पर शुरूआत कहा से हो कैसे हो? इस सवाल ने बलजीत को उलझा दिया। कहते हैं प्रयास ही पूर्ण होते हैं कुछ ऐसा ही बलजीत के साथ हुआ। ससुराल के नजदीक आयोजित प्रशिक्षण में उसने प्रतिभाग किया। जिसमें उसके भीतर के कई अनसुलझे सवालों का जवाब उसे कार्यक्रम के दौरान मिला। हाथों में हुनर इरादों में मजबूती और कठोर परिश्रम के बल पर बलजीत में अपनी सहपाठियों को साथ में लेकर अपने सपने को आकार दिया और अस्तित्व में आया ''सौन्दर्य'' ब्यूटीपार्लर। कम निवेश में बेहतर सुविधाएँ प्रदान करने की कला जो प्रशिक्षण में सीखी थी उसी को पूरी मेहनत के साथ अपने काम पर लागू किया।

आज न केवल बलबीर बल्कि उसके पार्लर में काम करने वाली पाँच अन्य महिलाओं को स्वावलंबन का साधन और स्वाभिमान भरी जिन्दगी दोनो हासिल हुये। अपने उद्यम से 20,000/– रू0 (बीस हजार) रूपये मात्र मासिक कमाने वाली बलजीत दूसरों को निखार रही है बल्कि अपने परिवार के आज और कल को एक बेहतर दिशा प्रदान कर रही है। संभावनाएँ सदैव हमारे आस पास होती हैं जरूरत बस उनको पहचान कर सार्थक करने की होती है। सफलताऐं परिस्थिति के अधीन न होकर आपकी मनःस्थिति पर आधारित होती हैं।

नेट वेन्चर

नाम	सुपुराज गोगोई एवं जीतू पेग
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	
इकाई का नाम	नेट वेन्चर
पता	गुवाहाटी, आसाम
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 5,000,00/– (पांच लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 12,00,000/– (बारह लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

भारत के पूर्वोत्तर में फैले हिमालय राज्य ना केवल अपने प्राकृतिक खूबसूरती के लिए बल्कि अपने भीतर समेटे हुये उद्यम के अवसरों के लिऐ भी पूरी दुनिया में जाना जाता है। साहसिक पर्यटन खेल बहुत तेजी से बढ़ते हुये विकल्प के रूप में युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित कर रहा है। यह कहानी भी ऐसे दो युवाओं की है जिन्होने अपनी जटिल भौगोलिक परिस्थिति को सुगम संसाधन के तौर पर देखा।

''नेट वेन्चर''' सुपुराज गोगोई एवं जीतू पेगू का संयुक्त प्रयास है जोकि मई 2016 से सभी आयु वर्ग के महिलाओ एवम् पुरूषों के लिये साहसिक पर्यटन के विभिन्न खेलों को संचालित करता है।

जीतू पेगू एवं सुपुराज गोगोई के इण्डियन इंस्टिट्यूट ऑफ एन्ट्रिप्रेनियरशिप, गुवाहाटी मे साहसिक पर्यटन उद्योग मे 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम मे प्रतिभाग किया जोकि उनके साहसिक पर्यटन के

उद्यम को चलाने के दिवास्वपन को साकार करने मे मील का पत्थर साबित हुयी। आई0आई0ई0. गुवाहाटी से प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त दोनों ने अपनी नौकरी छोड़कर् नेटवेन्चर के नाम से अपना साहसिक पर्यटन का उद्यम प्रारम्भ किया।

साहसिक पर्यटन उद्यम मे स्कूली छात्र–छात्राओं के लिये कैम्पिंग एवम् परिसर की गतिविधियों के आयोजन के साथ–साथ परिसर से बाहर साहसिक भ्रमण आयोजित किया जाता है। कार्पोरेट समूह, निजी समूह, युगल, स्पेशल महिला भ्रमण आदि सेवायें वर्तमान मे नेटवन्चर प्रदान की जा रही है। नेटवेन्चर के द्वारा साहसिक गतिविधियों मे गाईड, हाईकिंग, ट्रैकिंग, साइक्लिंग, कार्पोरेट रोड राईड जैसे गतिविधियों के अतिरिक्त आपात, प्राण रक्षा प्रशिक्षण एवम् केम्पिंग तकनीकी जैसी सुविधाएं प्रदान की जा रही है। वर्तमान मे सुपुराज गोगोई एवम् जीतू पेंगू के नेतृत्व मे वर्तमान मे तवांग से गुवाहाटी , गुवाहाटी से चेरापूंजी, गुवाहाटी से काजीरंगा एवम् उत्तरपूर्व के विभिन्न गंतव्यों मे साईक्लिंग यात्राओं का आयोजन कर रहे है। उनके ग्राहक भारत के विभिन्न भागों से आते है साथ ही साथ अमेरिका एवम् फ्रांस से भी कुछ नियमित ग्राहक उनकी सेवायें ले रहे है।

उत्तर पूर्व भारत पर्वत, नदियॉ, वन्य जीवन, जैसी प्राकृतिक सम्पदाओं से परिपूर्ण है, एवम् विभिन्न जनजातियों एवम् संस्कृतियों का इसमें समावेश है। उत्तरी–पूर्व भारत मे इतनी क्षमतायें है कि यह पर्यटन के केन्द्र मे परिवर्तित हो सकता है।

नेटवेन्चर सुपुराज गोगोई एवम् जीतू पेंगू के स्वयं की 5–6 लाख रूपये की पूॅजी से प्रारम्भ की गयी थी अब दोनों ही अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाने एवं विस्तार करने के लिये बैंक से वित्तीय सहायता लेने के लिये प्रयासरत्त है। नेटवेंचर का वार्षिक कारोबार 8 लाख है। नेटवेंचर मे 3 अंशकालिक कर्मचारी है जोकि मैकेनिक वाहन चालक एवम् फोटोग्राफर के रूप मे कार्यरत है।

दो मित्रों के उत्साह एवं प्रयास ने साहसिक खेलो में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के साथ साथ उपलब्ध संसाधनों से स्वरोजगार एवं रोजगार उजागर करने के कथन को भी सार्थक किया ।

सपने बने हकीकत

नाम	श्री धीरेन्द्र भदोला
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	7556553371, d.k.bhadola.123@gmail.com
इकाई का नाम	भदोला फोटो स्टूडियो
पता	कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 5,000,00/–(पांच लाख रूपये मात्र) (पी0एम0इ0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,00,000/– (छः लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

अपने कार्य के प्रति संतोष या असंतोष भाव होना भी आज के युवाओं को प्रभावित करता है। जब कोई व्यक्ति अपने सार्मथ्य एवं अपनी कुशलता के योग्य कार्य नहीं ढूँढ पाता है तो उसकी कार्य क्षमता एवं कुशलता प्रभावित होती हैं। निराशा, मनोबल का गिरना, असंतोष, असुरक्षा उसे घेर लेती है। जिसके भयानक परिणाम भी सामने आ सकते हैं।

मैं धीरेन्द्र भदोला पुत्र श्री अनुसुया प्रसाद

भदोला ग्राम पदमपुर मोटाढ़ाक, पो0 ओ0 मोटाढ़ाक पौड़ी गढ़वाल से हूँ। हमारा परिवार मध्यम वर्ग में भी नहीं आता था। हम निम्न–मध्यम वर्ग का जीवन व्यतीत कर रहे थे। मैने जीवन में बहुत उथल–पुथल देखी है। मुसीबत में पड़ा व्यक्ति उनसे बाहर हर संभव प्रयास करता है। हम दो भाई हैं। मैं भाइयों में सबसे बड़ा हूँ एवं घर की जिम्मेदारियाँ भी मेरे ऊपर ही थी।

मैने हाई स्कूल की परीक्षा पास की। मेरे परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं रही। मेरा बचपन कठिन परिस्थितियों के साथ गुजरा। उसके बाद मैनें संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

मेरा यह कदम मेरे लिऐ मील का पत्थर साबित हुआ क्योंकि बड़ा काम करने के लिऐ बड़ी सोच का होना जरूरी होता है। इस प्रशिक्षण ने मुझे उद्यमशीलता में पारंगत कर जीवन में कुछ कर दिखाने का साहस प्रदान किया। जीवन को महत्वपूर्ण सबक सिखाने और सुदृढ़ निर्णय लेने की क्षमता मेरे अन्दर इस प्रशिक्षण के माध्यम से पैदा हुई। प्रशिक्षण के दौरान मुझे मेरी कमियों एवं कमजोरियों के बारे में भी पता चला। मैने लोगों से बात करने की कला सीखी, लोग किस तरह समूह में या संगठन में मिलकर कार्य करते हैं, यह भी प्रशिक्षण में सिखाया गया। मेरे प्रशिक्षण ने मुझे प्रशिक्षक के द्वारा ग्रामीण, व्यवसाय और प्रौद्योगिकी–इन तीन बातों के जुनून से अभिप्रेरित हो मैने अपना व्यवसाय शुरू किया। अच्छा व्यवहार होना चाहिए, अच्छा उत्पाद व अच्छी सेवा होनी चाहिए। ग्राहक को विश्वास में लेना एवं अपने कर्मचारियों को अभिप्रेरित करना।

संस्थान के माध्यम से मैं आज शिक्षित ग्रामीण युवा वर्ग को उच्च कौशल का निर्माण करने वालों के रूप में स्थापित कर पाया। मुझे प्रशिक्षण के दौरान प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के बारे में संस्थान के अधिकारियों द्वारा पता चला जिसके बाद मैने जिला उद्योग केन्द्र से पॉच लाख का ऋण लिया और तब मैनें फोटो कैमरा व विड़ियो कैमरा लिया और दुकान खोल दी है। जिससे आज मै दो अन्य लोगों को रोजगार देने के साथ 20–25 हजार मासिक कमा कर अपने परिवार के साथ खुशी से जीवन जी रहा हूँ।

जीवन की यात्रा में ऐसे ही कछ अनपेक्षित मोड़ आ जाते हैं जो हमें किसी मंजिल की ओर ले जाते हैं इसलिये बाहर निकलिये, ज्यादा से ज्यादा सीखिये, ज्यादा से ज्यादा काम कीजिये, ज्यादा से ज्यादा अनुभव प्राप्त कीजिये।

मनुष्य बेशक भूखा हो, लेकिन उसके भीतर भी एक आग/चिंगारी ऐसी हो सकती है जो उसे कुछ

कर गुजरने के लिये प्रेरित करती है। जीवन के चित्र पटल पर खूब सारे बिन्दू बना डालिये। उनमें, 'आत्म विश्वास' के साथ रंग भरिये। जीवन को ऐसी दिशा में ले जायें व बनायें कि वह कलाकार की कृति जैसा दिखाई दें। आत्म विश्वास के साथ एक बिन्दू से दूसरे बिन्दू के साथ कदम बढ़ाए।

जहाँ तक मेरे परिवार की बात है, हमने जीवन में बहुत उथल पुथल देखी है । परिवार में ऐसा कोई भी नहीं था जिससे मैं अपन मन की बात कह सकूँ। मेरे वो निराशा भरे दिन मुझे आज भी याद है । मैं यह भी जानता था कि मुझे सहयोग करने वाला कोई नहीं है, इसलिये मुझे अपने बल पर ही काम करना था। अपने फैसले/निर्णय खुद ही लेता हूँ। इस प्रशिक्षण से मुझे बहुत मदद मिली है। अब मैं स्वतन्त्र स्वभाव का हो गया हूँ।

जब भी मुझे अपने मन के भीतर से या बाहर से चुनौती/कठिनाइयाँ मिलती है, उस समय मैं अपने आप को साबित करने की कोशिश करता हूँ। हमें असफल होने पर भी बार–बार प्रयास करते रहने चाहिये और हार नहीं माननी चाहिये। निःसन्देह समस्याएँ तो आती रहती हैं उनका सामना करने वाले हीं आगे बढ़ पाते हैं।

सही मार्गदर्शन किसी इन्सान को सफलता के शिखर तक ले जा सकता है। एक साधारण से इन्सान में बहुत सारी क्षमताए होती हैं लेकिन हर इन्सान को एक सही मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। अन्त में मैं तो यही कहूँगा की ''सीखते रहो, और आगे बढ़ते हो।''

कैमरे की नजर से

नाम	श्री देवेन्द्र राणा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9837854958, ranadevender942@gmail.com
इकाई का नाम	राना डिजिटल एवं मिक्सिंग लैब
पता	कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 8,000,00/– (आठ लाख रूपये मात्र) (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 15,00,000/–(पंद्रह लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	05 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

''रहीमदास जी कहते हैं''
समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात।
सदा रहे नहिं एक सी, का रहीम पछतात ।।

रहीमदास जी कहते हैं कि जिस प्रकार उपयुक्त समय आने पर वृक्ष में फल लगते हैं, झड़ने का समय आने पर वह झड़ जाता है उस ही प्रकार हमेशा किसी की अवस्था एक जैसी नहीं रहती, इसलिऐ दुःख के समय परिस्थितियों को संभाल लेना चाहिये। जीवन में या किसी भी व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार सकारात्मक रहना बहुत आवश्यक है।

भारत में ऐसे अनगिनत युवा हैं जो प्रतिभावान होने के बावजूद अपनी रूचि एवं सपनो को साकार नहीं कर पाते। अक्सर देखा गया है कि छोटी उम्र में ही बड़े–बड़े उत्तरदायित्व, जिम्मेदारियों एवं

जरूरतों का बोझ जैसे जैसे किसी व्यक्ति के मन एवं ह्रदय पर पड़ता है, वैसे वैसे ही उस मनुष्य की अपनी इच्छाएं एवं शौक खत्म हो जाते हैं।

सपने देखने का अधिकार सभी को है परन्तु उन्हे साकार करने का सार्मथ्य वही लोग कर पाते हैं जो लगातार कार्य के प्रति प्रयासरत रहते हैं।

मैं देवेन्द्र सिंह राणा पुत्र श्री प्रताप सिंह राणा, ग्राम अमरावपुर, पो0ओ0 किशनपुर, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड़ का निवासी हूँ। मेरा जन्म सन 1980 को एक निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। हम चार बहिने व एक भाई है। मेरी शिक्षा राजकीय इण्टर कॉलेज कण्वघाटी, किशनपुर कोटद्वार में पूरी हुई। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात मेरा रूझान स्वयं् का कार्य करने का रहा है।

समय के साथ–साथ परिवार की आर्थिक स्थिति व जरूरतों को पूरा करने के लिये मैं प्रयासरत रहा परन्तु इसके साथ साथ मैं इस अवसर की तलाश में भी रहा कि मुझे अपनी आजीविका के बारे में सोचने व कार्य को समझने का मौका मिले। सर्वप्रथम मैनें डिजीटल फोटोग्राफी सम्बन्धित कार्य सीखा, मैनें दस साल तक यह कार्य किया व फोटोग्राफी सम्बन्धित समस्त कार्यों को पूर्ण रूप से सीख लिया। मैनें संस्थाऩ के द्वारा चलाये जा रहे उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग किया प्रशिक्षण के दौरान मैने उद्यम से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की जानकारी प्राप्त की। मैने उद्यमिता अभिप्रेरणा के साथ–साथ, लक्ष्य स्थापन, व्यवस्थित योजना निर्माण, विपणन और ग्राहक सम्बन्धी प्रबन्धों की जानकारी प्राप्त की। व्यवसाय सम्बन्धी कौशल का निर्माण मेरे अन्दर इस प्रशिक्षण के माध्यम से ही हुआ है । प्रशिक्षण के उपरान्त मैने व्यवस्थित रूप से अपना व्यवसाय आरम्भ करने की योजना बनाई। प्रशिक्षण में मिली जानकारी एवं सहयोग के आधार पर मैने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत मैने आठ लाख रूपये के ऋण हेतु आवेदन किया, जिसके द्वारा मैंने कोटद्वार में अपनी स्वयं् की फोटोग्राफी की दुकान खोली। आज मेरी कोटद्वार शहर और ग्रामीण क्षेत्र में दो दुकानें हैं। मेरे पास आज के जरूरतों के हिसाब से सभी आधुनिक तकनीकी के कैमरे व सामान

उपलब्ध है। आज मैं 40,000.00 रूपये महीना कमाने के साथ–साथ अन्य लोगों को रोजगार भी प्रदान कर रहा हूँ।

ईश्वर सभी को उसके जीवन में कुछ ऐसे मौके व अवसर प्रदान करता है कि यदि मनुष्य चाहे तो अपने जीवन को सार्थक एवं सफल बना सकता है, बस जरूरत होती है कि वह व्यक्ति विशेष उस अवसर की पहचान कर उसको क्रियान्वित कर सके। हमें हमेशा जो काम हाथ में लिया है, चाहे वह बड़ा हो या छोटे से छोटा काम हो उसे पूरी निष्ठा और एकाग्रता के साथ पूरा करना चाहिये तो हमें हर काम में सफलता मिलेगी क्योंकि जो इन्सान एक छोटा काम पूरी एकाग्रता के साथ कर सकता है, वह बड़े काम की जिम्मेदारी भी बखूबी निभा सकता है।

अगर आप अपने काम के प्रति सर्मपण निष्ठा और दृढ़ इच्छा शक्ति रखेंगे तो आपको निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी।

शून्य से शिखर तक

नाम	श्री दिनेश कुमार
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	
इकाई का नाम	श्याम मोबाइल रिपेयरिंग
पता	अम्बाला
स्थापना वर्ष	2012
कुल लागत	रू0 1,000,00/–(एक लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 4,00,000/–(चार लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

हर असफलता के पीछे कहीं न कहीं सफलता छुपी होती है। जरूरत है उसको पहचान कर एकाग्रता के साथ कार्य करने के साथ जिन्दगी के हताश असफलताओं से घिरे यह कहानी अम्बाला, हरियाणा के दिनेश कुमार की है। एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्में दिनेश ने बारहवीं तक शिक्षा ग्रहण करी। पारिवारिक स्थिति ठीक ना होने के कारण भविष्य की चिन्तायें दिनेश के वर्तमान को घेरे हुये थी। मानों वह एक बिना लक्ष्य के दौड़ रहा हो जिसमें सिवाय चिन्ता और परेशानियों के कुछ भी नहीं। अपने विषय में बताते हुये दिनेश कहते हैं

कि परिवार की बिगड़ती आर्थिक स्थिति के चलते मैने एक छोटी सी नौकरी करना शुरू कर दिया। समय बढ़ता गया मगर आर्थिक स्थिति में सुधार की कोई संभावना नजर नहीं आ रही थी। ऐसी स्थिति में समाचार पत्र के माध्यम से मुझे प्रशिक्षण कार्यक्रम की जानकारी मिली। कार्यक्रम के दौरान मुझे कई ऐसे विषयों के बारे में बताया गया जिसकी मुझे कोई जानकारी नहीं थी। मेरी हताशा और निराशा का मुख्य कारण आत्मविश्वास मे कमी थी। सकारात्मकता के साथ अर्जित ज्ञान और कौशल के आधार पर मैने स्वयं का कार्य एक छोटे स्तर से शुरू करो। प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान और मार्गदर्शन के आधार पर दिनेश ने अपने उद्यम को बढ़ाना शुरू किया। अपने व्यवहार एवम् कुशल प्रबन्ध के आधार पर दिनेश ने जल्द ही अपने कार्य मे सफलता प्राप्त की। अपने साथ–साथ एक अन्य व्यक्ति को रोजगार देकर स्वरोजगार की महत्ता को सिद्वकिया है। आज वर्तमान मे दिनेश 10–15 हजार रूपये मासिक आय के रूप मे कमा रहा है।

कहतें हैं मंजिल चाहे कितनी भी दूर हो शुरूआत एक कदम से ही होती है। कुछ ऐसी ही शुरूआत की तरफ दिनेश के कदम बढ़ रहे थे। परेशान से दिखने वाले दिनेश के चेहरे पर मुस्कुराहट यह बताने को काफी है कि जिस सफलता को वह अपने से दूर तलाश रहा था वह असल में उसके स्वयं के भीतर थी। पन्द्रह से बीस हजार रूपये कमाने वाले दिनेश ने यह साबित किया है कि परिस्थितियाँ कभी अनुकूल या प्रतिकूल नहीं होती। सफलता पूर्ण रूप से हमारे किये गये प्रयासो पर निर्भर रहती है।

सपनों की उड़ान

नाम	राकेश नेगी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9411382196, uttes.uk@gmail.com
इकाई का नाम	सायबर जोन
पता	देहरादून, उत्तराखण्ड
स्थापना वर्ष	2005
कुल लागत	रू0 500000/– (पाँच लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 20,000,00/– (बीस लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	20(पूर्णकालिक/ अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

यह कहानी है एक ऐसे युवा कि जिसने तेजी से विकसित होती संचार क्रांति को न केवल अपनी आजीविका का साधन बनाया बल्कि युवा वर्ग को डिजिटल कौशलता प्रदान करने का कार्य भी कर रहे हैं। मूल रूप से जनपद टिहरी के रहने वाले राकेश नेगी के पिता की मिठाई की दुकान, माता एक ग्रहणी थी। शिक्षित न होने के बावजूद भी माता ने बच्चे की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया और उन्हे बेहतर से बेहतर शिक्षा प्रदान करने का प्रयास किया। इस ही कारण राकेश शुरू से ही एक मेधावी छात्र रहा और एम0सी0ए की शिक्षा पूर्ण करने के बाद उन्हे कई बहु राष्ट्रीय कम्पनियों में नौकरी के प्रस्ताव मिले जिसे शुरूआती दिनों में स्वीकार करते हुऐ बहु राष्ट्रीय कम्पनी में नौकरी शुरू करी।

एक व्यवसायी परिवार में हुयी परवरिश का असर युवा राकेश के विचारों में साफ दिखने लगा। पिता चाहते थे कि राकेश उनका कारोबार सम्भाले तथा माँ चाहती थी कि पुत्र किसी प्रतिष्ठित पद पर कार्य करे । इस द्वन्द के बीच राकेश ने नौकरी न कर स्वयं का उद्यम स्थापित करने की ठानी। और अपने इस ही जुनून को जारी रखते हुऐ सन् 2005 में संस्थान (निसबड) द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम से मिली जानकारी एवं ज्ञान के आधार पर उसने प्रंधान मंत्री रोजगार योजना के तहत सायबर कैफे हेतु रू0 150000/– के ऋण हेतु आवेदन किया। ऋण स्वीकृती के पश्चात सायबर जोन अस्तित्व में आया। राकेश की लगन और मेहनत से उसे कार्य में निरन्तर सफलता मिलती रही जिसे देखते हुऐ उन्होने सन् 2010 में कार्य को बढ़ाने हेतु रू0 250000/–का ऋण लेकर कम्प्यूटर प्रशिक्षण संस्थान की शुरूआत करी।

और आज वर्तमान में उत्तराखण्ड प्रदेश के कई क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता को बढ़ाते हुऐ कई केन्द्रों को स्थापित किया जिसमें रोजगार के अवसरों के साथ साथ भावी उद्यमियों के लिऐ भी अवसर उपलब्ध करायें । 20 कर्मचारियों वाले सायबर जोन का कुल वार्षिक टर्नओवर लगभग रू0 2000000/– है। जिसकी अगुवाई करते हुऐ राकेश आज भी निरन्तर आगे बढ़ने के लिऐ प्रयासरत रहते हैं। अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता एवं संस्थान से मिले मार्गदर्शन को देते हुये वह डिजिटल पथ पर अग्रसर है।

सशक्तिकरण

नाम	बॉबी कलिता
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9706002527 bobbykalita@gmail.com
इकाई का नाम	ब्यू शाइन
पता	डिबरूगढ़, आसाम
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 1,50,000/– (एक लाख पचास हजार रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 8,17,960/– (आठ लाख सत्रह हजार नौ सौ साठ रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	04 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

यह कहानी है एक एसी लड़की की जिसने युवा अवस्था से ही अपने मजबूत इरादों के आधार पर स्वावलम्बी जीवन को जीने की परिकल्पना को सार्थक किया। बॉबी कलिता एक ऐसी लड़की की कहानी है जिसने अपने केरियर की शुरूआत मात्र 16 वर्ष की आयु मे मॉडलिंग की शुरूआत की, जिस समय इस उम्र मे लड़के–लड़कियॉ अपना केरियर बनाने मे लगे रहते है। बॉबी कलिता को बहुत ही कम समय मे उपलब्धि मिलनी शुरू हो गयी। लेकिन समय का चक्र ऐसा घूमा कि उसे अपनी मॉडलिंग छोड़नी पड़ी, क्योकि वह एक हादसे मे जल गयी थी। इस वजह से उसे गुहाटी छोड़ना पड़ा, ओर वह अपने जन्म स्थली डिबरूगढ़ वापस आ गयी।

जीवन में आये इस अप्रत्याशित समय से वह घबराये नहीं और उसने अपनी जिंदगी एक नये सिरे से शुरू करने का संकल्प लिया जिसके तहत आई0आई0ई के सम्पर्क में आने के बाद उसने अपने जन्म स्थली मे उसने ब्यूटी पार्लर का डिप्लोमा कोर्स किया। ब्यूटी डिप्लोमो कोर्स के उपरान्त ही उसने

2013 मे दूसरा एडवान्स डिप्लोमा कोर्स ब्यूटी थेरेपी ओर 2014 मे योगा का कोर्स केरल के बहुत प्रतिष्ठित संस्थान से किया।

बॉबी कलिता ने 2012 मे अपनी खुद की बचत एवम् परिवार के सहयोग से उसने अपने स्वयं का ब्यूटी पार्लर खोला जिसकी लागत रू0 15,000,00/– (पंद्रह लाख) रूपये मात्र आई। अपनी मेहनत एवम् लगन के दम पर अपने पार्लर की एक अलग पहचान बनायी जिसके फलस्वरूप उसकों सेवा प्रदत्ता के रूप मे सरकारी संस्थान आई0आई0ई0 जोकि कौशल विकास कार्यक्रमों का संचालन करती है सेवा प्रदत्ता के रूप मे जुड़ गयी। इसी चीज को देखते हुये अन्य सरकारी संस्थाये आसाम आयल इण्डिया ने भी उनको कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम देने शुरू किये। वह एक नियमित स्व–वित्तपोषित पाठ्यक्रम भी चलाती है। उन्हे आसाम सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ महिला उद्यमी के रूप मे पुरस्कृत किया गया। आज बॉबी अपनी जिंदगी से बहुत खुश हैं और उसकी यह खुशी उसके साथ साथ औरों को भी जिंदगी जीने का मकसद दे रही है।

जन्मभूमि बनी कर्मभूमि

नाम	श्री दिनेश नेगी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9012120544, dineshnegi03334@gmail.com
इकाई का नाम	नेगी बेकर्स
पता	कोटद्वार, पौड़ी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	(2014)
कुल लागत	रू0 7,000,00/–(सात लाख रूपये मात्र) (पी0एम0इ0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त) रू0 6,000,00/– (छः लाख रूपये मात्र) स्वयं
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 20,000,00/–(बीस लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	08 (पूर्णकालिक), 07 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	उत्पादन

व्यवहारिक ज्ञान और हुनर को आधार बनाकर सफलता की कहानी गढ़ने वाले दिनेश नेगी आज अपने उत्पादों के लिये पूरे पौड़ी क्षेत्र में जाना पहचाना नाम है।

उत्तराखण्ड के कोटद्वार क्षेत्र में जन्में दिनेश का जन्म एक कृषक परिवार में हुआ। शिक्षा कोटद्वार से पूरी करने के बाद आजीविका की तलाश में दिल्ली जैसे महानगरों में कहीं रोजगार तो मिला पर घर से दूर रहकर न घर वालों की सेवा हो पाती थी ना काम में पूरी तरह से मन लग पाता, लिहाजा दिनेश ने पिता को भी उसके साथ चलने को कहा पर पिता ने यह कहकर मना

कर दिया कि वह अपनी जन्म भूमि को छोड़कर अब कहीं नहीं जायेंगे। पिता के इन्ही शब्दों ने दिनेश का ह्रदय परिवर्तन कर दिया। रोजगार के तौर पर फूड्स इन्डस्ट्री में अपने अनुभव के आधार पर कोटद्वार में अपनी बेकरी खोलने का मन बनाया। जानकारी एवं धन के अभाव में वह किसी भी फैसले पर नहीं पहुँच पाया। ऐसे समय में किसी रिश्तेदार के बताने पर दिनेश ने संस्थान में सर्म्प किया। संस्थान द्वारा सहयोग के तौर पर प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत दस लाख रूपये के लिये आवेदन कराया गया जिसमें परियोजना एवं अन्य सहयोग के साथ प्रशिक्षण भी संस्थान द्वारा दिया गया। जिसके तहत 7 लाख का ऋण विभाग द्वारा स्वीकृत किया गया।

मार्गदर्शन एवं अपने कौशल के आधार पर दिनेश ने न केवल अपना उद्यम स्थापित किया बल्कि अपने पिता का सपना भी साकार किया। 15 से अधिक सहयोगी तथा रू0 20,00,000/–(बीस लाख) रूपये मात्र से अधिक टर्नओवर के साथ दिनेश आज उन सब युवाओं के लिये प्रेरणा है जो संसाधन के अभाव में शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं।

हम जैसा चाहते हैं हम वैसा कर पाते हैं जरूरत सत्त प्रयास की होती है। दिनेश ना केवल एक बेकरी के मालिक हैं बल्कि उन सब के लिये प्रेरणा हैं जो सपनों को जीना चाहते हैं। बेकरी का काम बढ़कर स्वीट्स तक पहुँच चुका है और अभी कई आयाम आने बाकी है।

सफलता की उडान

नाम	श्री हर्षित खट्टर
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9760220078, hkkhattar.khattar2@gmail.com
इकाई का नाम	ओडनी बुटीक
पता	डोईवाला, देहरादून
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 1,000,00/– (एक लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 8,000,00/–(आठ लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	05 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

अभाव के चूल्हे पर आवश्यकता की आँच से हुनर जब पकता है तो कामयाबी खुद–बखुद चलकर आती है। एक दुग्ध डेयरी में काम करने वाले प्रेम खट्टर के यहाँ एक ऐसे ही बालक का जन्म हुआ जिसने अपने हुनर के बल पर कामयाबी की सीढ़ियाँ चढ़ी। सन्तनगरी ऋषिकेश में हर्षित खट्टर का जन्म एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ। पिता की आमदनी से घर का खर्च चल पाना मुश्किल था ऐसे में माँ ने सिलाई कार्य

कर पुत्र के पालन पोषण का पारिवारिक जिम्मेदारी में पूरा साथ निभाया। समय बढ़ता गया हर्षित युवा और माता पिता बुजुर्ग होने लगे ऐसी स्थिति में हर्षित ने परिवार की जिम्मेदारी अपने कंधो पर लेने का फैसला किया। सपने देखना और उन्हे बुनना दोनो का अन्तर उसे उस समय नजर आया जब अजिविका के लिये उसे दिन रात संघर्ष करना पड़ा। मार्ग की असफलताऐं और घर की चिन्ता से वह टूट सा गया था ऐसे में एक दिन माँ को सिलाई करते देख उसने भी इस कार्य को करने का मन बनाया। कार्य कौशलता और व्यवसाय ज्ञान के लिये उसका सहयोग संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण ने किया जहाँ उसने तकनीकी कौशल के साथ साथ आत्म विश्वास भी प्राप्त किया ''महात्मा गाँधी के अनुसार सफलता शारीरिक बल से नहीं बल्कि अदम्य इच्छा शक्ति से प्राप्त होती है''। अब अपने कौशल और विश्वास के साथ उसने छोटे स्तर पर कार्य करना शुरू किया। जिसमें परिवार का सहयोग संस्थान का मार्गदर्शन पाकर वह और अधिक मेहनत के साथ अपने कार्य में निखरता गया।

निरन्तर परिश्रम और कार्य में नवीनता के साथ साथ उसके व्यवहार से ग्राहकों की संख्या तथा आमदनी दोनो में इजाफा हुआ। आज वर्तमान में हर्षित ओढ़नी बुटिक के नाम से अपना उद्यम चला रहा है। एक समय वह था जब उसे काम के 2,000/– रूपये भी मासिक प्राप्त नहीं होते थे और आज वह 5 कर्मचारियों को वेतन देने के साथ–साथ 8,000/– रूपये दुकान का किराया भी देता है। कुल मासिक 30–40 हजार रू0 के बीच कमाने वाले हर्शित का सपना है कि वह अपनी एक फैक्ट्री खोले जिसमें सैकड़ों लोगों को रोजगार देने के साथ वह अपना सपना पूरा करे।

सफलता हमारे प्रयासों में ही छुपी होती है जरूरत उसको पहचानकर और अधिक परिश्रम से कार्य करने की होती है। जो ऐसा करने में सफल होते हैं सफलता उनके कदमों में और दुनिया उनके साथ होती है।

सार्थक प्रयास

नाम	श्री जयकृत नेगी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9720291824, jaicomputer2009@gmail.com
इकाई का नाम	जय कमप्यूटर
पता	तिलवाड़ा, रूद्रप्रयाग
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 5,000,00/– (पांच लाख रूपये मात्र) (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,20,000/–(सात लाख बीस हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 01(अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

उत्तराखण्ड के पहाड़ी क्षेत्र मे पैदा हुये जयकृत नेगी ने उपलब्ध अवसरों को उपलब्धी मे बदलते हुये स्वयं का उद्यम स्थापित किया। अपने विषय मे बताते हुये वह कहते है कि मेरा जन्म तड़ाग गॉव हेमन्तनगरी तोक में 05 जून 1981 को हुआ, मेरी प्रारम्भिक पढ़ाई कक्षा एक से कक्षा दो तक गॉव में ही हुई, उसके बाद तीसरी कक्षा से अपने पिता जी के साथ कमेंडा गौचर में हुई, जहा पर मेरे पिता जी रेशम विभाग में सर्विस करते थे, मैंने कक्षा तीन से, जब शायद मैं मात्र 10–11 साल का था, तब से बिना माँ के पिता जी के साथ अकेला रहा। बचपन से ही अकेला रहना सीखा। अपना काम

स्वंय करना सीखा, जब मैं पाचवी कक्षा में प्रवेश कर गया तब से अपने आप खाना बनाने से लेकर स्वयं के जो भी नित्य कर्म होते हैं, सारे स्वयं करना सीख चुका था, जब पिता जी कभी काम से वाहर चले जाते थे स्वयं ही अपना कार्य करने लगा था, पांचवी का वोर्ड देकर कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया उसके बाद कक्षा छः में जू0हा0स्कूल, नगरासू में पढा ओर आठवीं कक्षा तक वही पर पढा, जब में कक्षा 8वीं में था, जब कक्षा आठ हमारे स्कूल में ग्रुपिंग फोटोग्राफी हुई तब से मेरे दिमाग में यही बात समझ में आयी कि हमे भी कुछ करना चाहिये मगर हम छोटे थे इसलिये बातें दिमाग मे ही रह गयी। आठवीं में भी बोर्ड हुआ, आठवीं कक्षा पास करके रा0इ0का0 गौचर में नवीं कक्षा में सांईस से पढाई की। दसवीं का बोर्ड दिया, कक्षा 11 में गया तब मुझे मौका मिला एक स्टूडियो गौचर में काम करने का। कक्षा 11 में जब–जब छुट्टियां होती थी, तब–तब मुझे शादियों में स्टूडियो मे काम करने का मौका मिला।

जब मैंने 12 पास किया उसके उसके बाद रा0म0वि0 कर्णप्रयाग में बी.काम में एडमिशन लिया अपनी पढाई के साथ–साथ फोटोग्राफी का काम किया, पहले तो शौक था, फिर यह शौक के साथ–साथ अपना काम भी शुरू किया और अपने कमाये रूपयों से खुद की पढाई की। इसी बीच मैंने गौचर से कम्प्यूटर की पढ़ाई भी इसी के साथ–साथ की। इसके बाद दिल्ली से कम्प्यूटर हॉर्डवियर एवं सॉफ्टवेयर का कोर्स किया। फिर जब मैं वापस गौचर से तिलवाड़ा में एक छोटी सी दुकान किराये पर ली, उस समय कुछ रुपये पिताजी ने कैमरे और अन्य सामान खरीदने के लिये दिये।

मैं तिलवाडा सन् 2000 में आया। सन् 2000 से मैंने बहुत बड़ी उपलब्धियॉ हासिल की, जब मैं शुरू में अपना काम शुरू किया एक ऐसी जगह पर जहां पर ना तो मुझे कोई जानता था ना ही कोई रिस्तेदार थे, मेरे साथ मेरे स्कूल के एक साथी महावीर ने भी साथ दिया शुरू में तो केवल इतना ही कमा पाते थे कि दुकान का किराया बिजली का बिल, और खाने–पीने तक ही सीमित हो पाता था, मैंने शुरू से ही दुकान में ही रहते थे, रात को दुकान के अन्दर ही रहना होता था, वही से काम शुरू हुआ धीरे–धीरे काम किया शुरूआत में,बडी कठिनाइयों का सामना किया, जैसे–जैसे साल बीतते गये वैसे–वैसे मैने दुकान में सामान भरना शुरू किया, और फोटोग्राफी में लगभग 18 सालों काम कर रहा हूँ।

जब मैने संस्थान द्वारा संचालित प्रशिक्षण कार्यक्रम में गया जहां पर संस्थान के परामर्शदाता द्वारा उद्यम को आगे बढाने में प्रेरित किया। तत्श्चात् उनके द्वारा दो साप्ताहिक उद्यमिता विकाश कार्यक्रम

में प्रतिभाग किया, जहां पर मैने स्वयं के उद्यम स्थापाना एवं संचालन के गुण सीखे, उसके बाद मैंने स्वयं का रोजगार शुरु किया। शुरुआती मासिक आय 2,500 से 3,500 तक होने लगी। लेकिन इतने से सन्तुष्ट नही हो पा रहा था नाही सारा काम चल पा रहा था, इसके बाद संस्थान द्वारा मार्गदर्शन के आधार पर मैंने उद्योग विभाग से ऋण लिया और फोटोग्राफी के साथ–साथ कम्प्यूटर हार्डवेयर एवम् साफ्टवेयर, का ऑन लाइन काम शुरु किया, जय कम्प्यूटर के नाम पर तिलवाडा (रुद्रप्रयाग) में स्थापित प्रतिष्ठान आज के दिन एक प्रसिद्ध प्रतिष्ठान है। आज मै 30,000/– (तीस हजार) रूपये महीना कमाने के साथ दो अन्य लोगों के रोजगार का साधन भी हूँ। इस उम्र में मैने अपना समय अपने समय को वर्तमान मे कार्य करने और भविष्य की नीति को बनाने मे इस्तेमाल किया जो एक सच्चे उद्यमी की पहचान है।

हिम्मत या हार

नाम	श्री सत्यम लोधी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8923548725, rajput.satyam99@gmail.com
इकाई का नाम	सत्यम सायबर कैफे
पता	डोईवाला, देहरादून
स्थापना वर्ष	2011
कुल लागत	रू0 3,80,000/–(तीन लाख अस्सी हजार) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 8,40,000/– (आठ लाख चालिस हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 01(अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

यह कहानी सत्यम लोधी नामक एक ऐसे युवा की है जिन्होने स्नातक की पढ़ाई के बाद अपना स्वरोजगार स्थापित करने का निर्णय लिया। पेशे से पिता के उद्यमी होने के कारण सत्यम का रूझान स्वरोजगार की ओर था। ऐसे परिदृश्य में घरवाले सत्यम से भी उम्मीद करते थे कि वह भी अपने पैरो पर खड़े होकर पारिवारिक आय में अपना सहयोग दे ।

सत्यम एक होनहार छात्र था पर उद्यमिता बोध के अभाव में वह यह निर्णय नही कर पा रहा था कि वह रोजगार या

स्वरोजगार मे से किस विकल्प को चुने जिससे उसका वर्तमान एवम् भविष्य सुरक्षित होने के साथ–साथ वह पारिवारिक हित के लिये काम कर सके। एक दिन उसे अपने मित्रों द्वारा देहरादून में आयोजित होने वाले उद्यमिता विकास कार्यक्रम की जानकारी प्राप्त हुयी। इस अवसर को उपलब्धि में तब्दील करने के लिये प्रायोजित संस्थान में दूरभाष द्वारा जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण का कोई शुल्क ना होने पर उन्होने अपना नामांकन कार्यक्रम हेतु दर्ज कराया।

सत्यम पहले से ही एक होनहार छात्र रहा था जो कि कार्यक्रम के दौरान उनके व्यवहार एवं ज्ञान के कारण प्रदर्शित हुआ। कार्यक्रम की अवधि समाप्त होने के बाद भी सत्यम घंटो तक प्रशिक्षण केन्द्र में बैठ कर प्रशिक्षकों से जानकारी लेता रहता। उसने इस अवधि के अन्तर्गत उसने पिता के उद्यम से प्रेरित होकर सोडा वाटर बॉटल इकाई स्थापित करने का प्रयास किया किन्तु बाजार मांग न होने के कारण उद्यम मे सफलता न मिल पायी।

संस्थान से परामर्श ओर बाजार सर्वेक्षण के पश्चात् सत्यम ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत साइबर कैफे हेतु 4,000,00/–(चार लाख) रूपये का ऋण लिया। अपने ज्ञान एवम् व्यवहार के आधार पर उन्होने अपने काम का आगे बढ़ाना शुरू किया। अपने प्रतिष्ठान मे जन सेवा केन्द्र स्थापित कर न केवल अपनी आय बल्कि सामाजिक दायित्वों की भी पूर्ति करी। आज वर्तमान मे दो अन्य लोगों को रोजगार देने के साथ वह महीने के 35–40 हजार रूपये कमा कर स्वरोजगार की महत्ता को सबके सम्मुख प्रस्तुत कर रहे है। उपने उद्यम से वह और उसका परिवार दोनो खुश हैं।

काफल पाको

नाम	कनिका
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8194062787
इकाई का नाम	काफल ज्योति
पता	हवलबाग, अल्मोड़ा
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 10,000,00 /– (दस लाख रूपये मात्र) (पी0एम0इ0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 1,50,00,000 /–(एक करोड़ पचास लाख रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	20 (पूर्णकालिक), 30 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	उत्पादन

छोटा सा प्रदेश, उम्मीदें बड़ी, चाहत आगे बढ़नें की, और कुछ कर गुजरने की देवभूमि उत्तराखण्ड़ में जन्म हुआ। कनिका का 1989 में बचपन से ही गॉव की पगडंडियां उसको अपनी तरफ खीचती थी। हरी–भरी पहाडियॉ हमेशा ही उसको बुलाती थी। बी0ए0 गृहविज्ञान करते हुये वो समाज सेवा के कार्य में लग रहे। समय बीतता गया और मास्टर डिग्री हासिल करने के बाद वह फैशन डिजाईनिंग और वस्त्र उद्योग में अपने हुनर से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में काम किया। मगर मन कहीं और ही था। शहर की सारी सुख सुविधाएं छोड़कर अपने पुर्खो/पूर्वजों की विरासत को बचाने का बिड़ा उठाया।

संस्थान से प्राप्त प्रशिक्षण और परामर्श के आधार पर प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत 10 लाख रू0 का ऋण लेकर कनिका ने अपने गॉव बिसरा में अपना वस्त्र निर्माण उद्यम लगाया जिसका नाम रखा काफल जिसमें उसने कड़ी मेहनत करके दिन रात लोगों को जागरूक करते हुए वस्त्र उद्योग का एक सफल कारखाना लगाया। पहाड़ में पहाड़ सा जटिल जीवन जी रहे लोग आज भी मूलभूत आवश्यकताओं के लिये संघर्ष करते नजर आते हैं। ऐसी परिस्थिति में कनिका ने उन लोगों के लिये सपने बुने जहॉ पर सड़के भी नहीं है। जहां पर आए दिन लोगों को पानी की दिक्कत उठानी पड़ती है, घर–घर जाकर लोगों को इक्कट्ठा करना उनको कढ़ाई, सिलाई, धागा कटिंग, बुनाई, कपड़ा कटिंग आदि सिखाया और लोगो को और काम को भारत के बड़े शहरो से जोड़ा। कनिका का उद्देश्य गरीब लड़कियों, औरतों जो कि लाचार और मजबूर हैं। उनको अपने पैरों पर खड़ा करना है। 24 घंटे मे से 16 घण्टे काम करके कनिका ने एक कम्पनी को अस्तित्व मे लाया। जो वर्तमान समय मे 1,50,00,000/– (एक करोड़ पचास लाख) रूपये से अधिक के टर्न ऑवर मे कार्य कर रही है।

सारी मुश्किलें को पार करते हुए कम्पनी के 150 लोग प्रशिक्षण मे जुड़े हुए है। कुछ लोगों को नौकरी पर रखा गया है और भविष्य में 900 लोगो को रोजगार देने का लक्ष्य है। जिससे पलायन रूके लोगों कि आमदनी और अच्छी जीवनी आ सके, बच्चे समाज में और देश में नाम रोशन कर सके।

अपराजिता

नाम	आपराजिता बरूआ दास
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9864823047, appy86.2009@gmail.com
इकाई का नाम	दास एडन
पता	गुवाहाटी, आसाम
स्थापना वर्ष	2009
कुल लागत	रू0 17,000/–(सत्रह हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,20,000/–(सात लाख बीस हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	05
कार्य का प्रकार	उत्पादन

यह कहानी आसाम की एक मेंधावी छात्रा सुश्री आपराजिता बरूआ दास की है। जो बचपन से लेकर युवावस्था तक प्रथम श्रेणी मे उर्त्तीण हुयी। स्नातक के बाद भी पढ़ाई को जारी रखते हुये उसने 2 स्नात्कोत्तर कोर्स किये, जिसमे से सेल्स एवम् मार्केटिंग तथा इंटरनेशनल बिज़नेस ऑपरेशन कोर्स मुख्य रूप से किये । स्नातक के साथ–साथ उसने एक पीएसयू मे फाइनेनशियल एडवाईजर के तौर पर कार्य करना शुरू किया। इसी दौरान उसने सफलतापूर्वक 2 फाइनेनशियल कोर्स भी सफलतापूर्वक किये जोकि बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज तथा नेशनल स्टॉक एक्सचेंज द्वारा कराये गये। शादी के बाद उसे अपनी नौकरी छोड़नी पड़ी क्योकि उसे उस स्थान से दूसरी जगह जाना पड़ा।

हमेशा सीखने की लगन व कुछ करने की भावना उसे 2009 मे आई0आइ0ई0 के सम्पर्क मे लायी। जिसके उपरान्त उसने अपने कार्य की शुरूआत करी। आपराजिता बरूआ ने अपने व्यवसाय की

शुरूआत रूपये 17,000/–(सत्रह हजारे मात्र) से की। व्यवसाय के अर्न्तगत उसने आसाम की प्रचलित आर्टिफिशियल ज्वेलरी को अपने नये ढंग से उसे नये रूप मे उभारा जिससे युवा पिढ़ी का रूझान आर्टिफिशियल ज्वेलरी उस ओर आक्रशित किया जा सके। इसमे उसने अपने कार्य को आगे बढ़ाने के लिये इंटरनेट का सहारा लिया। इंटरनेट के द्वारा उसे मार्केटिंग मे फायदा हुआ एवम् आर्टिफिशियल ज्वेलरी की मार्केटिंग दूर–दूर तक पहुॅची।

आपराजिता बरूआ ने वर्तमान मे अब तक आर्टिफिशियल ज्वेलरी के रू0 1,500/– (पंद्रह सौ) रूपये से भी ज्यादा डिजाईन तैयार कर चुकी है। इसके अतिरिक्त वह तीन उद्यम ओर भी चला रही है जिसके नाम निम्नवत्त् हैः–

- ज्वैलरी एवम् टेक्सटाईल डिज़ाइनिंग
- इन्फरा सेक्टर
- इवेन्ट मैनेजमेंट

उसके उद्यम को नयी ऊँचाई एवम् नयी पहचान तब मिली जब उसने आसाम ज्वेलरी एवम् फेब्रिक को ऑनलाईन सोशल मिडिया के माध्यम से बढ़ावा दिया गया। वर्तमान में उसके फोलोवर्स एक लाख तीस हजार से अधिक लोग है। यह संख्या दिन– प्रतिदिन बढ़ रही है। वर्तमान मे अपने उद्यम के द्वारा 5 लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया। वर्तमान मे रूपये 7,20,000/– (सात लाख बीस हजार) रूपये मात्र टर्नओवर है।

सपना हुआ साकार

नाम	कु0 खुशनुमा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	7417917415
इकाई का नाम	न्यू लुक ब्यूटी पार्लर,
पता	
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 1,50,000/– (एक लाख पचास हजार रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,50,000/– (छः लाख पचास हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

किसी ने सत्य ही कहा है कि यदि मनुष्य सपने देख सकता है तो उन्हे पूरा करने का हौसला भी कर सकता है। यह पंक्तियाँ मैने किसी बुजुर्ग से सुनी थी।

मेरा नाम खुशनुमा है। मेरे पापा का नाम अजीम राहत है और मेरी मम्मी का नाम फूल ज़मा है। मेरे पापा मार्केट में सेल्स मैन है। मैं खुशनुमा आपको अपनी जिन्दगी के बारे में बताना चाहती हूँ। मैने अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ देखा है।

मेरा सपना था कि मैं डॉक्टर बनूँ परन्तु हम सब परिवार वाले किराये पर रहते हैं। और हमारी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थीं। इस कारण

से मैं सही से पढ़ाई भी नहीं कर पाई। बुरी आर्थिक दशा के कारण मैं ज्यादा पढ़ने में सक्षम नही थी। मैं भली–भाँति जानती थी कि मेरी कम शैक्षिक योग्यता मुझे कहीं पर नौकरी दिलाने में सक्षम नहीं थी पर मेरा सोचना यह भी था कि नौकरी से मिलने वाला वेतन घर के खर्चों को पूरा करने के लिये भी काफी नहीं होगा।

मेरे पिता कि कम आमदनी के कारण जीवन कि मूलभूत व मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मेरा और मेरे परिवार का संघर्ष प्रतिदिन जारी रहा। इसलिए भी मैं अपना स्वयं का रोजगार स्थापित करना चाहती थी। मार्गदर्शन एवं अवसरों के अभाव ने भी मेरे मनोबल को गिरा दिया था। मेरा सपना डॉक्टर बनने का था पर मैं अपने घर की परेशानियों के कारण डॉक्टर नहीं बन पाई, पर मेरे माता पिता ने अपनी तरफ से मुझे पूरा सहयोग किया और मुझे पढ़ाया लिखाया। आज मैं B.A कर चुकी हूँ लेकिन अपने घर की स्थिति देखते हुऐ मेरे मन में कुछ करने की चाह थी और मैं अपने परिवार के लिए कुछ करना चाहती थी।

मेरा बचपन गरीबी के बीच गुजरा था। ऐसी परिस्थितियों में मैने कभी कल्पना भी नहीं की थी मैं इस विवश जीवन को पीछे छोड़ कर सफलता प्राप्त कर लूँगी और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिये उनका सहारा बन पाऊँगी। मैं चाहती थी कि मैं अपने माता–पिता का हाथ बटाऊँ और शायद उन्हे अपना घर बनाने में हेल्प भी कर पाऊँ पर मुझे ना जाने क्यों कुछ करने से डर लगता था। मेरी हिम्मत ही नहीं होती थी कुछ कर पाने की। संस्थान के माध्यम से मैने उद्यमिता पर आधारित प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण द्वारा मिले अवसर का प्रयोग करके अब मैं अपने जीवन को सम्पन्न बनाने का प्रण ले चुकी थी।

प्रतिकूल परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी मन में कुछ कर दिखाने और सफलता प्राप्त करने कि तीव्र इच्छा थी। एक लड़की होने के कारण मेरे अन्दर जो डर था वह भी इस प्रशिक्षण के साथ साथ खत्म हो गया और मेरे अन्दर आत्म विश्वास उजागर हो गया। इस प्रशिक्षण ने कुशलता पूर्वक मेरे जैसी न जाने कितनी महिलाओं को निपुणता प्रदान की व उनके मन से असफल होने के कारणों को निकाल फेंका। महिलाओं को अपना व्यवसाय/उद्यम आरम्भ करने की जानकारी दी गयी। मैने मन लगा कर प्रशिक्षण में भाग लिया और अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

यह प्रशिक्षण अत्यंत सरल एवं व्यवस्थित था जिसने मेरे सामर्थ्य एवं कमजोरियों को पहचानने में मेरी

सहायता की। इस दौरान मेरे मनोबल में खासी वृद्धि हुई और मुझे मेरा उद्यम स्थापित करने व जिन्दगी में एक मुकाम हासिल करने का आत्म बल मिला।

प्रशिक्षण के उपरान्त मैने अपनी दोनो मौसियों के साथ मिलकर पार्लर खोला है। हमारा पार्लर अच्छा चलता है, जिससे हम महीने के रूपये 20,000/—(बीस हजार) रूपये कमा पाते है।

मैं उन सभी लोगों को यह सन्देश देना चाहती हूँ जो मेरी तरह आगे बढ़ने से मेरी तरह डरते हैं कि जिन्दगी में कुछ भी दुःख हो या सुख कभी घबराना नहीं चाहिए। जिन्दगी में दुःख और सुख तो आते ही रहते हैं पर रूकना नहीं चाहिए। अच्छा वक्त हो या बुरा वक्त हमें हमेशा कुछ सिखाकर ही जाता है।

अब मुझे लगता है कि मैं अपने और परिवार के सपनों को पूरा कर सकती हूँ।

हिम्मत ने दिया रास्ता

नाम	कु0 माधवी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9896262338
इकाई का नाम	कन्सल बुक डिपो
पता	अम्बाला शहर, हरियाणा
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 2,000,00/– (दो लाख रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 8,40,000/– (आठ लाख चालिस हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	व्यापार

तेजी से विकसित हो रहे भारत का एक सच यह भी है कि आबादी का एक बड़ा तबका आज भी गरीबी रेखा के नीचे जिन्दगी जी रहा है। इस तबके से हजारों ऐसी कहानियाँ निकल कर आई है जिसने समाज के सभी वर्गों को प्रेरित किया है। यह कहानी भी एक ऐसी लड़की की है जिसने प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने आप को स्थापित किया। माधवी का जन्म एक अत्यन्त गरीब परिवार में हुआ। अपने विषय में बताते हुये माधवी कहती है :

मैने अपनी पढ़ाई के दौरान काफी मुश्किलों और चुनौतियों

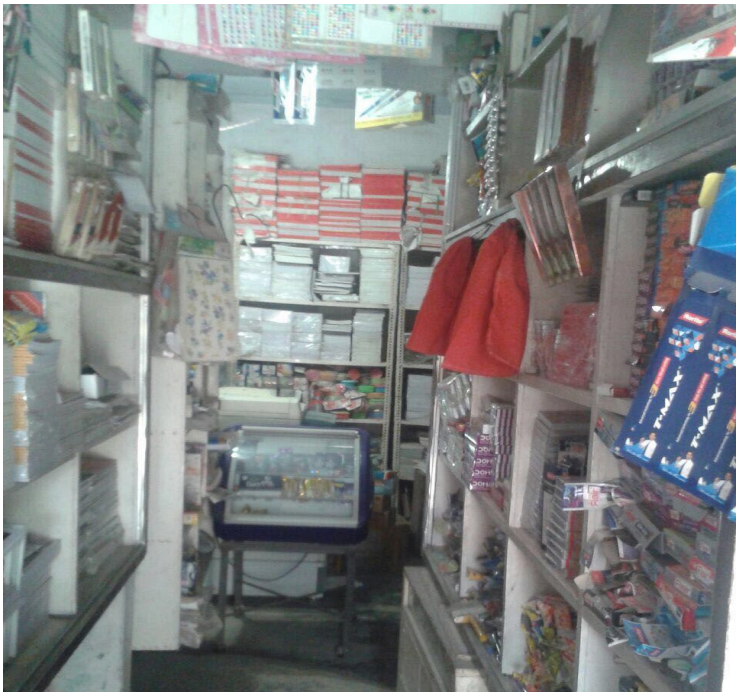

का सामना करना पड़ा। बचपन से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति होने के कारण मुझे सीखने की काफी ललक थी एवं दुनिया के बारे में सोचने समझने की समझ थी। मैने किसी तरह अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद आगे की पढ़ाई पूरी करी। मैं आगे की पढ़ाई जारी रखने की सोचने लगी तथा हिम्मत ना हारते हुये मैने आगे की पढ़ाई पूरी करी।

धीरे–धीरे मेरा मन अपनी आय को लेकर चिन्तित होने लगा। साथ ही साथ मुझे अपनी पारिवारिक आय भी बढ़ानी थी जिससे हमारे परिवार पर आर्थिक संकट ना खड़ा हो। फिर मैने इस स्थिति को समझते हुये नौकरी करने की सोची तथा एक छोटी सी नौकरी करी भी जिसके चलते मेरा मन तो नौकरी पर लगा लेकिन मेरी आर्थिक स्थिति पर कोई खास फर्क नही पड़ा।

मुझे अपने शहर की मीडिया द्वारा विज्ञापन के माध्यम से संस्थान द्वारा अपने ही शहर में चलाये जा रहे प्रशिक्षण के बारे में पता चला। फिर मैने उक्त कार्यक्रम को करने हेतु संस्थान के प्रशिक्षण के केन्द्र में जाकर पता किया और मैने वहाँ पर प्रवेश ले लिया। हमें प्रशिक्षण में बहुत सी बातें बताई गई और हमें पाठ्यक्रम के साथ साथ व्यवसाय से सम्बन्धित जानकारी भी दी गई। इस प्रशिक्षण में हमें जो भी ज्ञान दिया गया वह हमारे लिऐ काफी मददगार था। मैं आज स्टेशनरी का व्यवसाय करती हूँ और 15,000/–(पंद्रह हजार) रूपये मात्र महीना कमा कर अपने पैरों पर खड़ी हूँ। साध्य को साधन मानकर कार्य करने से कुछ भी ऐसा नहीं जो इस दुनिया में असम्भव हो। परिस्थिति कभी अनुकूल या प्रतिकूल नहीं होती। हमारी मनःस्थिति परिस्थिति को अनुकूल और प्रतिकूल बनाती है। हर स्थिति में सकारात्मकता के साथ आगे बढ़ना ही सही मायनों में सफलता है।

कठिनाइयों को पराजित कर मिली सफलता

नाम	मौ0 आरिफ
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9858974486, marifddun@gmail.com
इकाई का नाम	दून फैबिना
पता	इन्दिरा पुरम, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 1,000,00/–(एक लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,00,000/–(छः लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

जीवन में आगे बढ़ने का अवसर सबको मिलता है किन्तु कुछ ही लोग ऐसे होते हैं जो उस अवसर का मान रख सफलता प्राप्त कर पाते हैं''। अनेकों कठिनाइयों का सामना करते हुये किन्तु अपने परिश्रम से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में सफल होते हैं। देहरादून के रहने वाले मौ0 आरिफ सुपुत्र सुलतान अहमद अपने चार भाई बहनों में सबसे बड़े हैं उन्होने वाणिज्य में स्नातक तक शिक्षा ग्रहण करी लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वह आगे नही बढ़ पाया। 39 वर्षीय बताते हैं जीवन के

शुरूआती दौर वर्ष 1995 में उन्होने प्लास्टर ऑफ पेरिस का काम शुरू किया मगर वह चल ना सका। परिवार कि आर्थिक स्थिति दिन ब दिन बिगड़ती जा रही थी। ऐसे हालातों में मेरे किसी रिश्तेदार में सऊदी अरब में नौकरी करने के बारे में बताया जिसके बाद मैं रोजगार के लिऐ सऊदी अरब चला गया। बहन की शादी के लिए कुछ समय बाद मुझे वापस आना पड़ा जिसके बाद मैं दोबारा वापस वहाँ नही गया। मन में अपनों के बीच रहकर स्वयं का कुछ काम करने की चाह ने कदमों को रोक लिया। बात 2012 की है मेरे किसी परिचित द्वारा मुझे संस्थान के बारे में बताया गया। संस्थान द्वारा मैने वर्ष 2012 में प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह प्रशिक्षण करके मैं बहुत ही खुश था। इस प्रशिक्षण के माध्यम से मेरे अन्दर आत्म विश्वास व हौसले का संचार हुआ और मैं व्यवसायिक कौशल से परिपूर्ण हो गया। मैने जीवन की बाधाओं को पराजित कर ध्येय साधना सीखा। निर्भर बनने हेतु काम सीखा। यह मेरे जीवन में एक अहम मोड़ था क्योंकि जिसके माध्यम से मैं अब अपना खुद का कारोबार करने हेतु सक्षम बन गया हूँ।

मैने अपना बुटिक का काम करने हेतु अब दुकान किराये पर ली जिसका किराया ढ़ाई हजार रूपये 2,500/– (पच्चीस सौ) रूपये मात्र महीना है। मैं महीने का 10,000/– (दस हजार) रूपये मात्र खर्चा निकालने के बाद कमा रहा हूँ। मैने अपने साथ दो कर्मचारियों को भी रोजगार दिया हुआ है। मैने अपना खाता बैंक में खुलवाया है। मैं अपने रोजगार से कुछ पैसे बचाकर इसमें जमा करता हूँ। आज मेरे बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ते हैं।

उद्यम से मिली कामयाबी

नाम	कु0 मोनिका मसीह
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9758549253
इकाई का नाम	एंजेल लेडीज़ बुटीक
पता	रायपुर, देहरादून
स्थापना वर्ष	2016
कुल लागत	रू0 1,000,00/–(एक लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,00,000/–(छः लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून के रायपुर कस्बे में रहने वाली मोनिका मसीह एक निम्न मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मी। पिता का साया बचपन में ही उसके सर से उठ गया था। माँ ने हीं काम कर उसका लालन–पालन किया। बचपन से ही उसे कलात्मक कार्य करने का शौक था पर अपनी पढ़ाई की वजह से उसका यह शौक निखर कर सामने नहीं आ पाया। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने भविष्य को सुदृढ़ बनाने के लिये उसने कई जगह नौकरी के लिये आवेदन किया। सिलाई के

प्रति उसके आकर्षण से उसका मन कहीं और नहीं लगता था। सिलाई के प्रति उसकी जिज्ञासा देख सम्बन्धियों द्वारा उसे प्रशिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी गई। संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में मोनिका ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। कम निवेश में स्वयं का उद्यम स्थापित कर उसने कार्य करना शुरू करा। कौशल एवं व्यवहार के आधार पर कार्य में सफलता मिलने लगी।

सीमित संसाधन ओर अवसरों में मोनिका ने अपने भीतर पल रहे सपनों को पूरा करने के लिये प्रयासरत है। छोटी–छोटी चीजों के लिये दूसरों पर निर्भर रहने वाली मोनिका आज दूसरो के लिये उम्मीद है। अपने उद्यम को बढ़ाते हुये उसने 2500 रू0 महीने पर एक दुकान किराये पर ली है जिसमें वह स्वयं के साथ दो अन्य कर्मचारियों के सहयोग से कार्य कर रही है। कपड़ों को अलग अलग आकार देने वाली मोनिका आज ना केवल अपनी अजिविका का श्रोत स्वयं है बल्कि दो अन्य लोगो के रोजगार का साधन भी है।

10–15 हजार रू0 कमाने वाली मोनिका घर की सारी जिम्मेदारियाँ निभाती है। अपनी माँ को बेहतर जिन्दगी देने का सपना साकार करने में लगी मोनिका के लिये सफलता के मायने बेरोजगारी को खत्म कर सबको आत्म निर्भ बनाने से है।

एंजेल लेडीज़ बुटीक से काम करने वाली मोनिका के लिये परिधानों की यह दुनिया सम्भावना और सपनों की दुनिया जिसे वह प्राप्त कौशल के आधार पर सफलता की राह पर अग्रसर है।

नगमा

नाम	श्रीमति नगमा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9837259979
इकाई का नाम	नगमा सिलाई सेन्टर
पता	(घर से संचालित) मोथरोवाला, देहरादून
स्थापना वर्ष	2015
कुल लागत	रू0 40,000/–(चालिस हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 3,00,000/–(तीन लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

शहरों और गाँवों की जिन्दगी से जुदा बंजारे बन खानाबदोश जिन्दगी जी कर सपेरे समुदाय के लोग अपनी जिन्दगी जीते थे।

वन्य जीव अधिनियम में आये बदलाव ने इन सपेरा समुदाय के मुख्य व्यवसाय से उनको जुदा कर दिया। विभिन्न प्रकार के दैनिक कार्यों से अजीविका के संघर्ष करते इस समुदाय की नगमा ने न स्वयं स्वरोजगार हासिल किया है, बल्कि औरों के लिये भी

रोजगार उपलब्ध करा रही है। उत्तराखण्ड के जनपद देहरादून में मोथरोवाला नामक स्थान पर है प्रभू निवास, सपेरा बस्ती, सन् 1974 में स्थापित इस बस्ती में मुख्य व्यवसाय कबाड़ का है। बस्ती की महिलाएं, पुरूष और बच्चे कबाड़ में अपना आज और कल देखते हैं।

इन्ही के बीच से निकलकर आई नगमा आज अपनी सिलाई दक्षता के लिये समुचे क्षेत्र में जानी पहचानी जाती है। संस्थान द्वारा चलाये गये फैशन डिजाइनिंग के प्रशिक्षण कार्यक्रम से शुरू कर आज नगमा बस्ती की अन्य महिलाओं को भी रोजगार प्रदान कर रही है। अपने कुशल व्यवहार और कार्य की निपुणता से नगमा घर से ही कार्य कर महिने के 9,000/– (नौ हजार) रूपये मात्र मासिक कमा लेती है।

पुराने वक्त को याद कर नगमा के आँखों में आँसू तो आते है, मगर वह कहती है, जिसका खुद पर विश्वास होता है निराशा और असफलता उससे दूर ही रहती है। साँपो से कबाड़ और अब कबाड़ से परिधान तक का सफर सत्त रूप से चल रहा है।

मेहनत रंग लाई

नाम	श्री नासिर अहमद
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9058148989
इकाई का नाम	दून फैब्रिकेशन
पता	डोईवाला, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 50,000/–(पचास हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 9,000,00/–(नौ लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	05 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

एक जैसे हालातों में भी परिणामों में विभिन्नता देखी जाती है जिसका मूल कारण हालातों को निखारने के लिये हमारे द्वारा किये जा रहे प्रयास होते है। जों हमारी सफलता और असफलता को निर्धारित करते हैं।

तीन भाइयों में सबसे छोटे नासिर अहमद का बचपन पिता के प्यार की छाँव से दूर संघर्षों की धूप में गुजरा। दैनिक मजदूरी करने वाले पिता का इन्तकाल बीस साल पहले हो गया था। तीन बेटे और तीन बेटियों के भरण–पोषण की जिम्मेदारी माँ ने मजदूरी कर निभाई। बढ़ते समय के साथ

दोनो भाइयों ने भी घर के गुजर बसर के लिये माँ का साथ देने लगे। संसाधनों के अभाव में शिक्षा का बेहतर स्तर नहीं मिल पाया पर वक्त से बेहतर गुरू कोई नहीं होता और उस ही वक्त से नासिर ने समझ लिया था कि जीने के लिये कमाना बहुत जरूरी है और कमाने के लिये काम का होना बहुत जरूरी है।

वैल्डिंग की एक दुकान पर उसने सहायक के तौर पर काम करना शुरू करा। पैसे ना के बराबर मिलते थे पर काम सीखने की उम्मीद के साथ वक्त आगे बढ़ रहा था। घर के नजदीक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम को अवसर के तौर पर लेते हुये प्रशिक्षण प्राप्त किया जिसमें मिले ज्ञान और आत्मविश्वास से नासिर ने अपना उद्यम स्थापित किया।

बचपन से ही उसने अपने पूरे परिवार को दूसरों से काम मांगते हुये देखा था। खुद भी नौकरी के लिये दूसरों पर निर्भर था पर आज नासिर ना केवल खुद के लिये बल्कि औरों के लिये भी रोजगार का एक साधन है।

25–30 हजार रू0 मासिक कमाने वाले नासिर के उद्यम में 6 अन्य कर्मचारी भी काम करते हैं। अपने हुनर और मार्गदर्शन से वह बेहतर हो रहा है। केवल अपने लिये काम करना और सोचना पशु प्रवर्ती कहलाती है। मनुष्य धर्म स्वयं के साथ समाज को भी बेहतर करना सिखाता है। जैसे जिन्दगी की हम कल्पना करते हैं वैसे ही जिन्दगी हम जी पाते है। केवल अपनी मेहनत, कौशल और समय से लिये गये निर्णयों से यह सम्भव है।

स्वाद (खाद्य पदार्थों) से पायी समृद्धि

नाम	श्रीमती सरिता नेगी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9897306493
इकाई का नाम	एस0आर0आर0 प्रोडक्टस
पता	अजबपुर, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 20,000/– (बीस हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 5,00,000/–(पांच लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	उत्पादन

नारी शक्ति अपार है अगर वह कुछ करने पर आये तो दुनिया की कोई भी ताकत उसके हौसलों को बाँध नहीं सकती। कुछ ऐसी ही कहानी है सरिता नेगी की भी। विज्ञान में स्नातक और समाज कार्य में स्नातकोत्तर होने के साथ साथ नर्सिंग की डिप्लोमा धारक सरिता नेगी, देहरादून के अजबपुर कला में पति तथा दो बच्चो संग रहती है। परिवार की आय का एकमात्र स्त्रोत पति की मोटर वक्रशॉप थी। बच्चों की शिक्षा और परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिऐ केवल वर्कशॉप पर निर्भर नहीं रहा गया। पति के सहयोग एवं बच्चों के

बेहतर भविष्य के लिये सरिता ने नौकरी करने की ठानी पर कहीं योग्यता अनुसार कार्य नहीं मिला। सरिता के लगातार प्रयासों से उसे मिल रही असफलताओं ने उसे तोड़कर रख दिया था। परन्तु आज सरिता खुश ही नहीं स्वावलंबी भी है। जीवन में आये इस सकारात्मक परिवर्तन के बारे में बताते हुए वह कहती है।

संस्थान द्वारा हमारे घर के पास प्रशिक्षण करवाया गया। मुझे मेरे परिचित के द्वारा इस प्रशिक्षण के बारे में पता चला व उन्होने मुझे इस अवसर का लाभ उठाने की सलाह दी। यह प्रशिक्षण निःशुल्क था। मेरे पति ने भी इसके लिये हामी भर दी। पहले तो हमने इस बात को वाकई मजाक में लिया किन्तु कुछ दिनों के बाद मुझे एहसास हुआ कि यही वह राह और दिशा है जिसकी मुझे तलाश थी। इस प्रशिक्षण में मैने लागत निर्धारण, विपणन, संकट वहन क्षमता, ग्राहक सम्बन्ध, विपणन कला एवं सम्प्रेषण कौशल जैसे तथ्यों से रूबरू हुई। अपने पैरों पर खड़े होना व अपने आत्म सम्मान को बनाये रखना सभी महिलाओं के लिये जरूरी होता है। इस प्रशिक्षण ने मेरे अन्दर नई आशाओं/उम्मीदों को जगा दिया था जिसके कारण मेरे आत्म विश्वास को बल मिल रहा था।

यह प्रशिक्षण अत्यन्त रोचक एवं शिक्षा पद था जिसने मुझे एक आशावादी महिला के रूप में परिवर्तित कर दिया। प्रशिक्षण के दौरान रोजाना उपयोग में आने वाले खाद्य पदार्थ जिन्हे हम कम पूँजी में भी शुरू कर सकते हैं। खाद्य पदार्थों को गुणवत्ता पूर्वक बनाने की विधियां (तरीके) बहुत ही रोचक रहे। हमें मन लगाकर सीखना चाहिए। मुझे पहले से अचार, खाना बनाने का शौक था। इस प्रशिक्षण ने मुझे अपने शौक को बाहर दिखाने का मौका दिया। प्रशिक्षण सफलता पूर्वक समाप्त होने के पश्चात् हम तीन महिलाओं रजंना धनाई, प्रेमलता नेगी, मैं स्वयं सरिता नेगी हमने काम शुरू किया। हम लोगो ने रू0 5,000/– (पांच हजार) रूपये लगाकर काम शुरू किया और फिर हमारा काम धीरे–धीरे करके ठीक चल पड़ा। हमने अपने उत्पाद का नाम एस0आर0आर0 ग्रुप रखा। हमने जो भी कमाया उसका ½ हिस्सा काम के लिए कच्चा सामान जोड़ा और ½ हिस्से का खुद मे बराबर बंटवारा किया।

शुरूआत में काम में बहुत समय देना पड़ता था जिससे घर परिवार को समय देना व उनकी देखरेख करने में दिक्कत होती थी। मगर धीरे–धीरे हमने सभी कुछ का प्रबन्धन कर दिया। हमने अपने काम का रजिस्ट्रेशन नहीं करवाया क्योंकि हम पहले कार्य की स्थिति देखना चाहते हैं। मगर अब हम हमारा भविष्य में अपने काम को बढ़ाने की सोच रहे। हमारा महीने का 40–50 हजार का लेन–देन

होता है। एक महिला लगभग कभी–कभी 8–10 हजार कमा लेती है। हम जितना काम करते है उतना कमा लेते है इससे हमे अपने घर देखने और चलाने में काफी सहायता मिलती है। और अब हम सन्तुष्ट है हमारे बच्चे अभी छोटे–छोटे है उन्हें समय देना भी जरूरी है। क्योंकि महिलाओं के कंधो पर घर की जिम्मेदारी का बोझ ज्यादा होता है। इसलिए हम इस काम को आगे ऊँचे स्तर पर ले जायेगे। हम अपने उत्पाद में 8–10 प्रकार के अचार, टमाटर का सौस, जैम, मुरब्बा, कैन्डी, आदि बनाते है। और कुछ खास उत्पाद जो महंगे होते है, उन्हे आर्डर पर ही बनाते है। हमारे उत्पाद बुरांस, पुदीना, माल्टा, का स्क्वैश भी बनाते है। हम देहरादून व आस–पास के स्कूलों में भी अपने उत्पाद को बेच रहे हैं। अपने पैरों पर खड़ा होना और स्वावलम्बी बनने का महत्व क्या होता है यह मुझे आज समझ आया। मुझे आज गर्व है कि हमारे द्वारा तैयार उत्पाद जैसे जैम, जैली, आचार, जूस इत्यादि आस–पास तक नहीं बल्कि पूरे उत्तराखण्ड में पहुँचा रही हूँ।

मैं अपना उद्यम स्थापित करने में संस्थान का बहुत बड़ा योगदान समझती हूँ क्योंकि मैं यदि प्रशिक्षण में प्रतिभाग न करती तो आज एक महिला से उद्यमी महिला न बन पाती।

ये है हमारी कहानी

नाम	श्रीमती रंजना धनाई
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9897306493
इकाई का नाम	घर से संचालित
पता	अजबपुर, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 20,000/– (बीस हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 5,00,000/–(पांच लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	उत्पादन

जीवन की कठिनतम परिस्थितियों में भी साहस एवं धैर्य बनाये रखने वाला व्यक्ति निश्चय ही सफलता के शिखर को छूता है। मेरा दृष्टिकोण भी कुछ ऐसा ही था और इस ही कारण मैं जीवन की असीम चुनौतियों का सामना करती गई। मैने अपने जीवन में कई उतार चढ़ाव देखे जिसमें मैने कई बार असफलताओं को भी देखा। मैं रंजना धनाई अजबपुर कलॉ, देहरादून में रहती हूं । मेरे पति का नाम श्री जगमोहन धनई है। मेरे पति प्राइवेट काम करते हैं और मेरे दो बच्चे है। दोनों स्कूल जाते है। बच्चों के स्कूल जाने के बाद में खाली समय घर पर ही रहती थी। मेरा सारा समय व्यर्थ की बातो में ही बीत जाता था। मुझे किसी वस्तु

विषय की भी अधिक जानकारी नहीं थी। व्यवसायिक जानकारी न होने के कारण भी मैं स्वयं का कार्य आरम्भ नहीं कर पा रही थी। इसी बीच मुझे अपने परिचितों द्वारा राष्ट्रीय उद्यमिता एवं लघु व्यवसाय विकास संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। प्रशिक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी से मेरे व्यवहार में भारी परिवर्तन आया और मैं स्वयं का कारोबार करने के रास्ते में चल पड़ी।

इस प्रशिक्षण ने मेरे खोये हुये उत्साह को फिर से लौटा दिया और मुझे उद्यमशीलता के गुणो से अवगत कराया। प्रशिक्षण के दौरान तकनीकी ज्ञान के साथ–साथ व्यवसाय सम्बन्धी गुण भी सीखे। इस प्रशिक्षण ने चमत्कारी रूप से मेरे जीवन और कार्य के प्रति मेरी विचारधारा का बदल के रख दिया। प्रशिक्षण समाप्त होने पर मैने अपने कौशल द्वारा अपने व्यवसाय को आरम्भ करने व सफल बनाने की ठान ली। प्रशिक्षण के दौरान जहाँ एक ओर मैने प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त की, वहीं व्यवहारिक ज्ञान से मेरी मनोस्थिति में भारी परिवर्तन आ गया। मेरे अन्दर न केवल जीवन में आने वाली कठिनाइयों, परेशानियों का सामना करने का आत्म विश्वास पैदा हुआ। अपना स्वरोजगार स्थापित कर अच्छे भविष्य की राह बनाने की दृढ़ता मेरे अन्दर प्रशिक्षण के दौरान ही पैदा हो गयी। प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त अनुभव का उपयोग करते हुये मैने स्वयं में कौशल को पूरी तरह से मैने आत्म सात् कर लिया था। व्यवसाय की अनेक बारीकियों को समझा।

एक बार हमारे क्षेत्र अजबपुर कलां में संस्थान ने ट्रेनिंग करवाई। हमने वहां जाकर उस ट्रेनिंग में हिस्सा लिया और हमने ट्रेनिंग की और उसके बाद अपना काम शुरू किया, और धीरे–धीरे इस काम को बढ़ाया इससे हमें पहले दो हजार की आमदनी हुई जब हमें वो दो हजार रूपये मिले तो ऐसा लगा मानो मुझे दो हजार रूपय नहीं बल्की बीस हजार रूपये मिले है।

मैं उस समय बहुत खुश थी उन दो हजार रूपये को देखकर कि कुछ तो हमने कमाया है। इस काम से हमें एक फायदा यह भी हुआ कि लोगों से मिलना होता है और बहुत जानकारियॉ भी मिलती है। मै संस्थान का बहुत–बहुत धन्यवाद करती हूँ कि इन्होने हमारे यहां ट्रेनिंग करवाकर हमारी तरह की कई महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया। हम लोगों के उद्यम का नाम हमने एस0 आर0आर0 प्रोडक्टस के नाम पर रखा है। इस समय मैं महीने में 8–10 हजार रूपये महीना कमा लेती हूं। इस पैसे को मैं अपने बच्चों की पढ़ाई में खर्च करती हूं। इस काम को करने से ऐसा लगता है मानों हम भी कुछ कर सकते हैं। और इस काम को करने से एक अलग तरह का जोश उत्पन्न होता है और इस काम को हम धीरे–धीरे उन्नति की और बढ़ायेंगे।

हमें आत्मनिर्भर बनाने के लिए मैं संस्थान का बहुत–बहुत धन्यवाद करती हूँ। इस दौरान मैं ज्ञान मनोबल और आशावाद के एक नये संसार में थी। मैं संस्थान द्वारा दी गयी प्रशिक्षण की अत्यंत सराहना एवं प्रशन्सा करती हूँ। प्रशिक्षण के दौरान अन्य प्रशिक्षार्थियों के साथ बैठ कर सीखना मुझे मेरे बचपन की पाठशाला की ओर ले गया। अपनी सफलता के लिये मैं संस्थान के प्रति आभारी हूँ। मेरे शब्दों में मैं बस इतना ही कहना चाहूँगी कि, ''मैं जो कुछ भी हूँ संस्थान की वजह से हूँ।'' आज के इस दौर में जहाँ एक ओर महिलाओं को केवल एक गृहणी तक ही सीमित रखा जाता है वहीं कुछ क्षेत्रों में महिलाओ ने अपने परिवार के साथ साथ अपने देश का मान भी बढ़ाया है। मेरे भविष्य को समृद्ध बनाने के लिये व मुझे सफलता दिलाने में मेरा प्रशिक्षण ही मेरी सफलता है।

मिट्टी बनी सोना

नाम	श्री दयाल सिंह
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8475836539
इकाई का नाम	क्यारा
पता	टिहरी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	2012
कुल लागत	रू0 1,50,000/–(एक लाख पचास हजार रूपये मात्र)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,20,,000/–(सात लाख बीस हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	कृषि क्षेत्र

एक सच्चा साहसी कभी निराश नहीं होता है, और दृढ़ निश्चय और इच्छा शक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों को भी सहन करने का सार्मथ्य रखते हैं। हर मनुष्य के जीवन में कठिन से कठिन समय आता है। यदि ऐसे समय में हम धैर्य एवं विवेक से काम ले तो सफलता सुनिश्चित है। अधिक निर्धनता के कारण मैं पढ़ नहीं पाया व गाँव के परिपेक्ष में जन्म लेने के कारण

मैं आज के इस भौतिक जरूरतो एवं संसाधनों के अभाव में रहा।

मैं दयाल सिंह पुत्र श्री हरनाम सिंह निवासी ग्राम क्यारा (धनोल्टी) का रहने वाला हूँ। मेरे पास बहुत थोड़ी बंजर जमीन के एक टुकड़े के सिवा कुछ नहीं था। मेरे मन में अपनी जमीन के प्रति स्नेह भाव और लगाव था। क्योंकि मैं जमीन से जुड़ा हुआ एक छोटा सा किसान था। मेरे द्वारा अपने परिवार के लिये भौतिक एवं दैनिक आवश्यकताओं को पूरा कर पाने में असमर्थ था। अपने क्षेत्र के अन्य किसानों की तरह मेरे मन में भी आजीविका कमाने हेतु शहर जाकर बचने का विचार कई बार आया, किन्तु मैने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि मैं अपनी बंजर जमीन को उपजाऊँ बनाऊँगा । मेरा निश्चय अटल था कि किसी भी हालात में मुझे अपने व अपने परिवार के प्रति आजीविका जुटाऊँगा। मैने जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते हुये जीवन का लक्ष्य निर्धारण करते हुये अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुये निरन्तर प्रयास किया। और फिर मैने जीवन को खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में उतार दिया। शुरू में मुझे इस क्षेत्र के ज्ञान का अभाव था इसलिए मुझे इस क्षेत्र में काफी चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

मै सबसे पहले 10वीं पास करके अपनी खेती करने लगा, जहां पर आलू, मटर, अदरक, धनिया, बुरांस, खुमानी, आदि बड़ी मात्रा मै पैदावार होती है। फिर मैंने प्रशिक्षण लेकर कच्चे माल को प्रिर्जव करना सीखा, और धीरे–धीरे संस्थाओं को देकर अपनी आय को बढ़ाकर एक लाख तक पहुंचाया। इस कार्य को में अपने घर से ही चलाता हुं मुझे कई प्रकार की समस्या भी उत्पन होती है। मेरे पास मशीनें भी नहीं है जिसके लिए मुझे आप का सहयोग चाहिए जिसके लिए मै आपका आभारी रहूंगा ।

एक दिन मुझे संस्थान द्वारा संचालित निःशुल्क प्रशिक्षण की जानकारी प्राप्त हुई। फिर हमारे गावं में प्रशिक्षण सन 2011 मे सफलता पूर्वक चला। इस प्रशिक्षण ने मुझे आत्म निर्भर बनने के लिये प्रेरित किया। इस प्रशिक्षण के दौरान मेरा जीवन ज्ञान, कौशल और आशावाद से परिपूर्ण हो गया।

विषय सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के साथ साथ नया काम शुरू करने व उसके विपणन की बारीकियों को भी समझा। इस प्रशिक्षण ने मुझे जीवन में सफल होने की योग्यता एवं आत्म बल प्रदान किया। जिसमें मैंने बहुत कुछ सीखा और फिर मैनें बुरांस, खुमानी, सेब का पल्प निकालना शुरू किया। इस कार्य को मैं अपने स्थान बदवाला (धनोल्टी) में कर रहा हुं और बाद बुरांस, खुमानी, सेब का पल्प निकालकर हित समिति संस्था और जलागम, रेडजिल हर्बल और फूड–प्रोडक्ट को भारी मांग में पल्प उपलब्ध करा रहा हूँ। जिसमें मैंने अपनी आमदनी और सीजन में अदरक, आलू, मटर का

व्यवसाय करता हूँ वैसे मेरे घर की आर्थिक स्थिती बहुत खराब है, लेकिन फूड प्रोसेसिंग का प्रशिक्षण लेकर मेरे घर की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है।

मैं पहले खेती करके अपने परिवार का पालन पोषण करता था, और कच्चे माल की मन्डी में सही कीमत नही मिल पाती थी, जिसमें मुझे सिर्फ सीजन में 20,000/– (बीस हजार) रूपये मात्र रूपये तक ही आय होती थी, और पूरे वर्ष का खर्चा इसी से चलता था। आज मैं 30,000/– (तीस हजार) रूपये महीने के कमा लेता हूँ। तहे दिल से उन सभी लोगों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होने विपदा के समय मेरा साथ नहीं छोड़ा और मुझे सफलता के शिखर तक पहुँचाया। संस्थान से मिले इस अवसर के लिये मैं संस्थान का सदैव आभारी रहूँगा क्योंकि इस प्रशिक्षण के माध्यम से ही आज मैं इस मुकाम तक पहुँच पाया हूँ।

सम्भावनायें

नाम	श्री प्रभाकर भाकुनी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	
इकाई का नाम	रोज़ वाटर प्लांट
पता	अल्मोड़ा
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 6,000,00/– (छः लाख रूपये मात्र) (पी0एम0ई0जी0पी0 से सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,20,000/–(सात लाख बीस हजार रूपये मात्र)
कर्मचारियों की संख्या	05 (पूर्णकालिक), 04 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	उत्पादन क्षेत्र

प्रकृति से बड़ा रचयिता कोई नहीं, नदी, पहाड़ पत्थर,. ऋतुऐं और वनस्पति न केवल इस धरा को सुन्दर बनाती है। बल्कि जीवनदायनी भी है। खूबसूरत फूल और उनकी खुशबु मन में ताजगी, उमंग, उल्लास और प्रेम का भाव तो पैदा करती है। साथ ही साथ एक बड़े व्यावसायिक विकल्प के तौर पर भी स्थापित हो रहा है।

उतराखण्ड़ के खूबसूरत जनपद अल्मोड़ा के प्रभाकर सिंह भावुनी ने अपनी पहाड़ की भूमि रोजगार की सम्भावनाए उजागर कर पहाड़ में समृद्ध, सुखी और सम्पन्न जीवन जीने का उदाहरण पेश

किया है। पिता तथा सभी भाई भारतीय सैना में सेवारत थे। जिससे सरकारी नौकरी का दवाब प्रभाकर के ऊपर अधिक था, जिस कारण 12वीं तक शिक्षा अल्मोड़ा से ग्रहण करनें के पश्चात् उन्होंने स्टेनोग्राफर का डिप्लोमा प्राप्त किया।

प्रभाकर नौकरी की तलाश में निकल पड़ा नौकरी करी भी पर मन न लग पाया इस अधेड़ बुन में वह वापस घर लौट आया। विचारहीन परिस्थति में बंजर होते खेतों को देख उन्हें उपजाऊ बनाकर उसमें अपना भविष्य तलाशनें का इरादा उसने कर लिया। संस्थान से प्राप्त प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के आधार पर प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत छः लाख रूपये का ऋण लेकर कार्य करना शुरू किया और अस्तित्व में आया रोज वाटर प्लान्ट।

फूलो की बड़ती खपत से कार्य बड़ता गया। आज वर्तमान में एक साल पूरा होने पर रोज वाटर प्लान्ट का टर्नओवर 3,00,000/—(तीन लाख) रूपये मात्र पहुॅच गया है। जिसमें प्रभाकर के साथ अन्य लोगों को रोजगार का अवसर प्रदान हुआ है। महकते फूलों से प्रभाकर अपना तथा अपने साथ औरों का भी भविश्य महका रहा है। सम्भावनाओं का सफलता में बदलनें का हुनर सीख आज प्रभाकर पहाड़ों में खेती के प्रति हो रहे आधुनिक और जैविक बदलाव के प्रति लोगों को जागरूक कर सफलता का मंत्र बांट रहे है।

कोशिश

नाम	श्रीमती फूल शमा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	7500562870
इकाई का नाम	न्यू लुक ब्यटी पार्लर
पता	भण्डारी बाग, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 1,50,000/–(एक लाख पचास हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,00,000/–(छः लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

महात्मा गाँधी के अनुसार शक्ति शारीरिक बल से नही आती बल्कि अदम्य इच्छा शक्ति से प्राप्त होती है। इस कहानी की सूत्रधार फूल शमा ने इस वाक्य को अपने साहस एवं प्रतिबद्धता से सिद्ध कर दिखाया हैं। इनका जीवन निर्धनता एवं कठिनाइयों से भरा हुआ था किन्तु विपरीत हालातों को अवसर में बदलने का हुनर एक उद्यमी में होता है। इस बात को सत्य करके दिखाया फूल शमा ने और आज आत्म निर्भर होकर न केवल स्वयं के लिऐ बल्कि सभी के लिऐ प्रेरणा है।

मैं फूल शमा आज आपको अपने जीवन के विषय में बताने जा रही हूँ। जिन्दगी ने बहुत कुछ दिया भी और लिया भी। शादी से पहले घर की

कुछ समस्याओं के कारण पढ़ाई पूरी नहीं कर पायी। फिर घर वालों ने कम उम्र में ही शादी कर दी। शादी के बाद जिन्दगी में कुछ खुशी आयी पर वो भी ज्यादा दिन तक टिक नहीं पायी। शायद खुदा को कुछ और ही मंजूर था। शादी के एक साल के बाद मुझे एक बेटा हुआ। जिन्दगी बहुत अच्छी गुजर रही थी पर अचानक वक्त ने करवट बदली। अभी मेरी शादी को दो साल ही पूरे हुऐ थे कि मेरे पति की अचानक हार्ट अटैक से मौत हो गयी। मानो जिन्दगी में जीने के लिऐ कुछ भी नही बचा था। पर अपने एक साल के बेटे को देखते हुऐ मैने जीने की कोशिश की। जिन्दगी में बहुत से उतार चढ़ाव आये पर कोई ऐसा सहारा नहीं मिला जिससे मैं अपने और अपने बेटे के लिऐ कुछ कर पाऊँ। देखते–देखते तीन साल बीत गये। तीन साल के बाद मुझे एक आशा की किरण नजर आयी। मेरी मुलाकात अरूण सर से हुई जिन्होने मुझे

संस्थान के बारे में बताया। संस्थान की स्कीम के विषय को जानने के बाद मेरे मन में इच्छा जागी की मैं संस्थान के माध्यम से अपने और अपने बेटे का पालन पोषण कर सकूँ ''डूबते को तिनके का सहारा ही बहुत'' होता है। संस्थान के माध्यम से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैने संस्थान के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किया और पूरा प्रशिक्षण सीखने के बाद मैने अपनी बहन के साथ मिलकर टर्नर रोड पर एक छोटा सा न्यू लुक ब्यूटी पार्लर खोला। जिससे महीने की आय कम से कम रू0 30,000/– तक हो जाती है। जिसे हम तीनों आपस में बाँट कर अपना खर्च चलाते हैं। अब मैं अपनी कमाई से अपना और अपने बेटे का भरण–पोषण करती हूँ और अपने बेटे को अच्छी शिक्षा देने की कोशिश कर रही हूँ। आगे मैं यह उम्मीद करती हूँ कि मैं अपने बेटे को अच्छी शिक्षा देने के साथ साथ उसको एक अच्छा कामयाब इन्सान बना सकूँ। मैं शुक्र गुजार हूँ संस्थान की जिनकी वजह से मुझे अपनी जिन्दगी जीने का मौका मिला। मुझे ये पार्लर किये हुऐ पाँच महीने हो चुके हैं। मैं अपनी कुछ धनराशि प्रतिमाह अपने खाते में जमा करती हूँ। मेरा खाता सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया में है। संस्थान न केवल मेरे लिए अपितु मेरे जैसी हजारों महिलाओं के लिए एक उम्मीद है, एक ऐसी उम्मीद जो सपनों को सच करती, जिन्दगी को उसके मकसद से मिलाती है। इस प्रशिक्षण को मै अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव मानती हूं।

एक कदम और बस, एक कदम

नाम	श्रीमती प्रेमलता नेगी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9760060119
इकाई का नाम	एस0आर0आर प्रोडक्टस
पता	अजबपुर, देहरादून
स्थापना वर्ष	
कुल लागत	रू0 20,000/–(बीस हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 5,00,000/–(पांच लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	उत्पादन

मेरा नाम प्रेमलता नेगी है। मेरी जन्मभूमि उत्तराखण्ड है। उत्तराखण्ड राज्य एक पहाड़ी राज्य है जिसमें प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बराबर बना रहता है। अपनी आजीविका व पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन हेतु आजीविका की तलाश में यह मेरे सफर की कहानी है। समाज में हर कदम पर हर लड़की को अपना रास्ता खुद तलाशना होता है कई बार यही सोचकर मैं यह सोचती थी कि कैसे करूँगी, क्या करूँगी, हम गाँव की लड़कियाँ कभी जँगलों में घास लकड़ी के लिए दौड़ती, कभी खेत खलिहानों में, एक महिला की जिन्दगी होती है। मुझे

हमेशा इसी बात का इन्तजार था कि ना जाने कब मैं अपनी जिन्दगी में अपनी मन्जिल पा सकूँगी। मूलतः मेरा जीवन इन्ही सब मुश्किलों में बीता।

मैं अजबपुर की रहने वाली हूँ। मैं एक गृहणी हूँ। मैने समाजशास्त्र से एम0ए0 किया है। मेरे दो बेटे है। मेरे पति दुकान चलाते हैं। जिससे हमारा घर चलता है।

मैं अपनीं पति का हाथ बंटाने के लिए कुछ करना चाहती थी। इसके लिए मार्ग भी मुझे ही ढूंढना था और उसके लिए प्रयत्न भी मुझे ही करने थे, जो मैंने किये। इस तरह अच्छे–बुरे दिन गुज़र रहे थे।एक दिन मुझे संस्थान के द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम का पता चला। मुझे इसे सीखने की जिज्ञासा होने लगी। उसके बाद मैने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसके बाद मैं और मेरी दो साथी ने इस काम को करने की सोची। हम तीनों (सरिता, रन्जू, प्रेमलता) ने मिलकर अपना काम शुरू किया।

जिसमें हम लोग अपना काम स्वयं करते हैं। इस काम को खोलकर हमने अपनी आमदनी में बढ़ोत्तरी की है। अब मेरे परिवार में मेरे पति की कमाई के साथ साथ मेरी कमाई भी जुड़ गयी है। जिससे मेरा परिवार खुशहाल है। अपने काम से मैं और मेरा परिवार बहुत खुश है। हमारे व्यवसाय में हम आठ नौ प्रकार के अचार व जैम, सॉस, मुरब्बा, कैन्डी आदि बनाते हैं। हम घरों में जाकर भी अपना बनाया हुआ सामान बेचते जिससे हमें पाँच से छः हजार रूपये महीने की आमदनी हो जाती है अब मैं अपनी आयु से कहीं अधिक समझदार और स्वाभिमानी हो चुकीं हूँ। अपने परिवार की आर्थिक मदद करने के इरादे से उन्होंने उद्यम को अपनाया। यह उद्यम मेरी आजीविका बढाने का बड़ा माध्यम बन चुका है। जिससे मै मासिक 10–12 हजार रूपये कमा लेती हूँ। जिससे मेरे आत्म बल को भी शक्ति मिलती है और मैं भविष्य में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित होती हूँ।

शताक्षी तक का सफर

नाम	श्रीमती पुष्पा शर्मा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9634347276
इकाई का नाम	शताक्षी ग्रुप ऑफ हैण्डीक्राफ्ट
पता	
स्थापना वर्ष	2009
कुल लागत	रू0 75,000/–(पिच्चत्तर हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 8,40,000/–(आठ लाख चालिस हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	04 (पूर्णकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

अपने सपनों को बुनना एवं उन्हें साकार करने के लिये उम्र कभी अवरोधक का काम नही करती है। इस बात को सिद्धकर दिखाया है मूल रूप से थलासू, रूद्रप्रयाग की रहने वाली पुष्पा शर्मा ने। श्रीमती पुष्पा शर्मा, आज हैन्डीक्राफ्ट से लेकर कन्फैक्सनरी तक के उत्पादों के लिये न केवल देहरादून अपितु पूरे प्रदेश में जानी एवं पहचानी जाती हैं।

श्रीमती पुष्पा का जन्म 30 दिसम्बर सन् 1968 को ग्राम क्वीली, रूद्रप्रयाग निवासी रामकृष्ण पुरोहित जी के घर पर हुआ। पिता सेना में अधिकारी थे। इसलिए शिक्षा देश के अलग–अलग शहरों

में हुई, अपना बचपन एवं किशोरावस्था में पिता की पोस्टिंग के साथ नये–नये शहरों में घूमने का मौका मिला और कहीं परम्पराओं के साथ पहनावा एवं खाने के प्रकारों की जानकारी भी मिली, जो आगे चल कर मेरे लिये उद्यम स्थापित करने में काफी मददगार साबित हुआ।

सन् 1986 में उनका विवाह लक्ष्मी चन्द्र शर्मा के साथ हुआ, पति सरकारी नौकरी में कार्यरत थे। शादी के बाद वह परिवार सहित देहरादून मे ही रहने लगी। बहुत समय के साथ परिवार भी बड़ा होता गया। उन्हें दो पुत्र हुये। पारिवारिक जिम्मेदारियों में वक्त बीत रहा था, मगर मन का उद्यमी भाव, समय के साथ साथ स्वयं कौशल सिद्ध करने को बेकरार हो रहा था।

घर से आते जाते वक्त उनकी नजर उनके घर के निकट स्थित संस्थान के क्षेत्रीय कार्यालय पर पड़ती, कई बार कार्यालय में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी के लिये वह कार्यालय मे आई, जहां उन्हें उद्यमिता विकास कार्यक्रम में प्रतिभाग करने का सुझाव दिया गया। उन्होने संस्थान से आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। अपने प्रशिक्षण के अनुभवो को बताते हुये वो कहती है कि मैंने उद्यम स्थापना विपणन, उद्यमी अभिप्रेरणा, उद्यम स्थापना जैसे कही महत्वपूर्ण सत्र कार्यक्रम में सीखे और मैने निश्चय कर लिया कि मैं अपना स्वम् का उद्यम जरूर करूंगी।

उन्होने अपने घर से ही सिलाई का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। आस–पास से उनके पास आर्डर आने लगे। मेरा काम दिन ब दिन बड़ता जा रहा था। ऐसे में उन्होनें अपनी मौहल्ला कमेटी से 25,000/–(पच्चीस हजार) रूपये का ऋण लेकर कच्चा माल एवं सिलाई मशीन (ऑटोमेटिक) विक्रय कर काम को विस्तार दिया। पति द्वारा रिटायरमेंन्ट के बाद उनके कार्य में पूरा सहयोग दिया गया। संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें उद्यम पंजीकरण के विषय में बताया गया था। जिसके आधार पर उन्होनें अपने उद्यम को शताक्षी ग्रुप ऑफ हैण्डीक्राफ्ट नाम देकर उद्योग निदेशालय से पंजीकृत किया। उनके द्वारा राज्य उद्योग विभाग के ब्रान्ड हिमाद्री में अपने उत्पादों को विक्रय एवं प्रदर्शित करने लगी। सिलाई कार्य के साथ साथ उन्होनें घर पर बिस्कुट, नमकीन, केक, पेस्ट्री आदि बनाने का कार्य भी शुरू किया है। जिसकी मांग वर्तमान समय में काफी ज्यादा है। पार्टी, घरों और सरकारी कार्यलयों में उनके उत्पादों की काफी मांग है।

आज शताक्षी ग्रुप अपने आप में इतना बड़ा बन गया है कि उसको किसी अन्य पहचान की जरूरत नहीं है। आज वह 20,000/– (बीस हजार) रूपये मासिक कमा लेती है। अपने हुनर को प्रदर्शित कर

एक अच्छी आय अर्जित करने के साथ साथ समाज में अपने हुनर से सम्मान भी पा रही है। वो कहती है कि मैने संस्थान कार्यालय में प्रशिक्षण के दौरान कक्षा में चमत्कार होते देखा है। जिसने मेरी जिन्दगी ही बदल दी। आज मुझे लगता है कि संस्थान सपनों को साकार करनें की सीढ़ी है।

सम्भावनाओं से सफलता तक

नाम	श्री रवि कुमार
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8814858514, ravikumar141410@gmail.com
इकाई का नाम	शाहबी कम्यूनिकेशनस
पता	अम्बाला शहर, हरियाण
स्थापना वर्ष	2015
कुल लागत	रू0 2,000,00/–(दो लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,500,00/–(सात लाख पांच हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

सूचना क्रांति के इस दौर में तकनीक एक बेहतर भविष्य और समृद्ध वर्तमान के विकल्प के रूप में तेजी से विकसित हो रहा है। रवि कुमार के लिये भी यह क्षेत्र सम्भावनाओं से सफलता की ओर बढ़ रहा है।

हरियाणा के एक निम्न वर्गीय परिवार में जन्में रवि का जन्म हरियाणा के अम्बाला शहर में हुआ। 10वीं तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद घर की आय के लिये नौकरी की तलाश शुरू हुई। सहायक के

पद पर काम शुरू हुआ मगर अविष्कारात्मक प्रवृति ने जिज्ञासाओं को बढ़ा दिया। कुछ अपना स्वयं का कार्य करने के लिये सत्त प्रयास हमारी सफलता का प्रतिशत बढ़ा देते हैं। रवि ने भी मित्रों से मिली जानकारी के आधार पर संस्थान द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया। मिले मार्गदर्शन और कौशल आधार पर रवि ने अपना कार्य शुरू करने का विचार बनाया। बाजार मांग और अपने कौशल के आधार पर रवि ने मोबाइल रिपेयरिंग का कार्य शुरू किया। अपने हुनर, व्यवहार, और बढती माँग से आज रवि एक बेहतर स्थिति में है। अवसर हमेशा हमारे आस पास होते हैं। उनका चयन किस प्रकार से करते हैं। यह महत्वपूर्ण है। रू0 15,000/– से 20,000/– रू0 मासिक कमाने वाले रवि एक बेहतर कल की ओर बढ़ रहा है जिसका कारण वह परिश्रम और मार्गदर्शन को मानता है। शिक्षा व्यक्तित्व विकास के लिये महत्वपूर्ण है पर कौशल हमारे एवं और सामाजिक विकास के लिये अधिक महत्वपूर्ण है।

उद्यम के माध्यम से बदली तस्वीर

नाम	श्रीमती रीना शाही
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	7500511950, reena.sahi0034@gmail.com
इकाई का नाम	क्लाउड नाइन
पता	ऋषिकेश
स्थापना वर्ष	2016
कुल लागत	रू0 1,000,00/–(एक लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 5,00,000/–(पांच लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 01 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

विन्सटन चर्चिल के अनुसार एक निराशावादी मनुष्य हर अवसर में कठिनाई देखता है, जबकि एक आशावादी कठिनाइयों में भी अवसर तलाशता है। मेरा नाम रीना शाही है। मेरे पति का नाम श्री विवके शाही है। मेरे तीन बच्चे हैं।

मैं ऋषिकेश की रहने वाली हूँ। मैं एक बहुत ही गरीब परिवार से सम्बन्ध रखती हूँ। मेरा बचपन भी सामान्य परिस्थितियों में बीता। बचपन से ही मैं आत्म निर्भर बनना चाहती थी परन्तु मौका नहीं मिल पा रहा था। बिना किसी मार्गदर्शन के मैं यहाँ– वहाँ पर भागती दौडती रही। इससे पहले मैने कहीं पर भी कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था।

इस तरह का प्रशिक्षण लेना मेरे लिए एक नया अनुभव था। इससे पहले मैं कभी भी घर से अकेले बाहर नहीं निकली थी। मैने अपनी प्रशिक्षण के पश्चात् अपने बुटीक की शुरूआत की । मैं अपने बुटिक को लेकर काफी उत्साहित थी। कहते हैं न कि दुनिया उगते सूरज को सलाम करती है। जो सगे सम्बन्धी मुझे पहले सम्मान न देते हुये अयोग्य मानते थे आज इस प्रशिक्षण के माध्यम से मेरी समाज में एक पहचान बनी है। आज लोग मुझे मेरे बुटीक क्लाउड–9 के माध्यम से जानते हैं। इस प्रशिक्षण को करने से मुझे एक नया मुकाम मिला है। शादी के पहले लड़की की पहचान उसके पिता के द्वारा, शादी के बाद उसके पति के द्वारा दर्शायी जाती है। मेरे इस काम को स्थापित करने में मेरे पति ने हमेशा मेरा सहयोग किया। मैं आज यह सोचकर बहुत खुश होती हूँ कि मैं इस प्रशिक्षण का हिस्सा बन पाई। अच्छा काम चलने से मेरी आर्थिक स्थिति सुधरी जिसकी वजह से मैं अपने परिवार और बच्चों को बेहतर परवरिश दे पा रही हूँ। मेरी महीने में रूपये 10,000 (दस हजार) रूपये तक कमा लेती हूँ।

प्रशिक्षण द्वारा अर्जित उद्यमिता विकास कार्यक्रम से मैने अपने उद्यम को भली भाँति आगे बढ़ाने में पूरी निष्ठा के साथ कार्य कर रही हूँ। महिलाओं का सशक्तीकरण तथा सकारात्मक कार्यवाही ने उद्यमिता व्यवसाय को सहारा देने वाले खम्भे हैं तथा संस्थान के द्वारा मेरी जैसी महिलाओं के जीवन को छुआ व रूपांतरित किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम ने मुझे आत्मविश्वास हासिल करने में और अपनी झिझक पर काबू पाने में मदद की। कौशल विकास के प्रयास ने न केवल सहभागियों का आत्मविश्वास बढ़ाया बल्कि उन्हे उद्यमिता की राह मे चलना भी सिखाया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल होने के बाद मैने बजट बनाने और ग्राहकों के साथ संवाद करने जैसी चीजें भी सीखीं। आज मैं अपने अन्दर आत्म विश्वास पाता हूँ और अपना व्यापार स्वयं करने में सक्षम हूँ।

बढ़ते कदम

नाम	श्रीमती रेखा सजवान
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8958122228, rekhasajwan83@gmail.com
इकाई का नाम	वीएलसी ब्यूटी पार्लर
पता	चम्बा, टिहरी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 6,000,00/–(छः लाख) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी0 द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,20,000/–(सात लाख बीस हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

प्राकृतिक सौन्दर्य की अनूठी सौगात खुद में समेटे उत्तराखण्ड भारत का एक छोटा पर्वतीय राज्य है। ऊँचे–ऊँचे हिम शिखरों और गंगा जमुना तहजीब के उदघोषक के रूप में जाने एवं पहचाने जाने वाले इस राज्य का एक खूबसूरत पहाड़ी कस्बा है ''चम्बा''। अपने प्राकृतिक खूबसूरती और पौराणिक इतिहास के लिये जाने पहचाने वाले टिहरी जनपद के इस क्षेत्र जहाँ रोजगार की सम्भावनाए ंना के बराबर है ऐसे हालातों में रेखा सजवाण ने अपना उद्यम स्थापित कर न केवल अपने पैरो पर खड़ी हुई बल्कि औरों के लिये एक मिसाल है।

एक व्यवसायी श्री नरेन्द्र सिंह सजवाण के घर जन्मी रेखा ने स्नातकोत्तर तक शिक्षा चम्बा से ही ग्रहण करी। स्वछंद विचारों वाली रेखा पिता के व्यवसाय से बचपन से ही प्रेरित थी। जिस कारण उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी उसका मन नौकरी से ज्यादा स्वयं के कारोबार की संभावनाओं को तलाशता रहता। वर्ष 2013 में स्वयं सहायता समूह के गठन पर आधारित कार्यक्रम में रेखा ने प्रतिभाग किया। उद्यमी विचारों को प्रशिक्षण के माध्यम से वास्तविक पटल पर लाकर अपने सपने को सच करने का अवसर रेखा को मिला। परिवार के सहयोग से और स्वयं के विश्वास से रेखा ने प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम जिसकी जानकारी प्रशिक्षण के दौरान प्राप्त हुई थी के माध्यम से पाँच लाख रूपये के ऋण के लिये आवेदन किया। ऋण स्वीकृति के बाद रेखा ने अपना स्वयं का पार्लर स्थापित किया जिसमें उसने चार अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान किया। आज अपने काम से रेखा 15–20 हजार रूपये महीना कमाने के साथ–साथ और चार लोगों के रोजगार का भी साधन है।

सपने देखना और उन्हे जीना जैसी मिसालों को रेखा ने अपनी कड़ी मेहनत हुनर और दूरदृष्टिता से सच साबित कर पहाड़ में पलायन जैसे चिन्तनीय विषय के उत्तर के रूप में खुद को स्थापित किया है। औरों के चेहरे पर चमक लाकर खुद को मिलने वाली सन्तुष्टि और दूसरों से मिलने वाले विश्वास के साथ रेखा के कदम कामयाबी की सीढ़ी चढ़ रहे हैं।

स्वरोजगार की ओर

नाम	कु0 रूकमणी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	7533901394
इकाई का नाम	गौड़ ब्यूटी पार्लर
पता	ग्राम–खेड़ा, उद्यमसिंह नगर
स्थापना वर्ष	2015
कुल लागत	रू0 1,000,00/–(एक लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वाषिक टर्नओवर	रू0 4,00,000/–(चार लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	01 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

एक मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मी रूकमणी का जन्म श्री राधेमोहन जी के परिवार में उत्तराखण्ड के जिला उद्यमसिंह नगर के ग्राम खेंडा में हुआ था। यह गाँव बहुत ही सामान्य है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा उद्यम सिंह नगर में ही पूरी हुई। बचपन से ही उनकी पारिवारिक स्थिति सामान्य नहीं थी फिर भी अपनी मेहनत और लग्न के द्वारा उन्होने अपना लक्ष्य निर्धारित किया तथा उस लक्ष्य को प्राप्त करने में अपनी पूरी ताकत झोंक दी।

इस लक्ष्य को प्राप्त करते करते उन्होने बड़ा संघर्ष किया। फिर अचानक वक्त ने करवट बदली और अचानक उनके सिर से पिता का साया भी उठ गया। उन्होने उस वक्त हार न मानते हुये चुनौतियों का सामना किया एवं सभी तरह की परेशानियों का डट कर मुकाबला किया। अपनी शिक्षा–दीक्षा पूरी करते–करते उन्होने नौकरी करने की सोची और कुछ समय पश्चात् उन्होने एक छोटी–मोटी नौकरी

भी करी। क्योंकि अचानक पारिवारिक स्थिति असामान्य हो चुकी थी इसलिये नौकरी से पर्याप्त आय नहीं हो पा रही थी तथा यही कारण था कि नौकरी में मन नहीं लग पा रहा था।

समय के साथ–साथ मन में भविष्य से सम्बन्धित कुछ सवाल भी जन्म ले रहे थे। मैं अपनी आर्थिकी को लेकर ज्यादा परेशान रहने लगी। तभी मेरे मन में अपना काम करने की सूझी और मैने अपना काम शुरू करने का प्रयास किया। यही वह समय था जब मैं स्वरोजगार की ओर प्रेरित हो रही थी। मन में कुछ करने की उमंगे उड़ान भर रही थी। फिर हमारे क्षेत्र में संस्थान द्वारा चलाई जा रही ब्यूटीशियन से सम्बन्धित प्रशिक्षण का मुझे ज्ञात सूत्रों से पता चला। मैने प्रशिक्षण स्थल से सम्बन्धित जानकारी पता करी। वहाँ पर मेरी मुलाकात संस्थान के परामर्शदाता से हुई। इस प्रशिक्षण में मैने उद्यम से सम्बन्धित सभी ज्ञान जैसे विपणन, बाजारीकरण की जानकारी भी सीखी। इसमें हमें मोटिवेशन के बारे में भी बताया गया।

इस प्रशिक्षण को प्राप्त करने के पश्चात् मेरी जिन्दगी मानो बदल सी गयी और मैं दिल से धन्यवाद देना चाहूँगी संस्थान का और उनके प्रतिनिधियों का जिन्होने सही समय में मिलकर मेरे जीवन को आगे बढ़ाया और मुझमें एक नया आत्म विश्वास जगाया।

प्रशिक्षण उपरान्त मैने घर से ही ब्यूटीशियन का कार्य करना प्रारम्भ किया। आस पड़ोस की महिलाओं के बाजार मूल्य से कम दामों पर ब्यूटीशियन की सुविधा घर पर देने का कार्य मेरे द्वारा किया। प्रशिक्षण के दौरान मुझे सम्प्रेषण कौशल के विषय में बताया गया था जिसका लाभ मुझे अपने उद्यम से मिला, मुझे मेरे कार्य के लिये ही नहीं, मेरे कुशल व्यवहार से भी पहचाने जाने लगा।

वर्तमान में मेरा स्वयं का ब्यूटी पार्लर है। जिसमें मैं किशोरियों को प्रशिक्षण भी देती हूँ। मेरी मासिक आय रू0 10,000/– से 12,000/– रू0 तक हो जाती है। जिससे मैं अपने परिवार के भरण–पोषण में सहयोग कर पाती हूँ।

प्रशिक्षण ने न केवल मेरी कौशलता बढ़ाई, बल्कि मुझे समाज में स्वाभिमान से जीना भी सिखाया।

अल-लिबाज

नाम	श्री सदिक अली
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9837997633
इकाई का नाम	अल–लिबाज़ बुटीक
पता	रायपुर, देहरादून
स्थापना वर्ष	2012
कुल लागत	रू0 1,50,000/– (एक लाख पचास हजार) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी0 द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 5,50,000/–(पांच लाख पचास हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

कहते हैं समान परिस्थिति में कोई निखर जाता है कोई बिखर जाता है और जो निखर जाता है वह अपनी पहचान को स्थापित करने में सफल होता है। यह कहानी एक ऐसे ही नौजवान की है जिसने मुश्किल हालातों में भी न केवल खुद को बल्कि औरों को भी सफलता का मन्त्र दिया। देहरादून निवासी सादिक अली बेग चार भाई बहनों में सबसे बड़े हैं। बचपन गरीबी में एवं मुश्किल हालातों में बीता और जवानी में पिता का साया सर से उठ जाने पर हालात बद से बदतर हो गये। ऐसे हालातों में सादिक ने हार नही मानी और परिवार की जिम्मेदारी लेते हुये काम की तलाश शुरू

कर दी। वर्श 1995 में सादिक ने प्लास्टर ऑफ पेरिस के खिलौने बनाकर घर–घर बेचने का काम शुरू किया और समय के साथ आमदनी होना शुरू हुई पर वह इतनी नहीं थी परिवार का भरण पोषण हो पाये जिस कारण मैने कुछ समय पी0सी0ओ बूथ और वेल्डिंग की दुकान पर भी नौकरी की। तकनीकी कौशल के अभाव में समय तो बढ़ा मगर आमदनी नहीं। परिवार के हालात नाजुक होती जा रही थी और हम बढ़े बहनों की उम्र भी शादी के लायक होती जा रही थी। ऐसे हालातो में परिजनों के सहयोग से मुझे सऊदी अरब जाकर काम करने का मौका मिला जहाँ मैने कुछ पैसे कमाये और बहन की शादी एक अच्छे घर में कर दी। माँ की बिगड़ती तबियत और भाई बहनों की जिम्मेदारी के कारण एक बार फिर मैं काम से दूर हो गया।

मन में हमेशा से यह इच्छा थी कि मेरा खुद का कारोबार हो संसाधनों और ज्ञान के अभाव में सादिक सही फैसला नही ले पाया। खाली समय घर पर रहने के कारण वह अपने ही सवालों से घिरता चला जा रहा था। किसी रिश्तेदार ने उसे प्रशिक्षण प्राप्त करने की सलाह दी जो कि निःशुल्क थी। कुछ न करने से बेहतर सादिक ने प्रशिक्षण लेना ही सही समझा। प्रशिक्षण का वह समय उसके जीवन का निर्णायक समय साबित हुआ।

प्रशिक्षण में मिली जानकारी के आधार पर सादिक ने अपना काम घर से ही शुरू किया। शुरूआती आमदनी ने सादिक को आर्थिक और मानसिक मजबूती प्रदान की और यही कारण था कि उसने किराये की दुकान तलाश कर अपने काम को बढ़ाना शुरू किया।

आज सादिक दो बच्चों का पिता है जिनको वह केन्द्रीय विद्यालय में पढ़ा कर एक अच्छी शिक्षा और बेहतर जिन्दगी दे रहा है। अकेले काम करने वाले सादिक के साथ आज दो और लोग भी काम करते हैं जिनको वेतन देने एवं अन्य खर्चों के बाद भी वह 15,000/– (पंद्रह हजार) रूपये की बचत कर लेता है।

आज सादिक के पास अपने परिवार के लिये समय उनकी आवश्यकताओं के लिये संसाधन और समाज में स्वयं की पहचान है नहीं है तो बस, वो मुश्किल हालात व आर्थिक तंगी जिनसे वह हमेशा निकलना चाहता है। चेहरे की मुस्कान और मन का विश्वास यह भरोसा दिलाने को काफी है कि हाथों के हुनर से आसमान को भी छुआ जा सकता है।

सौन्दर्य प्रसाधन बना जीवन का आधार

नाम	श्रीमती सीमा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9084579034
इकाई का नाम	ईशा ब्यूटी पार्लर
पता	लदाड़ी, उत्तरकाशी, हाल – ब्रह्मपुरी, देहरादून
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 3,70,000/–(तीन लाख सत्तर हजार) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,60,000/–(छः लाख साठ हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक), 01 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

एक समय था जब पुरूषों को ही परिवार का अन्न दाता माना जाता था और महिलाओं को मात्र घर गृहस्थी से जोड़ा जाता था, किन्तु अब तस्वीर बदल चुकी है। नारी सशक्तिकरण समाज की विचारधारा में असीम परिर्वतन लाया है तथा महिलाओं ने अपनी कार्यक्षमता से इन जटिलताओं को परिवर्तित कर दिखाया है। कहा जाता है कि धैर्य, लगन और परिश्रम से ही सफलता की प्राप्ति होती है। इन सभी गुणों का प्रदर्शन करते हुऐ अपने लक्ष्य को प्राप्त किया। मेरे शब्दों में मेरी कहानी– मै उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जनपद के बड़कोट की रहने वाली सीमा ने

ब्यूटीशियन में अपना भविष्य बनाया। मेरा बचपन बड़कोट में गुजरा। मेरे पिता एक भूत–पूर्व सैनिक हैं। इण्टरमीडिएट तक मेरी शिक्षा–दीक्षा बड़कोट में ही पूर्ण हुयी जिसके बाद छोटी सी उम्र में मेरी शादी देहरादून में एक सरकारी कर्मचारी से हुई जो कि वर्तमान समय में सेलटैक्स विभाग, उत्तरकाशी में कार्यरत हैं।

मैने पति के सहयोग से एक गृहणी के रूप में अपने एक छोटी पुत्री की परवरिश करने के साथ–साथ उत्तरकाशी में संस्थान के माध्यम से वर्ष 2013–2014 में प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस प्रशिक्षण ने मुझे कौशल और उद्यमशीलता के गुणों से परिचित करवाया और जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। आज में खुद को सफल होता देख गर्व अनुभव करती हूॅ। इस प्रशिक्षण ने मेरे भीतर व्यवसायिक गुणों का विकास और मेरे मनोबल को बढ़ाया। यह प्रशिक्षण मेरे जीवन में ज्ञान एवं उत्साह की तरंग लेकर आया। इस दौरान मैने न सिर्फ तकनीकी ज्ञान प्राप्त किया बल्की व्यवसाय सम्बन्धी गुण भी सीखे।

प्रशिक्षण समापन के बाद मैने निर्णय लिया कि मैं एक उद्यम स्थापित कर अन्य लोगों के लिए भी रोजगार के अवसर दूंगी। कुछ समय पश्चात मैने पी0एम0ई0जी0पी0 योजना के अन्तर्गत खादी ग्रामोद्योग आयोग में आवेदन किया और इलाहबाद बैंक द्वारा वित्तपोषित रू0 2.00 लाख से अपना ईशा ब्यूटी पार्लर के नाम से उद्यम शुरू किया। लोन की राशि से मैने भरपूर आत्मविश्वास के साथ अपना कार्य विस्तृत किया। गुणवत्तापूर्ण कार्य एवं अच्छे कौशल ने मेरे इस व्यापार के फलने–फूलने में अहम भूमिका निभाई।

इसके बाद मैने अपने ईशा ब्यूटी पार्लर में अन्य दो लोगों को भी रोजगार दिया जो आज भी कार्य कर रहे हैं। मेरे इस उद्यम को स्थापित करने में सबसे बड़ा सहयोग संस्थान का रहा जो समय–समय पर मुझे प्रेरित करती रही है। अन्त में मैं अपने इस उद्यम को स्थापित करने में सफल हुयी। आज मेरे ब्यूटीपार्लर से मेरी मासिक आय लगभग रू0 18,000/– से रू0 20,000/– के बीच है और अपना कार्य बखूबी कर रही है। मैने अपना एक पार्लर देहरादून में भी खोल लिया है। इस प्रशिक्षण से मै एक पराजित और हताश युवती से एक आत्मविश्वास से भरे और भरी आशावादी महिला उद्यमी के रूप में परिवर्तित कर दिया। व्यवसायिक के कौशल सीखने के साथ मैंने मार्केटिंग ज्ञान एवं संकट वहन क्षमता की जानकारी प्राप्त की। मै इस प्रशिक्षण प्रणाली की अत्यन्त सराहना करती हूॅ।

अपने प्रयासों और प्रशिक्षण द्वारा अर्जित किये हुये ज्ञान से अपने व्यवसाय को आरम्भ किया। अपने इस नये जीवन एवं कार्य का श्रेय मै पुरी तरह से अपने प्रशिक्षित संस्थान को देती हूं इस प्रशिक्षण ने मेरे भीतर आत्मविश्वास की नई जोत जलाई और मुझे मेरे लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रोतत्साहित किया। तत्पश्चात् अपना व्यवसाय आरम्भ कर पाया अपने जीवन निर्माण के लिए मै संस्थान का आभार प्रकट करता हूँ। इस प्रशिक्षण को मै अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव मानती हूँ। उनका कहना है कि मनुष्य के मन में आशावाद की जोत जगी हो तो कठिनाईयां एवं विवशता भी उसे हराने की बजाये सफलता के पथ पर ले जाती है। मैंने छोटी उम्र में ही आत्मनिर्भर बनने का प्रण लिया।

मेरे जीवन में गृहणी से लेकर उद्यमी बनने तक का सफर संस्थान के माध्यम से सम्भव हुआ है। ''जीवन में बाधाओं को पराजित कर ध्येय साधना मैने संस्थान के माध्यम से ही सिखा है।''

परिश्रम से मिली सफलता

नाम	कु0 शाम्भवी मिश्रा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8218667422, shambhavi07mishra@gmail.com
इकाई का नाम	स्टार कमप्यूटर एकेडमी
पता	नेहरूग्राम, देहरादून
स्थापना वर्ष	2016
कुल लागत	रू0 4,50,000/– (चार लाख पचास हजार) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 8,000,00/–(आठ लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03(पूर्णकालिक), 02 (अंशकालिक)
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

मेरा नाम शाम्भवी मिश्रा है। मेरे पिताजी एक सरकारी कर्मचारी हैं जो कि देहरादून में ऑटो इलेक्ट्रोनिक फैक्ट्री में कार्यरत हैं। मेरी पढ़ाई लिखाई देहरादून से हुई है। मेरी माता एक गृहणी है। हम दो बहनें हैं।

मैने अपनी एम0बी0ए0 (एच0आर0) इंस्टिट्यूट ऑफ को ऑपरेटिव मैनेजमेन्ट से किया था। एम0बी0ए0 करने के पश्चात् मैने अपने कैरियर की शुरूआत एचआर

एक्जक्यूटिव आई0एम0टी0 गुड़गाँव से की। मेरे पिता बचपन से ही यह चाहते थे कि मैं सरकारी नौकरी करूँ परन्तु मैं बचपन से ही अपना कुछ व्यवसाय करना चाहती थी। नौकरी के दौरान मैं अपनी कम्पनी के वातावरण व माहौल से खुश नहीं थी।

आज के इस दौर में जब एक ओर महिलायें कुछ जगहों में घर तक ही सीमित हैं वहीं कुछ जगहों में महिलाओं ने अपना लोहा भी मनवा लिया है। आज के इस बदलते परिवेश में जब महिलायें पुरूषों से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है तब कई विकट स्थितियों में वे अपना और अपने परिवार का भरण पोषण भी कर रही हैं। इन्ही सब बातों को ध्यान में रखकर मुझे अपना लक्ष्य प्राप्त करने की प्रेरणा मिली और मैने सफलता की ओर अपना पहला कदम बढ़ाने की सार्थक पहल की।

तब मैने निर्णय लिया कि अब मैं अपनी पहचान, अपना कारोबार करके ही बनाऊँगी। मेरा निर्णय अटल था। मैं अपनी नौकरी छोड़कर देहरादून वापस आ गई। यहाँ आकर मैने अपना कारोबार करने हेतु भाग दौड़ शुरू कर दी परन्तु कुछ भी निर्णय लेने में सक्षम न हो सकी कि मुझे किस तरह का व्यवसाय करना चाहिए।

जीवन में सफलता पाने हेतु इच्छा शक्ति से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं है। मनुष्य खुद को सीमाओं में बाँध स्वयं ही अपने कार्यक्षमता एवं सामर्थ्य को सीमित कर देता हैं। जीवन में सफल होने के लिए मनुष्य को अपना लक्ष्य निर्धारित करना आवश्यक है। मुझे बचपन से ही अपना स्वयं का काम करने का मन था।

मैने प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया था। यह प्रशिक्षण अत्यन्त प्रभावशाली प्रेरणादायक था। इस दौरान विषय सम्बन्धी तकनीकि जानकारी के अलावा मैने व्यवसायिक गुणों की शिक्षा भी प्राप्त की। मेरा मानना है कि महिलाओं को जीवन की चुनौतियों के समक्ष चट्टान बनकर खड़े रहना चाहिए और सफलता के पथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

इस प्रशिक्षण ने मेरे जीवन में एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाई। प्रशिक्षण के दौरान संचालित हुये कार्यक्रम में मैने उद्यमी दक्षता, व्यक्तित्व विकास, संकट वहन क्षमता एवं वित्तीय व्यवस्था समान क्षेत्र के प्रतिस्पर्धियों के साथ सामंजस्य एवं सौहार्द पूर्ण व्यवहार भी प्रशिक्षण का ही भाग रहा है। इन परिस्थितियों ने मुझे एक व्यवसायी बनने के लिये प्रोत्साहित किया।

उन्होने मुझे मेरा व्यवसाय शुरू करने के लिऐ पूरी प्रक्रिया को बताया। क्षेत्रीय कार्यालय ने मेरी पूरी सहायता की और सही दिशा में मेरा मार्गदर्शन किया। मैने पी0एम0ई0जी0पी0 योजना के तहत 4 लाख रूपये का लोन लिया। मैने अपने व्यवसाय की शुरूआत स्टार सायबर कैफे (Star Cyber Café) के नाम से की। सायबर कैफे का काम करते हुऐ मेरे अन्दर अब हौसला आ गया और अब मैने पार्टनर शिप में अपना कम्प्यूटर सेन्टर भी शुरू कर दिया। मैं सायबर कैफे के साथ अब मैं कमप्यूटर सेन्टर भी चला रही हूँ। मैं V.L.E विलेज लेवल एन्ट्रिप्रेनियोर (कॉमन सर्विस सेन्टर) भी चला रही हूँ। मेरे महीने की आय रू0 20,000/– है। मैने अपना व्यवसाय 14 फरवरी 2016 को शुरू किया था। मेरे यहाँ पर दो कर्मचारी भी काम करते हैं।

मै अपने उद्यम को और अधिक विस्तृत रखने की चाह रखती हूँ। वर्तमान में शाम्भवी Cyber-Café, VLE Centre के साथ साथ प्रशिक्षण केन्द्र (कम्प्यूटर शिक्षा पर आधारित) भी चलाती है।

सशस्त्र, सशक्त और सशक्तिकरण

नाम	कु0 शहज़ादी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8439223260,shahzadihussain717@gmail.com
इकाई का नाम	न्यू लुक ब्यूटी पार्लर
पता	टर्नर रोड, देहरादून
स्थापना वर्ष	2015
कुल लागत	रू0 1,50,000/–(एक लाख पचास हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 5,00,000/–(पांच लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

मेरा नाम शहजादी है। मेरे पिताजी का नाम स्व0 श्री वाहिद हुसैन है तथा मेरी माता का नाम श्रीमति अनवर जहाँ है। मेरे पिताजी एक जेन्टस टेलर थे। वर्ष 2012 में मेरे पिताजी का देहान्त हो गया था। पिताजी के देहान्त के समय में B.A III year में थी। मेरे पापा मुझे IAS ऑफिसर बनाना चाहते थे उनका सपना था कि मैं एक प्रशासनिक अधिकारी बनकर जनता की सेवा करूँ। लेकिन अपना सपना पूरा करने के पहले ही उनका स्वर्गवास हो गया। अपने पापा के देहान्त के बाद मैने स्नातक की डिग्री तो प्राप्त कर ली लेकिन सिविल सर्विस की पढ़ाई नहीं कर पाई। मैने मन ही मन यह मन यह

सोचने लगी कि कहीं पापा का सपना, सपना बनकर ही न रह जाए। मेरा जीवन निराशा की ओर जाने लगा था। अपने भविष्य को लेकर बड़ी दुविधा में थी कि वह आगे का रास्ता कैसे चुने? घर की हालतों को देखते हुये अपनी मां का हाथ बंटाने के लिए कुछ करना चाहती थी। लेकिन मालूम नहीं था कि उसे क्या करना चाहिये और कैसे? मैने संस्थान द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण प्राप्त किया।

मैने ब्यूटीशियन के साथ–साथ और भी बहुत कुछ सीखा जिससे मेरे अन्दर आत्म विश्वास उत्पन्न हुआ और मुझे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। कुछ समय प्रशिक्षण के बाद मैने अपनी बड़ी बहन फूल शमा और अपनी भान्जी खुशनुमा के साथ मिलकर अपना ब्यूटी पार्लर (न्यू लुक ब्यूटी पार्लर, टर्नर रोड, देहरादून) खोला। जो भविष्य के लिए मेरा सहारा बन गया। हमने अपने ब्यूटी पार्लर की शुरूआत छोटे स्तर से की थी लेकिन आज हम इस पार्लर के माध्यम से रू0 20,000/– (बीस हजार) रूपये माह तक कमा लेते हैं। अब मैं अपने पापा का सपना पूरा करने में सक्षम हो चुकी हूँ। मेरे उद्यम में मुझे परिवार वालों का भी सहयोग मिलता है जिससे मेरे आत्म बल को भी शक्ति मिलती है और मैं भविष्य में आगे बढ़ने के लिए उत्साहित होती हूँ।

मैं अपनी ओर से सभी को यही सन्देश देना चाहती हूँ कि जीवन में कितने भी उतार चढ़ाव आएं लेकिन हमें कभी निराश नहीं होना चाहिए। ऊपर वाला यदि एक दरवाजा बन्द कर देता है तो सौ दरवाजे खोल भी देता है। हर व्यक्ति के जीवन में अच्छा और बुरा वक्त आता है और हर व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों से भी गुजरना पड़ता है लेकिन सफलता उस ही को प्राप्त होती है सभी कठिनाइयों का सामना करके अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ता जाता है।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

नाम	कु0 सुचिता
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	7579122259
इकाई का नाम	अलीशा ब्यूटी पार्लर
पता	ज्ञानसू, उत्तरकाशी
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 2,000,00/–(दो लाख) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी0 द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 7,00,000/–(सात लाख) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

जीवन में सफलता पाने हेतु इच्छा शक्ति से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं है। गंगोरी, उत्तरकाशी में निवास कर रही सुचिता वर्तमान समय में ज्ञानसू में स्वयं का अलीशा ब्यूटीपार्लर के नाम से स्थापित कर सराहनीय कार्य कर रही है। मेरे पिता श्री मदन सिंह नगी जी फोरेस्ट विभाग में कार्यरत् है। मैने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा गंगोरी में ही पूर्ण करी जिसके बाद मैने इण्टर किया। मेरा जीवन शुरू से ही चुनौतीपूर्ण एवं संघर्षों से भरा रहा। मेरा जीवन पहाड़ों पर ही बीता। पहाड़ों में रहने के कुछ अपने फायदें हैं तो कुछ नुकसान भी हैं। आजीविका हेतु यहाँ पर जीवन चुनौतियों से भरा हुआ है।

जो जंगल, पहाड़ और गाँव की जमीन से उपजी, उसकी मिट्टी में ही पली बड़ी। मेरा जीवन अभावों से भरा रहा जिस कारण मैं शुरू से ही कुछ करना चाहती थी तथा पैसे भी कमाना चाहती थी जिससे घर में मदद की जा सके।

मेरा लक्ष्य था कि मैं एक दिन स्वयं पर निर्भर हो सकूं और स्वयं का ब्यूटीपार्लर स्थापित करूं। मैंने छोटी उम्र में ही आत्मनिर्भर बनने का प्रण लिया और मैने वर्ष 2013–2014 में संस्थान के माध्यम से उत्तरकाशी में उद्यमिता विकास प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस प्रशिक्षण के बाद मेरे अन्दर और ज्यादा जूनून पैदा हुआ।

उनका यह सुझाव मेरे लिए बहुत ही मददगार रहा। अपने परिवार कि आर्थिक मदद करने के इरादे से मैने यह प्रशिक्षण अपनाया। ऐसा नहीं है कि इस प्रशिक्षण के बाद रास्ता आसान हो गया। रूकावटे और उलझने आती रही लेकिन अब मैं प्रशिक्षण प्राप्त करने से खुद मैं एक परिवर्तन महसूस करती हूँ।

मैने वर्ष 2014–2015 में अपना उद्यम स्थापित कर अन्य 2 लोगों को भी अपने साथ रोजगार दिया। 21 वर्ष की कम आयु में मैं अपने इस उद्यम से लगभग 15,000/– (पंद्रह हजार) रूपये प्रतिमाह बचा लेती हूँ। तत्पश्चात अपना व्यवसाय आरम्भ कर पायी और अपने जीवन निर्माण के लिए मै संस्थान का आभार प्रकट करती हूँ। मै जीवन के एक ऐसे कठिन दौर से गुजर रही थी, नहीं जानती कि मेरी मुश्किलों और परेशानियों का हल कैसे निकलेगा शिक्षा प्राप्त करने बाद भी नौकरी नहीं मिल पाई किस प्रकार अपना खुद का कोई रोजगार शुरू कर पांऊ? इस प्रशिक्षण को मै अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण पड़ाव मानती हूं। उनका कहना है कि मनुष्य के मन में आशावाद की जोत जगी हो तो कठिनाईयां एवं विवशता भी उसे हराने की बजाये सफलता के पथ पर ले जाती है। उनकी आँखो की चमक देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि आज वह अपनी आयु से कहीं अधिक समझदार और स्वाभिमानी हो चुकी हूँ।

महिला शक्ति का उदाहरण ..... सुमन मनाहा

नाम	कु0 सुमन मनाहा
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8958464027
इकाई का नाम	न्यू फैशन बुटीक
पता	गुमानीवाला, ऋषिकेश
स्थापना वर्ष	2014
कुल लागत	रू0 2,000,00/–(दो लाख) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,50,000/–(छः लाख पचास हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	03 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

एक समय ऐसा भी था जब मैं यह सोचा करती थी कि क्या कभी मैं भी कभी सफल हो पाऊँगी। मैं यह नही जानती थी कि भविष्य मेरे लिए क्या लेकर आने वाला है। आज मैं एक कुशल उद्यमी के रूप में अपना जीवन व्यतीत कर रही हूँ। जीवन में यह सुखमय परिवर्तन किस प्रकार संम्भव हुआ है, मैं अपको यह बताना चाहती हूँ। मेरा नाम सुमन मनाहा है। मेरे पिताजी का नाम श्री श्याम सिंह है जो कि एक किसान है और गुमानीवाला, ऋषिकेश, ब्लॉक–डोईवाला में रहते हैं। मैं शुरू से ही सीमित स्वभाव की लड़की हूँ। मैं एक पहाड़ की रहने

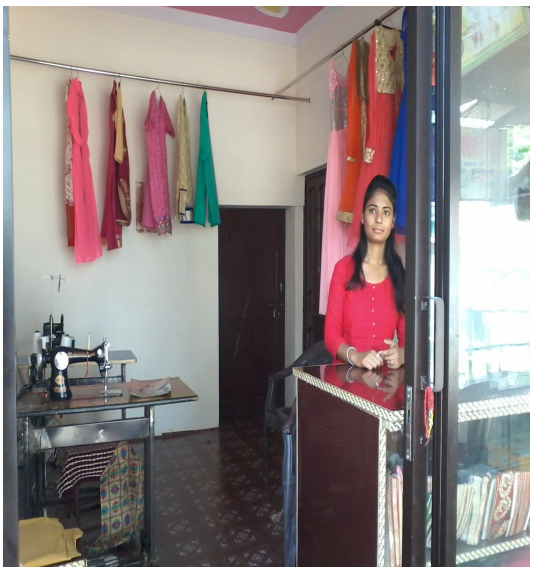

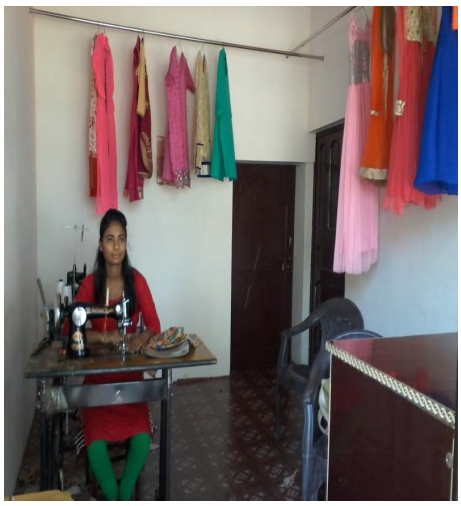

वाली महिला हूँ। जहाँ पर नौकरी करने हेतु अवसर बहुत कम है। कहा जाता है कि हर महिला का साक्षर होना बहुत जरूरी है परन्तु मेरे अनुसार साक्षरता के साथ साथ उसका आत्म निर्भर होना भी बहुत जरूरी है। संस्थान से जुड़ना मेरे लिऐ एक सौभाग्य की बात थी या यू कहें कि मेरे सपने प्रशिक्षण के साथ ही शुरू हुए। मुझे कभी ऐसी उम्मीद नहीं थी कि मैं अपना खुद का कोई उद्यम स्थापित कर पाऊँगी। प्रशिक्षण करने के लिऐ मुझे 20 कि0मी0 का सफर रोज करना पड़ता था। कई बार भारी बारिश के चलते मुझे आने जाने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता था। जब मैं 18–19 वर्ष की थी तब मैं संस्थान के सम्पर्क में आयी। वहाँ पर मुझे चलाए जा रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम के बारे में बताया गया। मैं बिना किसी संकोच के जल्दी ही यह प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहती थी। प्रशिक्षण के दौरान मुझे व्यवसायिक कौशल की अच्छी जानकारी मिली और मैं अपना खुद का व्यवसाय करने के लिए प्रेरित हुई। मुझे आज भी याद है। कि किस प्रकार लाख प्रयत्न करने के बाद भी वह सही ढंग से सिलाई मशीन नहीं चला पाती थी, पर साथ ही मैं यह भी समझ चुकी थी कि यही मेरी खुशियों की चाबी है और मुझे हर हाल में इस कार्य में निपुणता प्राप्त करनी होगी। प्रशिक्षकों द्वारा दिये गये प्रोत्साहन की मैं अत्यंत सराहना करती हूं और मैं यह भी बताना चाहती हूँ कि मेरे जीवन से भय को निकालकर उसे कौशल सम्पन्न बनाने और सफलता के पथ पर चलने की प्रेरणा दी ।

प्रशिक्षण से मुझे विभिन्न पहलुओं की व्यवसायिक जानकारी प्राप्त हुई और जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण भी बदल गया। घर का काम करने के साथ–साथ मै अपना व्यवसाय (बुटिक) सफलतापूर्वक चला रही हूँ। मैं महीने का 8–10 हजार कमा लेती हूँ। अपना खुद का काम करके आज मैं बहुत खुश हूँ। मैं अपने बुटिक के साथ साथ अपनी खुद की फैक्ट्री भी लगाने की इच्छुक हूँ ताकि मैं ज्यादा से ज्यादा लोगों को रोजगार दे सकूँ और अपने साथ जोड़ सकूँ।

अपने प्रशिक्षण अनुभव के बारे में पूछे जाने पर वह कहती हैं कि संस्थान से मिला प्रशिक्षण मेरे जीवन में वरदान के समान है। जिसने मुझे आजीविका के साथ सफलता भी प्रदान की है।

सम्भावनाओं के पटल पर

नाम	श्री नरेश चन्द्र नैथानी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	9412110461, nareshchandra.naithani4@gmail.com
इकाई का नाम	मानसी फोटो स्टूडियो
पता	काँसखेत, पौड़ी गढ़वाल
स्थापना वर्ष	2010
कुल लागत	रू0 4,000,00/–(चार लाख) रूपये मात्र (पी0एम0ई0जी0पी0 द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,50,000/–(छः लाख पचास हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	02 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

प्रकृति ने हमें जीवन के साथ साथ ये सुन्दर धरा भी वरदान में दी है। इस रचना को स्मृति स्वरूप में सदैव के लिये जीवित रखने की कला विडियोग्राफी और फोटोग्राफी के रूप में आज लाखों लोगों का शौक और आजीविका का साधन है। अनेकों अवसर अपने में समाये फोटोग्राफी नरेश चन्द्र नैथानी के लिये भी सफलता की कहानी लिख रहा है। मूलरूप से उत्तराखण्ड के पौड़ी जनपद के रहने वाले नरेश की कहानी भी उतार चढ़ाव से भरी है। एम0ए0 की शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार की तलाश में घर से बाहर निकलकर सम्भावनाओं को तलाशा। निजी शिक्षण संस्थान में पढ़ाने का काम शुरू किया

और परिवार की आवश्यकता के कारण दो वर्षों तक यही कार्य किया। संस्थान के परामर्शदाताओं के सम्पर्क में आने पर नरेश ने बताया कि फोटो और वीडियोग्राफी का शौक उसे बचपन से ही रहा है जिसकी आवश्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ रही है परन्तु आर्थिक सहयोग की कमी के कारण नरेश का हुनर दब सा गया।

संस्थान के परामर्शदाताओं द्वारा नरेश को KVIC (खादी ग्रामोद्योग आयोग) के माध्यम से प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत अनुदान मुक्त ऋण (चार लाख रूपये) उपलब्ध कराया गया, प्रशिक्षण दिया गया जिससे उद्यम स्थापना में सहयोग प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारियों के आधार पर नरेश ने पहाड़ी क्षेत्र में उद्यम स्थापित किया और नाम दिया ''मालसी फोटो स्टूडियो''। अपने कुशल व्यवहार और हुनर के जरिऐ पाँच लाख के ऋण से प्रारम्भ उद्यम आगे बढ़ाया।

आज नरेश महीने के 25–30 हजार रूपये महीना कमाने के साथ पाँच अन्य लोगों के रोजगार का भी साधन है। बचपन का शौक आज स्वरोजगार का साधन है और उससे बढ़कर उम्मीद है उनके लिये जो स्वरोजगार में अपना भविष्य तलाश रहे हैं।

संस्थान बना कुशलता का माध्यम

नाम	कु0 विमला
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8171348131
इकाई का नाम	सिलाई एवं पेपर मैसी कार्य (घर से संचालित)
पता	मद्रासी कॉलोनी, देहरादून
स्थापना वर्ष	2015
कुल लागत	रू0 10,000/–(दस हजार) रूपये मात्र
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 1,80,000/– (एक लाख अस्सी हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	01 (पूर्णकालिक)
कार्य का प्रकार	निर्माण क्षेत्र

उत्तराखण्ड की राजधानी देहरादून के बीचों बीच बसी मद्रासी कॉलोनी आज भी विकास के लिऐ ललायित नजर आती है। आर्थिक रूप से कमजोर तबके के अधिकतर लोग यहाँ निवास करते हैं जिनका जीवन संघर्ष रोज मर्रा की आवश्यकताओं के लिए ही होता है। जरूरतों के अभाव में यहाँ जीवन हर पड़ाव में संघर्ष करता नजर आता है। ऐसी विषम परिस्थिति में भी कुछ कर गुजरने की चाह हमें भीड़ से अलग करती है और यही चाह विमला के लिए एक राह बनकर

आयी। मजदूर पिता की पुत्री विमला का ज्यादातर समय जीवन जीने के लिये जरूरी मूल भूत आवश्यकताओं के अभाव में ही गुजरा उसके बाद भी उसके चेहरे की मुस्कान उसके हौसलों को साफ दर्शाती है।

संस्थान द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करने के बाद विमला ने संस्थान की मदद से स्वयं के उद्यम के रूप में सिलाई कार्य करना प्रारम्भ किया। आज विमला न केवल सिलाई कार्य कर रही है बल्कि और लोगों को भी प्रशिक्षण प्रदान कर रही है। परिवार की आय एवं परिवार के अन्य लोगों को भी विमला ने पेपर मैसी के कार्य से रोजगार के अवसर उपलब्ध करायें हैं। सीखने की इच्छा एवं कार्यकुशलता ने उसे न केवल आर्थिक रूप से मजबूत किया है बल्कि उसकी सामाजिक पहचान को भी बढ़ाया हैं। हमेशा चेहरे पर मुस्कान रखने वाली विमला अपने काम से आठ से दस हजार रूपये कमा लेती है। जो कि उसके परिवार में उसकी उपयोगिता एवं हुनर को सिद्ध करता है। बेटी विमला पर नाज़ करते हुये पिता मोहन लाल कहते हैं कि भगवान ऐसी बेटी हर घर में दे।

उद्यम सिद्धम्

नाम	सुरेन्द्र सिंह नेगी
मोबाइल संख्या एवं ई–मेल	8979712713,negisurender@gmail.com
इकाई का नाम	आर0एस0 एन्टरप्राइज़ेज
पता	सहस्त्रधारा रोड, देहरादून
स्थापना वर्ष	2016
कुल लागत	रू0 3,50,000/–(तीन लाख पचास हजार) रूपये मात्र (मुद्रा लोन द्वारा सहायता प्राप्त)
अनुमानित वार्षिक टर्नओवर	रू0 6,50,000/–(छः लाख पचास हजार) रूपये मात्र
कर्मचारियों की संख्या	04 (पूर्णकालिक),
कार्य का प्रकार	सेवा क्षेत्र

प्राकृतिक धरोहर और अध्यात्मिक महत्व के प्रदेश उत्तराखण्ड़ की राजधानी देहरादून के सूदूर सीमान्त क्षेत्र चकराता से आने वाले सुरेन्द्र सिंह नेगी ने उद्यम स्थापित कर स्वरोजगार की दिशा में समस्त क्षेत्र को प्रेरित करने का कार्य किया। सुरेन्द्र का जन्म चकराता के त्यूनी में कृपाल सिंह नेगी के घर हुआ। नौकरी की महता वाले पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में सुरेन्द्र का लालन – पालन हुआ। स्वच्छन्द विचारधारा एव हमेशा कुछ नया

सोचने वाले सुरेन्द्र ने अपना लक्ष्य तय कर लिया था। स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात सुरेन्द्र ने आजीविका हेतु एक निजी प्रतिश्ठान में कार्य करना प्रारम्भ किया। बढ़ते समय के साथ स्वयं का उद्यम स्थापित करने की चिन्ता से मन में निराशा का भाव उत्पन्न होने लगा। जीवन के इस कठिन समय में उनके मित्रो द्वारा उनको संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करने की सलाह दी गई । मित्रो की सलाह और मन के आशकाओं से घिरे सुरेन्द्र ने प्रशिक्षण मे प्रतिभाग किया । प्रशिक्षण से प्राप्त जानकारी एवं मार्गदर्शन के आधार पर उन्होनें स्वयं का उद्यम स्थापित करने का निश्चय किया।

संस्थान से प्राप्त परामर्श के आधार पर उन्होनें मुद्रा योजना के तहत पॉच लाख रूपये का ऋण हेतु आवेदन किया। ऋण स्वीकृति के पश्चात आर एस एन्टरप्राइजेज असतित्व में आया। डिजिटलकरण के इस युग में सुरेन्द्र कम्प्यूटर आधारित उद्यम स्थापित कर न केवल अपना स्वरोजगार पाया बल्कि दो अन्य लोगों को भी रोजगार का अवसर दिया।

मासिक 40–45 हजार रूपये कमाने वाले सुरेन्द्र नेगी ने जन सेवा केन्द्र के माध्यम से अपने क्षेत्र के लोगो के लिये न केवल सुविधायें प्रदान की है। बल्कि स्वरोजगार को एक बेहतर भविष्य के तौर पर भी प्रदर्शित किया।

प्रकाशक:

राष्ट्रीय उद्यमिता एवम् लघु व्यवसाय विकास संस्थान (निसबड)

(कौशल विकास एवम् उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार)

क्षेत्रीय कार्यालय: आनन्द विहार, अपर अघोईवाला, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून

मुख्य कार्यालय: ए- २३, सैक्टर -६२, (संस्थान क्षेत्र), नोएडा- २०१३०९ (उ0प्र0), भारत

फोन नं- 0135- 2780239 फैक्स नं- 0135-2789802

ईमेल- roniesbud@gmail.com

वेबसाईट – niesbudro.org

मूल्य : ₹ 500/-

कौशल विकास एवम् उद्यमशीलता मंत्रालय, भारत सरकार